। को समय समय
के नाम आभार
इसी तरह कृपा
का अनुकरण कर

म्बई

चढ़ावे से प्राप्त)
वि० की खुशीमें)
वे० की खुशीमें)
...(मुलतान, ... वि० की खुशी में)

११) सेठ माणकचन्द कुंवरजी बम्बई	१।।) टिकनमल बेलीराम
५) सेठ जीवतलाल परतापसी बम्बई	१।) खजांचीलाल जी जैन
२।) सेठ वासूराम जी मुलतान	खानकाह डोगरां
२।।) चौधरी आहूराम डेरागाजीखां	१।) मगनलाल जैन जेहलम
२।।) ला० दौलतराम टीकमचन्द ,,	१।) लूणकरण जी मुलतान
२।।) सेठ उत्तमचन्द जी मुलतान	१।) दौलतराम जी ,,
२।।) शाह नानालाल जी मंदसौर	१।) निकूराम जैन ,,
२।।) चेलाराम जैन मुलतान	१।) नारायणदास ,,
२।।) चांदाराम जैन मुलतान	१।) बेलीराम जैन ,,

नोट— जिनके नाम पहिले किसी पुस्तक में छप चुके हैं उनके नाम यहां नहीं दिये गये।

—प्रकाशक

मांसाहार विचार

(सचित्र)

प्रथम व द्वितीय भाग

लेखक—

न्यायतीर्थ, विद्याभूषण, पं० ईश्वरलाल जैन, विशारद

धर्माध्यापक—

श्री आत्मानंद जैन गुरुकुल पंजाब गुजरांवाला,

प्रकाशक—

चांदाराम जैन

श्री आदर्श ग्रन्थमाला मुलतान शहर (पंजाब)

मुद्रक—पण्डित अजितकुमार जैन शास्त्री

अकलंक प्रेस मुलतान सिटी

द्वितीय संस्करण 1000	मूल्य ।=)	सम्वत् 1995 सन् 1938

पुस्तकों की आमदन पुस्तकोंपर ही लगाई जाती है

प्रकरण सूची

	प्रथम भाग—	पृ०
१–	मांसाहार और प्रकृति	१
२–	मांसाहार और मनुष्यशरीर रचना	२
३–	मांसाहार और व्यावहारिक सभ्यता	८
४–	मांसाहार से होने वाली बुराइयां	११
५–	मांसाहार से होने वाली बीमारियां	१५
६–	मांस से अधिक बलदायक पदार्थ	२०
७–	मांस न खाने वाले भिन्न २ देश और जाति के लोगों की दशा	२६
८–	मांसाहार और मनुष्य कर्तव्य	३१
	द्वितीय भाग—	
९–	मांसाहार और हमारे धर्म	३७
१०–	मांसाहार और हिन्दू	४५
	दया से बढ़ कर कुछ नहीं	५१
	धर्मशास्त्र में अहिंसा और उसका महत्व	५६
	यज्ञ श्राद्ध और धर्मार्थ हिंसा भी युक्त नहीं	६१
	ब्राह्मण भी शूद्र	६७
११–	मांसाहार और आर्यसमाज	७०
१२–	मांसाहार और बौद्ध	७८
१३–	मांसाहार और सिक्ख	८४
१४–	मांसाहार और मुसलमान	९१
१५–	मांसाहार और ईसाई	११३
१६–	मांसाहार और पारसी	१२१

निवेदन—

प्रेमी पाठकों के समक्ष मांसाहार विचारका दूसरा संस्करण उपस्थित करते हुए हमें हर्ष होता है। हम इस बात का हर्ष और गौरव कर सकते हैं कि मांसाहार विचार प्रथम भाग प्रकाशित होने के तुरन्त बाद इतना अपना लिया गया कि प्रथम संस्करण कुछ समय मे ही समाप्त हो गया, एवं दूसरे भाग की मांग प्रारम्भ हो गई। दया प्रेमियों ने इसकी उपयोगिता और आवश्यकता को देखकर अन्य भाषाओं में भी प्रकाशित करने की प्रेरणा की, पाठकों की इस इच्छा को देख कर उसका उर्दू संस्करण इसी माला की ओर से प्रकाशित किया गया, और वह भी हिन्दी संस्करण की तरह शीघ्र समाप्त हो गया।

उन्हीं दिनों मदरास ह्युमेनिटेरियन लीग ने अंग्रेजी, तामिल और तेलगू में प्रकाशित करने की इच्छा प्रकट की और उन्हें लेखक महोदय ने उदारता से स्वीकृति दे दी। इस प्रकार थोड़े से समय के अन्दर पांच भाषाओं में छप कर इस पुस्तक को प्रचार पाने का गौरव प्राप्त हुआ। पुस्तक की उपयोगिता और प्रचार की आवश्यकता का यही प्रबल प्रमाण है।

इस के अतिरिक्त महामना पं० मदन मोहन जी मालवीय से संचालित और संरक्षित 'सनातन धर्म' बनारस तथा अन्य कई पत्रों ने इसे उद्धृत किया। एवं अखिल भारतवर्षीय अहिंसा प्रचारक संघ काशी ने भी इसकी तीन हजार प्रतियां प्रकाशित कीं।

चारों ओर से विद्वानों की शुभ सम्मतियों और आशीर्वाद आदि ने दूसरे भाग को प्रकाशित करने के लिये प्रोत्साहित किया। परन्तु कुछ कारण ऐसे उपस्थित होते रहे जिससे शीघ्र ही प्रकाशित नहीं कर सके, इसके लिये क्षमा चाहते हैं।

अब दूसरा भाग भी आपके हाथ में है इसमे कुछ चित्र सम्मिलित कर दिये गये हैं। जिस रूप में हम इसे उपस्थित करना चाहते थे उस रूप में उपस्थित नही कर सके, फिर भी हमे आशा है कि दया प्रेमी इसे भी पहिले की तरह अपना कर हमारे उत्साह को बढ़ायेंगे।

अज्ञानतिमिर—तरणि, कलिकाल कल्पतरु, श्रीमद् विजय वल्लभ सूरीश्वर जी महाराज के प्रशिष्य एवं स्वर्गीय उपाध्याय श्री सोहनविजय जी महाराज के विद्वान शिष्यरत्न **पन्यास श्री समुद्रविजय जी महाराज** के हम अत्यन्त कृतज्ञ हैं, जिनकी कृपा से यह संयुक्त भाग प्रकाशित करने का श्रेय प्राप्त हो रहा है, पन्यास जी महाराज के सदुपदेश से बम्बई की एक प्रसिद्ध फ़र्म के मालिक सेठ नानचन्द जी ने अपने स्वर्गीय पुत्र केशव लालकी (परिचय आगे दिया गया है) स्मृतिमें एक सौ रुपया प्रदान किया है। जिसके लिये हम सेठ जी तथा पं० श्री समुद्रविजय जी महाराज के अत्यन्त आभारी हैं। आशा है कि ऐसी ही कृपा बनाये रखेंगे।

हमजीव दया मण्डली बम्बई का भी आभार मानते हैं जिन्हों ने प्रकाशनार्थ तीन ब्लाक भेजने की कृपा की है। —प्रकाशक

लेखक की ओर से—

प्रस्तुत पुस्तक के सम्बन्ध में विशेष वक्तव्य लिख कर पाठकों का समय नहीं लेना चाहता, परन्तु कुछ आवश्यक बातों को सूचित कर देना कर्तव्य समझता हूं।

इसमें सन्देह नहीं कि किसी समय भारतवर्ष में दूध की नदियां बहती थीं, परन्तु आज गोधन की ही नहीं बल्कि पशुधन की भी कमी हो रही है, इसका मुख्य कारण मांसाहार की अधिक प्रवृत्ति है। देहली २२ मार्च १९३८ को एक प्रश्न के उत्तर में रक्षा-मन्त्री ने कहा था कि— भारत में ब्रिटिश सेनाओं अर्थात गोरे सिपाहियों के भोजन के लिये प्रति मास ६२५० पशु मारे जाते हैं। यह तो केवल गोरे सिपाहियों के सम्बन्ध में कहा, परन्तु अन्य आँकड़ों से यह प्रतीत होता है कि प्रति वर्ष सवा करोड़ गौयें हिन्दुस्तान में ही मारी जाती हैं जिसके आंकड़े इस प्रकार प्राप्त हुये हैं—

१०६ छावनियों में २ लाख	७३१ म्युनिस्पाल्टियों में २५ लाख
लश्कर सेनाके लिये १० ,,	२५० जिलोंके शहरी कस्बोंमें ५० ,,
सूखे मांसके लिये ३२ लाख	नोटी फाइड एरिया १ लाख

इन सब हत्याओं के होने का मुख्य कारण मांसाहार करना है, जिस देश में इतनी तीव्र गति से पशुओं का घात किया जा रहा हो, वहां उत्तमोत्तम खाद्य पदार्थों का अभाव होना स्वाभाविक है ही। स्वास्थ्य, राजनीति, समाज, देश और धर्म की दृष्टि से मांसाहार वर्जनीय है यह संक्षेप से इसमें बतलाने

का प्रयत्न किया है। मुझे इसमें कहां तक सफलता मिली है, यह पाठकों पर ही छोड़ता हूं।

इसमें प्रत्येक मत के प्रमाण देने का प्रयत्न किया गया है इसके लिये प्रायः सब मतों के किसी न किसी विद्वान से इस पर परामर्श भी लिया है, और अपनी ओर से यह पूर्ण प्रयत्न किया है कि सभी प्रमाण यथार्थ हों। किसी भी मतपर कटाक्ष करने का हमारा कोई उद्देश्य ही नहीं है। यदि कोई सज्जन यह प्रमाणित करेंगे कि— अन्तर्गत प्रमाण उनके ग्रंथों के नही तो उसे निकाल देने मे कोई आपत्ति नहीं है।

अभी तक बहुत से धर्मों के प्रमाणों का और संग्रह भी पड़ा है, जो यहां शीघ्रता और विस्तार भय से नही दिया गया। यदि पाठकों ने इसे अपनाया तो और संस्करण मे इसकी पूर्ति का प्रयत्न कर सकूंगा। साथ ही मै उन विद्वान पाठकों से प्रार्थना और आशा करता हूं कि अपने धर्म ग्रंथों के मांसाहार निषेध सम्बन्धी अन्य प्रमाण भेजने का कष्ट करेंगे।

उन सब महानुभावों का आभार मानना कर्तव्य समझता हूं जिन्होंने इस कार्य मे मुझे किसी न किसी रूप में सहायता प्रदान की है, विशेषतया परम मित्र श्रीयुत पं० श्रीनिवास जी हिन्दी-भूषण का आभारी हूं जिन्होंने प्रमाण संग्रह, प्रूफ-संशोधन तथा अन्य सब कार्यों में पूर्ण सहयोग देकर कृतार्थ किया है।

विजया दशमी १९९५
श्री आत्मानंद जैन गुरुकुल
(पंजाब) गुजरांवाला

हीरालाल जैन

आदर्श ग्रन्थ-माला

मुलतान शहर (पंजाब)

का

जैन धर्म—साहित्य—एवं जैन समाज के लिये

महत्वपूर्ण कार्य

उत्तमोत्तम, सर्वाङ्ग सुन्दर, उपयोगी और सस्ती पुस्तकों का
प्रकाशन एकबार इन पुस्तकों को अवश्य पढ़िये
आप फिर स्वयं ही सैकड़ों प्रतियां मंगाकर
इसका प्रचार करेंगे।

मांसाहार विचार प्रथम भाग

जिसके—हिन्दी और उर्दू संस्करण—छपते ही
संसार में हलचल मच गई।

इसके विषय में हम स्वयं क्या प्रशंसा लिखें, इसका भिन्न भिन्न
भाषाओं में प्रकाशित होना, इसकी उपयोगिता
बताने वाला है।

मद्रास ह्यूमेनिटेरियन लीग की ओर से शीघ्र ही इसी भाग के

तामिल—तेलगु—अंग्रेजी [illegible]

संस्करण भी प्रकाशित होंगे।

इसमें मांसाहार से मनुष्य का कोई सम्बन्ध नहीं यह ठीक युक्तियों से बताया गया है ऐसी महत्वपूर्ण पुस्तक को शीघ्र मंगाकर पढ़िये।

एक दानी सेठ की कृपा से इस समय

पोस्टेज आदि के लिये दो आने का टिकिट भेजने पर दिया जारहा है। आज ही शीघ्र मंगावें अन्यथा दूसरे संस्करण की प्रतीक्षा करनी होगी।

यदि आप इस पुस्तक की

सैंकड़ों प्रतियां मंगाकर अमूल्य वितरण करना चाहते हैं तो शीघ्र पत्रव्यवहार करें।

लागत मूल्य पर आपके नाम पर छपी हुई दी जा सकेंगी

मांसाहार विचार दूसरा भाग उर्दू

भी प्रकाशनार्थ तैय्यार है, जिसमें सनातनधर्म, आर्य समाज, बौद्ध, सिख मुसलमान, ईसाई और पारसी आदि भिन्न-भिन्न धर्मों के प्रमाणिक ग्रन्थों के पाठों को उद्धृत करके यह स्पष्ट किया है कि किसी धर्म की दृष्टि से भी मांसाहार उचित नहीं। यह भाग भी प्रथम भाग की तरह उपयोगी होगा।

आपका कर्त्तव्य है

कि आप इसके लिये शीघ्र आर्थिक सहायता भेज कर इस कार्य में सहयोग दें, ताकि पुस्तकें अधिक संख्या में छपाई जायें। आपका शुभ नाम धन्यवाद सहित पुस्तक में दिया जायेगा।

प्रथम भाग के दूसरे संस्करण के लिये भी पूरी सहायता की आवश्यकता है।

आदर्श ग्रन्थ माला की अन्य उपयोगी पुस्तकें शीघ्र मंगा कर पढ़ें।

कामकुम्भ—प्रत्येक गृहस्थ के पढ़ने योग्य, औपन्यासिकता और सरल भाषा एक बार आरम्भ करने पर आप पूरा किये बिना नहीं छोड़ेंगे। मूल्य डाक व्यय सहित केवल चार आने।

महादेवस्तोत्र—कलिकाल सर्वज्ञ श्री हेमचन्द्राचार्यकृत। साथ में सरल हिन्दी भाषा में अनुवाद भी दिया गया है मूल्य केवल एक आना।

परमात्मा के चरणों में—एक साधारण आत्मा, आत्मा से महात्मा, महात्मा से परमात्मा कैसे बन सकती है इस समस्या पर प्रकाश डालने वाला आध्यात्मिक ट्रैक्ट पढ़कर आनंद उठाइये मू० एक आना।

समय का संदेश—प्रथम व दूसरा भाग—जीवन में क्रान्ति पैदा कर देने वाले लेखों का संग्रह मूल्य प्रत्येक भाग एक आना। (डाक व्यय सबका अलग)

अमूल्य लाभ! भेंट! अमूल्य अवसर!

जो सज्जन बारह आने की टिकिटें भेजेंगे, उनको ग्रन्थमाला की आजतक की प्रकाशित सभी पुस्तकों के साथ निम्नलिखित पुस्तकें भेंट स्वरूप दी जावेंगी। और डाक व्यय भी ग्रन्थमाला की ओर से किया जावेगा।

(१) जैन धर्म का महत्व (२) स्त्री और पुरुष पर विचार

शीघ्र लिखो—मैनेजर आदर्श ग्रन्थ माला गुजरांवाला शहर पंजाब।

शीघ्र छपेंगे !

(१) मांसाहार विचार प्रथम भाग का दूसरा संस्करण।
(२) मांसाहार विचार दूसरा भाग हिन्दी और उर्दू।
(३) आदर्श महावीर और महावीर का आदर्श।
(४) अहिंसा और महात्मा गान्धी।
(५) व्रतों का वैज्ञानिक रहस्य (जैन तथा जैनेतर दृष्टि से)
(६) रात्रि भोजन क्यों न करें ?
(७) जैन धर्म के उदार विचार।
(८) जैन धर्म का रहस्य इत्यादि।

दानी सज्जनों के लिये उपकार और यश प्राप्त करने का अच्छा अवसर है।

आप इन में से कोई ट्रैक्ट अपनी ओर से प्रकाशित करावें आपका शुभ नाम—आपका फोटो—आपका परिचय उसमें दिया जायगा।

विशेष जानने के लिये नियमावलि देखें ! अथवा पत्र व्यवहार करें।

याद रहे !

पुस्तकों द्वारा होने वाली आमदनी दूसरी पुस्तकों के प्रकाशन में लगाई जायेगी।

मांसाहार विचार प्रथम भाग पर आई हुई अनेक सम्मतियों में से कुछ

शासन दीपक प्रखर वक्ता विद्वान मुनिराज श्री विद्याविजयजी महाराज लिखते हैं—

भिन्न-भिन्न दृष्टियों से मांसाहार पर आपने जो विचार किया है वह अति महत्व का है, श्रुति, युक्ति और अनुभूति तीनों प्रकार से विचार करके आपने मनुष्य का मांसाहार से कोई सम्बन्ध नहीं यह बात दृढ़ता के साथ बताई है मुझे आशा है कि इस छोटी परन्तु महत्वपूर्ण पुस्तिका से हजारों लोग मनुष्य के अस्वाभाविक आहार का त्याग कर सत्पथ पर आयेंगे।

जैनाचार्य श्री १००८ श्री मद्विजयवल्लभसूरीश्वरजी महाराज के प्रशिष्यरत्न मुनि श्री समुद्रविजयजी महाराज लिखते हैं—

मांसाहार विचार खास वांचन, मनन और आचरण करने योग्य है, ऐसे पुस्तक रत्नों को मुफ्त वितीर्ण करने की आवश्यकता है आपके इस प्रयत्न के फलस्वरूप हजारों लाखों आदमी, मांसाहार का त्याग करें और असंख्य निर्दोष प्राणियों को अभय दान मिले यही शुभेच्छा।

यहां के पं० श्रीयुत माधवानंदजी भी इसकी बहुत २ प्रशंसा करते हैं।

शांतमूर्ति मुनिराज जयंतविजयजी महाराज लिखते हैं—

आपका प्रयास स्तुत्य है, ऐसे ट्रैक्टों का मांसाहारी प्रजा में खूब प्रचार करना चाहिये, जिससे बड़ा उपकार हो सकता है।

साहित्य प्रेमी स्व० मुनिराज विद्याविजयजी महाराज ने लिखा है—

समाजोपयोगी छोटे २ ट्रैक्ट लिखने की आपकी प्रवृत्ति सराहनीय है, धर्म प्रचार के लिये ऐसे ट्रैक्ट अत्यन्त उपयुक्त हैं।

पूज्य यतिवर्य श्री बालचन्द्राचार्यजी लिखते हैं—

आदर्श ग्रन्थमाला के ट्रैक्ट अपने ढंग के बड़े ही अच्छे हैं, जो न्यायतीर्थ विद्याभूषण पं० ईश्वरलाल जैन द्वारा सम्पादित हुए हैं, पंडितजी बड़े ही अच्छे मार्मिक लेखक हैं, इन पुस्तकों का जितना कुछ अधिक प्रचार हो उतना अच्छा है।

× × ×

मांसाहार विचार बड़े सुन्दर ढंग से लिखी गई है ऐसे ग्रंथों का प्रचार परमावश्यक और परमोपयोगी है, द्वितीय भाग शीघ्र ही प्रकाशित हो यही प्रयत्न करें।

—अगरचन्द नाहटा

मेरी राय में मांस वि० जिस तरीका और लियाकत से लिखा गया है वह अपनी नजीर आप है, पहिले भी कई ट्रैक्ट इसके मुतअल्लक पढ़े हैं लेकिन इसकी तहरीर नये ढंग और वक्त के मुताबिक है, यह उर्दू में भी अवश्य छपना चाहिये (छप चुका है)

—ब्रह्मचारी शङ्करदास

पुस्तक आद्योपान्त पढ़ने योग्य है, पुस्तक बड़े अच्छे ढंग पर लिखी गई है जो सब धर्मावलम्बियों को मान्य हो सकती है, ऐसी पुस्तकें यदि प्रभावना में वितीर्ण की जायें तो संसार का बहुत उपकार हो सकता है एक बार तो सबको अवश्य पढ़ना चाहिये।

—धर्मेन्द्र अजमेर

आप ने जो जिस ट्रैक्ट के लिखने की मैं चिन्ता कर रहा था उसकी कमी को पूरा कर दिया है ।

—पं० धीरेन्द्रकुमार न्यायतीर्थ
मन्त्री अहिंसा प्रचारक मण्डल बनारस

लेखक महोदय ने पुस्तक रोचक व सभ्यता शैली से एवं बड़े गवेषणापूर्वक लिख कर हिन्दी साहित्य में कमी पूर्ति की है, इसे आजतक इस विषय की हिन्दी पुस्तकों में श्रेष्ठ मानना अयुक्त नहीं ।

—मैनेजर श्री जीवदया ज्ञान प्रचारक मंडल गुजरांवाला ।

इस पुस्तक में मांसाहार करने से कितने नुकसान होते हैं अच्छी तरह बतलाया है, ऐसी पुस्तकें यदि मांसाहारियों के हाथ में घर घर पहुँचाई जावें तो बहुत अधिक लाभ हो सकता है ।

—जैनध्वज अजमेर ।

इस में मांसाहार से होने वाली अनेक बुराइयां प्रमाणसहित अनेक अजैनशास्त्रों से ही बताई गई हैं हजारों की संख्या में प्रचार योग्य हैं ।

—दिगम्बर जैन सूरत

इसमें मांसाहार के विरुद्ध विद्वानों की सम्मतियां व शास्त्रीय प्रमाण दिये हैं, मांसाहारियों में बांटने योग्य है ।

—जैन मित्र सूरत

आदर्श ग्रन्थमाला मुलतान शहर का

उद्देश्य—उत्तम से उत्तम उपयोगी साहित्य कम से कम मूल्य पर जनता के समक्ष रखना ।

नियमावली

(१) ग्रन्थमाला को एक साथ ५००) रु० सहायता देने वाला संरक्षक होगा।

(२) ग्रन्थमाला को एक साथ २५०) रु० सहायता देने वाला सहायक होगा।

(३) ग्रन्थमाला को एक साथ १००) रु० सहायता देने वाला हितेच्छु समझा जावेगा।

(४) ग्रंथमालाको प्रतिवर्ष १) देनेवाला ग्रन्थमाला का सदस्य होगा।

(५) संरक्षक, सहायक और हितेच्छु के मूलधन से कोई ट्रैक्ट नहीं छपाया जायेगा, बल्कि उसकी आमदनी ही ट्रैक्टों पर खर्च होगी।

(६) संरक्षक, सहायक और हितेच्छु आजीवन सदस्य (लाइफ मेम्बर) समझे जायेंगे। और उन को हर पुस्तक की एक प्रति भेंट स्वरूप मिलेगी।

(७) माला के प्रकाशित सब ट्रैक्टों में संरक्षक का फोटू रहेगा, और सहायक का नाम।

(८) एक ट्रैक्ट का पूरा खर्च या कम से कम ५०) रु० ग्रन्थमाला को सहायता देनेवाले का फोटू उस ट्रैक्ट में दिया जायेगा।

(९) पुस्तकों द्वारा प्राप्त हुई आमदनी दूसरी पुस्तकों के प्रकाशन में लगाई जायेगी।

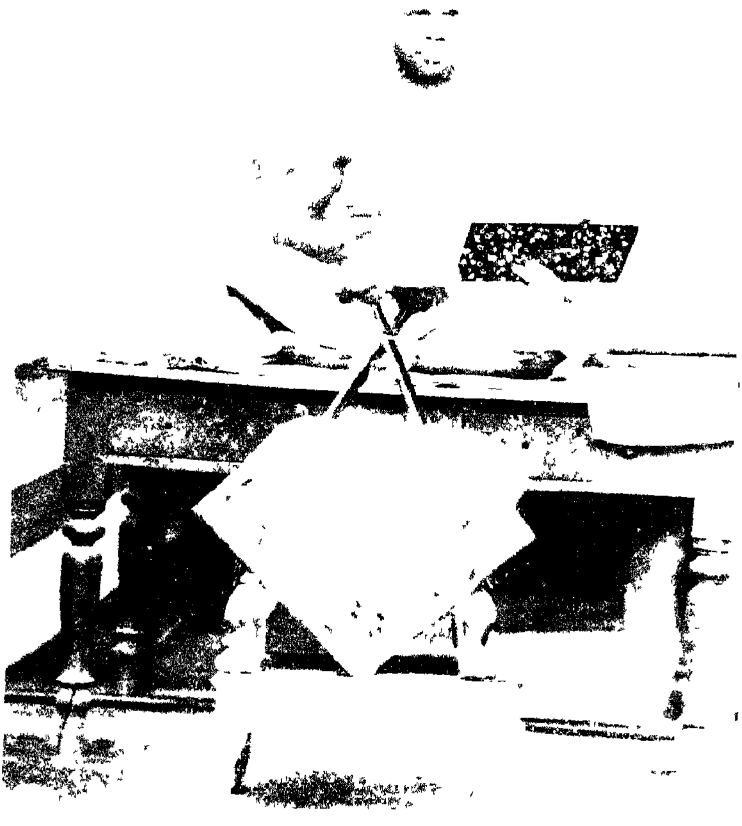
विशेष जानने के लिये पत्र व्यवहार करें :—

मैनेजर—आदर्श ग्रन्थमाला, मुलतान शहर।

श्री राजमल लोढ़ा के प्रबन्ध से आदर्श प्रिंटिंग प्रेस, अजमेर में मुद्रित।

* पंजाब देशोद्धारक जैनाचार्य *

श्री मद्विजय वल्लभसूरीश्वर जी महाराज के शिष्य रत्न



श्री १००८ उपाध्याय जी श्री सोहन विजय जी महाराज

समर्पण

अज्ञानतिमिर-तरणि कलिकाल-कल्पतरु, श्री श्री १००८ श्री
जैनाचार्य श्रीमद् विजयवल्लभ सूरीश्वर जी महाराज
के शिष्य रत्न स्वर्गीय

उपाध्याय जी श्री सोहनविजय जी महाराज

जिन्होंने—

अनेक जगह पर अमृतमय उपदेश देकर
सैंकड़ों मांसाहारियों को
मांसाहार का त्याग कराया

—:o: एवं :o:—

कसाइयों तक को अपने उपदेश से प्रभावित किया

की—

पवित्र सेवा में—

उनके विचारों की समर्थक यह तुच्छ भेंट
सादर समर्पित है।

—लेखक

परिचय

पाठक! आप जिस चित्र को सामने देख रहे हैं, यह बम्बई के प्रसिद्ध सेठ श्रीयुत नानचन्द जी तथा उनके स्वर्गीय पुत्र केशवलाल जी का है। सेठ साहब एक धर्मज्ञ, विविध गुण सम्पन्न, सरल हृदय, उदार दानी सज्जन हैं।

आकरे पद्मरागाणां जन्मकाचमणेः कुतः।

लोकोक्ति के अनुसार भादों वदी ८ सं० १६८२ बुधवार को सेठ जी के हां एक होनहार पुत्र का जन्म हुआ, जिसका नाम रक्खा गया—केशवलाल। कुमार केशवलाल के कार्य जन्म से ही विलक्षण थे जिन्हे देख कर लोग कह उठते—

'होनहार बिरवान के होत चीकने पात।'

बचपन मे ही वह बड़ा होशियार, चतुर और बुद्धिमान था, इसी छोटे से बालक ने अपनी बुद्धि-प्रखरता से सबको अपने वश मे कर लिया। पिता श्री ने इस उदीयमान पुत्र के नाम पर ही फर्म (दुकान) का नाम रक्खा जो आज 'मुकादमशाह केशवलाल नानचन्द' के नाम से प्रख्यात है।

परन्तु कालकी गति विचित्र है, दुर्भाग्यवश इस सद्गुणी बालक का सात वर्ष की अल्प आयु मे फाल्गुण सुदी १४ सम्वत १६८६ शनिवार को स्वर्गवास हो गया। उस बालक की पुण्य स्मृति मे स्वर्गीय के पिता सेठ नानचन्द जी ने पन्यास श्री समुद्र विजय जी के उपदेश से मांसाहार निषेधक पुस्तक के प्रचार के लिये सहायता प्रदान की है। धन्यवाद!

—प्रकाशक

स्वर्गीय कुमार केशवलाल की स्मृति में :—



स्वर्गीय कुमार केशवलाल | स्वर्गीय के पिता सेठ नानचन्द जी

मांसाहार विचार

(प्रथम भाग)

मांसाहार और प्रकृति (कुदरत)

"संसारमें जितनी भी वस्तुएं विद्यमान हैं, वे सभी वस्तुएं मनुष्य के ही ऐशो आराम—भोगोपभोग के लिये हैं।" अपनी जिह्वा के स्वाद को पूरा करनेके लिये पशु पक्षी को मार कर उनका मांस खाने वाले 'मांसाहारी' प्रायः इस तरह की बातें कह कर 'मांसाहार' का समर्थन करते है, उनके ऐसे विचार सच्चे है या झूठे? इस पर आज कुछ विचार करते हैं।

संसार में कई प्रकार की वस्तुएं हमें दृष्टिगत होती हैं, जिनमें कई अच्छी हैं और कई बुरी भी, कई खाने योग्य हैं तो कई छूने योग्य भी नहीं, कई वस्तुएं खाने योग्य नहीं परन्तु पहिनने ; लगाने, या सूंघने योग्य हैं। कपड़े लकड़ी, और लोहा आदि सैकड़ों पदार्थ हमारे खाने योग्य तो नहीं, हैं तो भी हम उन्हें और तरीकोंसे काम मैं ला सकते हैं। बढ़िया से बढ़िया तेल या फोड़े फुन्सियों पर लगाने की मरहम हमारे खाने योग्य पदार्थ नहीं, किन्तु उनको लगा कर ही हम

फायदा उठा सकते हैं, ऐसे ही किसी सुन्दरतापूर्ण वस्तु का आनन्द खाने में नहीं बल्कि उसे देखने में ही आनन्द है।

कौनसी वस्तु खाने योग्य है, कौनसी पहिनने योग्य और कौनसी देखने व लगाने योग्य है—इसका विचार करने के लिये मनुष्य को बुद्धि—विवेक शक्ति प्राप्त है। मनुष्य को अच्छे और बुरे कार्य पहिचानने और प्रत्येक कार्य के लाभ और हानि के विचार करने की सामर्थ्य है।

आइये, अब हम विचार करें कि प्रकृति (कुदरत) ने कौन सी वस्तु हमारे खाने योग्य बनाई है, और कौनसी छोड़ने योग्य? संसार के सभी जीव क्या हमारे ही लिये हैं? उनका मांस खाना क्या मनुष्यके लिये उचित है? यदि मांसाहारी अपने इस कथनपर दृढ़ रहें कि 'सभी जीव मनुष्यके लिये हैं,' तब तो फिर तरह २ के कीड़े, सांप, बिच्छू, कौवे आदि भी ग्रहण करने चाहियें परन्तु मांसाहारी ऐसा नहीं करते। उनकी यह दलील तो कहीं ठहर ही नहीं सकती, कि सभी चीजें मनुष्य के लिये हैं। गाय, भेड़, बकरी का ठीक २ इस्तेमाल यह है कि उनका घी, दूध, दही आदि अपने काम में लायें, जो कि ताकत भी पैदा करते हैं और ये पवित्र वस्तुएं इन जानवरों से हमें एक दिन नहीं बल्कि वर्षों तक मिल सकती हैं। मांसाहारी उसे मारकर केवल एक दिन ही उसको अपने काम में ला सकता है। इससे पाठक समझ सकेंगे कि उन जानवरों का अच्छा इस्तेमाल कौनसा है? एक विद्वान् वैद्यने अपने विचारों को इस प्रकार स्पष्ट बतलाया है:—

"कि मांसाहार पर विचार करना परमावश्यक है। क्योंकि इसके कारण मनुष्यका जीवन हिंसात्मक होकर स्वयं पापलिप्त होजाता है और दूसरों को भी हानि पहुँचाता है। अर्थात जिन पशुओं को वह मारकर खाता है, यदि उन पशुओं से दूध, घी और उनकी सन्तान से अन्न आदि का लाभ उठायें तो एक गाय के शरीर से दूध, घी, बैल गाय, उत्पन्न होने से एक पीढ़ी में चार लाख पचहत्तर हजार छः सौ मनुष्यों को लाभ पहुँचता है। किन्तु एक गौ के मांस से सौ मनुष्यों का आहार भी नहीं हो सकता और आगेको सदाके लिये वंशका मूलही कट जाता है।*

मांसाहार प्राकृतिक नियमो के सर्वथा विरुद्ध है, प्रकृति से हमें यह सन्देश मिलता है, कि सब चीजें तुम्हारे खा जाने के लिये नहीं हैं, हां प्रकारान्तर से तुम्हारे लिये उपयोगी हो सकती हैं।

मनुष्य के लिये मांस खाना प्रकृति (कुदरत) के विपरीत (खिलाफ) है। यह जाननेके लिये हम मनुष्य की शरीर रचना और स्वभाव पर विचार करते हैं, और मांसाहारी पशुओंसे भिन्न भिन्न प्रकार से तुलना कर के निर्णय करते हैं कि क्या मांस मनुष्य का भोजन हो सकता है?

मांसाहार और मनुष्यशरीर रचना

यदि हम अपने शरीर की बनावट पर विचार करें तो हमें यह अच्छी तरह मालूम हो जायगा, कि मनुष्य के शरीर की

---

* स्वास्थ्यरक्षा

बनावट न तो मांसाहारी जानवरों की तरह है और न ही मनुष्य का शरोर मांसाहार के योग्य है मनुष्य का शरीर निरामिषाहारी बन्दर आदि जानवरों से मिलता है।

मांसाहारी जानवरों की आकृति भयंकर और क्रूर होती है, उनके दान्त नुकीले, एवं बहुत तीक्ष्ण होते हैं, और वे एक पंक्ती (लाइन) में नहीं होते बल्कि अलग अलग होते हैं। शेर बिल्ली, गिद्ध आदि मांसाहारी पशु पक्षियों के पंजों के नाखून ऐसे पैने मजबूत और मुड़े हुए होते हैं, कि जो शिकार को बड़ी मजबूती से पकड़ कर चीर फाड़ कर सकते हैं, यदि मनुष्य भी मांसाहारी होता तो इसके पंजे भी वैसे ही होते, परन्तु मनुष्य के नाखून तो मांसाहारियों के मुकाबले में बहुत ही कमजोर और सीधे होते है मांस को चीरना फाड़ना तो दूर रहा वे थोड़े बड़े होने पर ज़रा सी ठोकर में स्वयं ही टूट जाते हैं।

शरीर रचना पर ध्यान देते हुए प्रोफेसर विलियमलारेंस एफ० आर० एस० बतलाते हैं कि आदमी के दांत गोश्त खाने वाले जीवों से बिलकुल नहीं मिलते। मनुष्य के सामने के दो बड़े दांत (canine teeth) शेष दांतों के साथ एक ही कतार मे होते है। परन्तु मांसाहारी जीवों के आगे वाले दो बड़े दांत (canine teeth) हैं वे और दूसरे दान्तों से बड़े तेज और नुकीले और आगे की तरफ निकले हुए होते हैं और वह मांस खाने के लिये बड़ा सुभीता प्रदान करते हैं किन्तु शाकाहारी जीवों के सब दांत एक ही कतार में होते हैं, इस से वह मांस भक्षण के लिये आयोग्य हैं, अतः किसी भी दृष्टि कोण से अर्थात्

मनुष्य के दांत, शारीरिक ढांचा, जबड़ा तथा पाचक यन्त्रों को ध्यान में रखते हुए स्पष्ट रूप से पता लगता है कि वह बन्दर से मिलता है जो कि प्राकृतिक कट्टर शाकाहारी है।

एक बड़ा भेद यह भी स्पष्ट है कि मांसाहारी जानवर जब पानी पीते हैं, तब जबान से अर्थात् लपलपा कर पीते हैं, वे हाथी, घोड़े, व बैल आदि निरामिषाहारी जीवों की तरह दोनो होठ मिला खींच कर पानी नहीं पी सकते। इससे भी यही मालूम होता है, कि मनुष्य का शरीर मांसाहारियों से नहीं मिलता।

मांसाहारियों की आंखें भी नीरामिष भोजियों से भेद रखती हैं, मांसाहारी जानवरों की नेत्रज्योति सूर्य का प्रकाश सहन नहीं कर सकती। लेकिन वे रात को दिन की भांति देख सकते हैं, रात को उनकी आंखें दीपक के समान अङ्गारे की तरह चमकती हैं। परन्तु मनुष्य दिन को भली भांति देख सकता है, सूर्य का प्रकाश उसका विघातक नहीं बल्कि सहायक है, और मनुष्य की आंखें रात को न तो चमकती हैं और न ही प्रकाश के विना वे देख सकती हैं।

मांसाहारी जीव का जब बच्चा पैदा होता है तब उसकी आँखें बहुत दिनों तक बन्द रहती हैं, वे बच्चे अन्धे के समान पड़े रहते हैं, किन्तु निरामिषियों के बच्चे पैदा होते ही थोड़ी देर में आंख खोल देते हैं।

मांसाहारी जानवरों को गर्मी भी बरदाश्त नहीं होती वे थोड़े परिश्रम से थक कर हार जाते हैं, लेकिन मनुष्य

गर्मी बरदाश्त कर सकता है, और थोड़े से काम पर हार नहीं जाता।

मांसाहारी जीवों के शरीर से अधिक परिश्रम और दौड़ धूप के बाद भी पसीना नहीं निकलता, विपरीत इसके मनुष्य एवं निरामिषाहारी जीवों को अधिक कार्य करने पर पसीना आ जाता है।

पूर्वोक्त भिन्नताओं से अच्छी तरह समझ सकते हैं कि मांस खाने वाले और निरामिष भोजियों के शरीर की बनावट व स्वभाव में बड़ा अन्तर है। और मनुष्य के शरीर की बनावट व स्वभाव मांसाहारी जानवरों से बिलकुल नहीं मिलते। मनुष्य में मांसाहारी जानवरों की तरह पाचन शक्ति भी नहीं कि वह मांसाहारियों की तरह कच्चे मांस को पचा सके, बल्कि मनुष्य उसको कई तरह के मसाले आदि से विकृत करके पचाने की कोशिश करते हैं।

मनुष्य की खुराक में ऐसा कोई खाद्य पदार्थ नहीं, जो साबित, बिना दाढ़ोंके नीचे दबाये निगला जाय, किन्तु मांसाहारी चबाते नहीं, साबित ही निगल जाते हैं, चाहे ये मनुष्य के संसर्ग से अन्न खाने लगें पर उनके पास पीसने वाले दांत ही नहीं हैं, प्रकृति ने उनको पीसने वाले दांत दिये ही नहीं, क्योंकि उनकी खुराक मांस (न पिसने वाली) वस्तु है, परन्तु मनुष्य के दांत हर वस्तु को पीसने वाले होते हैं।

मांस खाने वाले अपने आप को बहुत धोखा देने की कोशिश करते हैं प्रत्येक मनुष्य या पशु हर एक वस्तु की अच्छी तरह परीक्षा करने के बाद उसे अन्दर डालता है। अर्थात् पहले हर एक वस्तु को आंख से देखता है, यदि वह गली सड़ी हो तो उसे छूता भी नहीं, और यदि वह शुद्ध और अच्छी होती है, तो फिर उसे नाक से सूंघ कर देखता है कि इसमें से बदबू तो नहीं आती, यदि वह वस्तु सूंघने में भी अच्छी होगी, तब जबान उसे चख कर उसके स्वाद की परीक्षा करेगी यदि अच्छी निकली तो ठीक अन्यथा थूक कर फैंक दी जायगी आंख नाक और जबान तीनों से परीक्षा हो जाने पर जो वस्तु आदि-अन्त तक ठीक उतरती है वह स्वास्थ्य के लिये सर्वदा ठीक होती है, किन्तु आज कल मनुष्य अपने आपको धोखा देने की कोशिश करते हैं, जैसे मनुष्य मछलियां खरीदने के लिये मछली वालों के पास जाता है, आंख उसे देखना नहीं चाहती, और न ही नाक को बदबू सुहाती है, इस लिये वह मनुष्य मुँह और नाक दबा कर एक सड़ा गन्दा गमछा मछली वाले की ओर फैंक कर कहता है कि जल्दी बांध कर दे दो, मारे बू के खड़ा नहीं हुआ जाता। और वह उस गमछे के एक सिरे को पकड़ शरीर से परे हटाये हुए घर पहुँचता है। घर पर पहुँच कर उसकी शकल, बदबू और स्वाद को बदलने के लिये तरह तरह के मसाले, घी या तेल काम में लाता है। इस प्रकार वह आंख कान और जुबान को धोखा देकर उसे खाता है। बाद में जुबान का स्वाद बिगड़ने पर सुपारी आदि खाता है। मछली खाने वाले के पसीने से

इतनी बदबू आती है, कि उसके कपड़े दूर से ही महकते हैं। उसको पास बैठाना भी कोई पसन्द नहीं करता। यह सब बातें प्रगट करती हैं कि मांस खाना मनुष्य के स्वभाव और प्रकृति के नियमों के सर्वथा विरुद्ध है। मनुष्य के शरीर की बनावट, दांत, आंख, नाखून आदि का मांसाहारी जानवरों से बड़ा अन्तर है। मनुष्य का आमाशय इतना सबल नहीं कि वह उसे आसानी से पचा सके। किसी भी कमजोर वस्तु से काम लिया जाय, और उसकी शक्ति की अपेक्षा अधिक बोझा डाला जाय तो वह वस्तु शीघ्र नष्ट भ्रष्ट हो जाती है। ऐसे ही शरीर के यन्त्रों के सम्बन्ध में जानना चाहिये। यदि मनुष्य अपनी कुदरती खुराक को छोड़ कर दूसरे पदार्थ को लेगा तो उसे तरह तरह के रोग घेर लेंगे। डाक्टरों के ऐसे अनुभव और विचार अगले प्रकरणों में लिखेंगे। यहां तो केवल इतना ही बता देना पर्याप्त है, कि मनुष्य के शरीर की बनावट से यही मालूम होता है, कि मनुष्य मांसाहारी नहीं बल्कि शाकाहारी है।

मांसाहार और हमारी व्यवहारिक सभ्यता

"मांस खाना असभ्यता है, धार्मिक जीवन के लिये निरामिष भोजन ही ठीक है।*

—स्वामी विवेकानन्द

---

* प्राच्य और पाश्चात्य

मनुष्य का आहार मांस है या नहीं ? यदि हम इस पर व्यवहारिक दृष्टिसे भी विचार करें, तो हम इस निर्णय पर पहुँचेंगे कि मनुष्य का आहार मांस नहीं। देखिये—

जब किसी मनुष्य के कपड़े को किसी के खून का दाग (धब्बा) लग जाता है, तो वह उसे अपवित्र एवं गन्दा समझता है, हिन्दू मात्र ऐसे कपड़े से मन्दिर आदि पवित्र स्थानों में नहीं जाते और न ही कोई शुभ कार्य करते हैं। मुसलमान लोग ऐसे कपड़े को नापाक कह कर उससे नमाज भी नहीं पढ़ते। ऐसे ही अन्य धर्मावलम्बी खूनके धब्बे वाले कपड़े को अपवित्र समझ धार्मिक व अन्य कोई अच्छा काम नहीं करते. जहाँ हमारी यह दशा और व्यवहार है, वहां सब स्वयं सोच सकते हैं कि जहाँ दो-चार बूंद नहीं, बल्कि लहूका पिंड (मांस) पेटके अन्दर डाला जायगा तो क्या फिर भी वह पवित्र ही रहेगा ? क्या वह व्यक्ति कोई धार्मिक कार्य करने के योग्य है ? कदापि नहीं किन्तु वह मनुष्य महान अपवित्र है।

इसी प्रकार की एक घटना पर विचार करें—

किसी के घरमें यदि कोई व्यक्ति मर जाता है तो उस मुर्दे-को उठाने वाले जब तक स्नान न करलें तब तक वे अपवित्र समझे जाते हैं। कोई उन्हें छूता तक नहीं, वे कुछ खा-पी नहीं सकते। विशेषतया उस घरके व्यक्तियोंकी तो १३ दिन बाद शुद्धि होती है। जब हमारा व्यवहार इस प्रकार है—तो विचार कीजिए कि जो व्यक्ति एक मुर्दे को अपने पेट में डाल लेता है-वह क्या पवित्र होगा ? क्या वह स्नानमात्र से शुद्ध हो सकता

है ? कदापि नहीं, वह व्यक्ति तो तब तक शुद्ध नहीं हो सकता जब तक कि शरीर की सब धातुएँ न बदल जायें, मांस खाने वाला व्यक्ति किसी प्रकार के धार्मिक तथा व्यावहारिक कार्य के योग्य नहीं। किसी विद्वान पुरुष ने कहा है—

लोग नगर ढिग ना करें मरघट को स्थान।
देखो मांसाहारियो घटमें किया मसान॥

अर्थात् मुर्दालाशोंको दफन करने के लिये कब्रस्तान और जलने के लिये स्मशान को तो लोग नगर एवं आवादी से दूर बनाते हैं। परन्तु आश्चर्य है कि मांसाहारी मनुष्य अपने पेट में ही मुर्दा लाशों को दफनाते हैं। उन्होंने अपने शरीर को ही स्मशान भूमि बनाया हुआ है।

इससे मालूम होता है, मांसाहार व्यवहारिक दृष्टि से भी उचित नहीं। मांसाहारी व्यक्तिको मनुष्यसमाज घृणा की दृष्टि से देखता है, पशु वध करने वाले को वनस्पत्याहारी समाज में तो क्या परन्तु मांस भक्षी समाज में भी सम्मान की दृष्टि से नहीं देखा जाता, किसी क्रूर काम के करने वाले को कसाई की उपमा सारी दुनियां में दी जाती है। कसाई मच्छीमार और मांस बेचनेवाले को अन्य व्यापारियों में बैठने को स्थान नहीं मिलता, हिन्दुस्तान में एवं खासकर देशी राज्यों में उनका स्थान शहर से दूर होता है, परन्तु फूल, फल शाक भाजी बेचने वाले शहर के बीच में ही बैठ कर खुले तौरसे बेचते है, सामाजिक दृष्टि से भी मांसाहार और तत्सम्बन्धी व्यवसाय निन्द्य है।

ऐसे ही प्रायः सभी देशों में यह राज नियम प्रचारित

किया जाता है कि खून के अभियोग में विचार करने के लिये गोमर (कसाई) जूरी न बनाया जावे, अत एव मांसाहारी महाशय केवल अपना ही अनिष्ट नहीं करते, वरन पूर्वोक्त पशुघातकों (कसाइयों) को भी पशु कोटि में गिना देते हैं। पूर्वोक्त सब बातों को देखते हुए हम इस निर्णय पर पहुँचते हैं कि व्यवहारिक दृष्टि से भी मांसाहार सर्वथा त्याज्य है।

मांसाहार से होने वाली बुराइयां

मांसाहार से होने वाली बीमारियों का विचार हम अगले प्रकरण में करेंगे, इस प्रकरण में माँसाहार से होने वाली बुराइयों पर विचार करते हैं।

माँसाहार एक तामसिक पदार्थ है, जैसे माँसाहार करने वाले जानवर क्रूर और क्रोधी होते हैं, वैसे ही माँसाहारी मनुष्य में क्रूरता, क्रोध आदि पाशविक वृत्तियां स्थान कर लेती हैं। रूस के प्रसिद्ध नावलिस्ट और संसार के प्रसिद्ध वैज्ञानिक टाल्स्टाय ने माँस के सम्बन्ध में अपने विचार इस प्रकार प्रगट किये हैं—

"क्या माँस खाना अनिवार्य है ? कुछ लोग कहते हैं यह अनिवार्य तो नहीं लेकिन कुछ बातों के लिये जरूरी है। मैं कहता हूं कि यह जरूरी नहीं।

जिन लोगों को इस बात पर सन्देह हो, वह बड़े बड़े विद्वान डाक्टरों की पुस्तकें पढ़ें जिनमें यह दिखाया गया है कि मांस का खाना मनुष्य के लिये आवश्यक नहीं।

मांस खाने से पाशविक प्रवृत्तियां बढ़ती हैं। काम

उत्तेजित होता है, व्यभिचार करने और मदिरा पीने की इच्छा होती है, इन सब बातों के प्रमाण सच्चे, शुद्ध सदाचारी नवयुवक हैं विशेष कर स्त्रियां और जवान लड़कियाँ हैं जो इस बात को साफ साफ कहती हैं कि मांस खाने के बाद काम की उत्तेजना और अन्य पाशविक प्रवृत्तियां आप ही आप प्रबल हो जाती हैं, मांस खाकर सदाचारी बनना असम्भव है।

हमारे जीवन में सदाचारी और उपकारी जीवन के पहिले आने की तह में अर्थात् हमारे भोजन मे इतनी असभ्य और पाप पूर्ण चीजे घुस गई हैं और इस पर इतने कम आदमियों ने विचार किया है कि हमारे लिये इस बात को समझना ही असम्भव हो रहा है कि गोश्त रोटी खा कर आदमी धार्मिक या सदाचारी कदापि नहीं हो सकता है।

गोश्त रोटी खाते हुए धार्मिक या सदाचारी होने का दावा सुनकर हमेँ इसलिये आश्चर्य नहीं होता कि हम मेँ एक असाधारण बात पाई जाती है, हमारी आँखें है लेकिन हम देख नहीं सकते, कान है लेकिन हम नहीं सुनते आदमी बदबूदार से बदबूदार चीज, बुरी से बुरी आवाज और बदसूरत से बदसूरत वस्तु का आदी बन सकता है जिसके कारण वह आदमी उन चीजों से प्रभावित नहीं होता जिससे कि अन्य आदमी प्रभावित हो जाते हैँ। *

इन विचारों के बाद महात्मा टालस्टाय ने कसाईखाने का अनुभव लिखकर यह स्पष्ट किया है कि जहां ठहर कर हमें

---

* महात्मा टालस्टाय के विचार

देखने मात्र से उल्टियां आती हैं, वहाँ पर कसाई लोग रात दिन काम करते हैं, लेकिन उन्हें कुछ बुरा मालूम नहीं होता। ऐसे उन्होंने एक अध्याय में "अहिंसा परमोधर्मः" पर प्रकाश डालते हुए अपने विचार प्रगट किये हैं, कि यदि लोग मांस खाना छोड़ दें, तो राजनैतिक कलह और झगड़े शान्त हो जायें।

ऐसे ही एक प्रसिद्ध विद्वान् वैद्य श्री हनुमानप्रसाद जी शर्मा शास्त्री अपनी पुस्तक में लिखते हैं कि "मेरा विश्वास है कि आज भारतमें यदि सभी लोग मांस भक्षण छोड दें तो ये साम्प्रदायिक और जातीय कलह एक दम दूर हो जायें, भारतीयों के लिये मांस भक्षण कभी कल्याणकारक नहीं हो सकता, सात्विक अन्नहार और फलाहार से मस्तिष्क जितना ही शान्त होकर कार्य करता है माँसाहार से उतना ही उत्तेजित रहता है।*

इसी तरह माँसाहार करने वाले का चित्त कभी स्थिर नहीं रहता और न ही वह परमात्मा एवं खुदा को याद कर सकता है। भारत के प्रसिद्ध योगी महात्मा आनन्दस्वरूप जी अपनी पुस्तक में लिखते हैं कि—

"प्राणायाम के लिये मांसाहार जितना हानिकर सिद्ध है शायद इतनी कोई अन्य वस्तु होगी ही नहीं। जैसे मुर्दे को जीवित करने में मनुष्य असमर्थ है या यों कहो कि जितनी शक्ति मनुष्य को मुर्दे के जीवित करने में लगती है उतना ही शक्ति प्राण को मांस के पचाने में लगती है। ·· ·······मांस

* आहार बिहार

को पचाने (हज़्म करने) में प्राण को अधिक से अधिक शक्ति लगानी पड़ती है जिससे प्राण की पाचन शक्ति, जीवन शक्ति, पोषक शक्ति, उद्धारक शक्ति, नष्ट हो जाती है. इस पाचन शक्ति के नष्ट हो जाने से यह मांस रूप मुर्दा उदर में सड़ने लगता है। और इसी सड़न से माँसाहारी का नाश हो जाता है। †

मांसाहार करना परमात्मा को स्मरण करने मे विघ्न उपस्थित करता है, हमें गीता से भी यही उपदेश मिलता है—

हजारों की संख्या में छुपने वाले सुप्रसिद्ध पत्र कल्याण' के यह सब्द पठनीय, विचारणीय और आचरणीय हैं।

"मांसाहारी सब जीवों मे कभी भगवान को व्यापक नहीं देख सकता, मांस लोलुप निर्दय हो जाता है इससे वह ईश्वर की दया का अधिकारी नहीं होता। मांसाहारी का स्वास्थ्य खराब रहता है, जिससे वह भजन नहीं कर सकता, मांसाहारी की चित्तवृत्तियां तामसिक रहती हैं, जिससे वह भगवान में नही लग सकती है। अतएव मांसाहार का सर्वथा त्याग करो। ※

पूर्वोक्त महात्मओं और विद्वानो के वक्तव्य से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि मांसका आहार करने से मनुष्य में क्रूरता, निर्दयता आदि दुर्गुण-बुराइयाँ अधिक बढ़ जाती हैं, वह हमेशा मनुष्य स्वभाव के विरुद्ध तामसिक वृत्ति का बन कर लड़ाई झगड़े पर उतारू रहता है। उसका चित्त कभी शान्त और स्थिर नहीं रहता, और न ही वह भगवद्भजन कर सकता है।

※ प्राणायाम तत्व

† गीता डायरी १९३९

मांसाहार से होने वाली बीमारियाँ

पूर्व और पाश्चात्य डाक्टरों का यह सर्व सम्मत मत है कि मांसाहार करने वालेको तरह २ के रोग घेरे रहते हैं, इसमें कोई सन्देह नहीं कि जिस पशुका मांस खाया जायगा-उसे जिस प्रकार का रोग होगा-वही रोग मांसाहारी को भी अवश्य हो जायगा। भारत देशके सर्वमान्य नेता पूज्य महात्मा गान्धी ने इस सम्बन्ध में अपने जो विचार प्रगट किये हैं वे पाठकों के लिये उपयोगी होंगे। वे कहते हैं कि "मांस मिश्रित खुराक खानेवालों के पीछे अनेक रोग लगे रहते हैं, बहुतेरे बाहर से देखने में नीरोग जान पड़ते हैं। हमारे शरीर के सब अवयव और गठन देखने से यह प्रत्यक्ष होता है कि हम माँस खाने के लिये पैदा नहीं हुए।

डाक्टर किंग्सफोर्ड और हेग ने मांसकी खुराक से शरीर पर होने वाले बुरे असर को बहुत स्पष्ट रूपसे बतलाया है। इन दोनो ने यह बात साबित कर दी है कि दाल खाने से जो एसिड पैदा होता है, वही एसिड माँस खाने से पैदा होता है। मांस खाने से दांतों को हानि पहुंचती है, संधिवात हो जाता है। यहीं तक बस नहीं, इसके खाने से मनुष्यों में क्रोध उत्पन्न होता है। हमारी आरोग्यता की व्याख्याअनुसार क्रोधी मनुष्य निरोग नहीं गिना जा सकता। केवल मांसभोजियों के भोजन पर विचार करने की जरूरत नहीं, उनकी दशा ऐसी अधम है

कि उसका ख्याल कर हम मांस खना कभी पसन्द नहीं कर सकते। मांसाहारी कभी निरोग नहीं कहे जा सकते। इत्यादि*

डाक्टर जोशिया आल्ड फील्ड डी० सी० एम० ए० एम० आर० सी० एल० आर० सी० पी० सीनियर फिजीसियन मारगेरेट हास्पिटल ब्रामले कहते हैं—

As is taken in modern civilization, it is affected with such terrible diseases (readily communicable to man) as Cancer, Constipation, fever, intestinal worms etc. to an enormous extent There is little need for wonder that flesh eating is one of the most serious causes of the diseases that carry of ninety-nine out of every hundred people that are born

अर्थात् मांस अप्राकृतिक भोजन है। इसी लिये शरीर में अनेक उपद्रव करता है। आज कल की सभ्य समाज इस मांस को लेने से कैन्सर, क्षय, ज्वर, पेट के कीड़े आदि भयानक रोगों से जो एक मनुष्य से दूसरे मनुष्य में फैलते है बहुत अधिक पीड़ित होता है इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि मांसाहार उन भयानक रोगों के कारणों में से एक कारण है जो १०० में से ९९ को सताते हैं।

ऐसे ही सिलवेस्टर, ग्रेहम, ओ० एस फौलर, जे० एफ न्यूटन, जे स्मिथ, डाक्टर ओ० ए० अलकट हिडकलेन्ड, चीन, लेम्ब वकान, ट्रेजी, ओ, लास, पेम्बर्टन, हाईटेला, इत्यादि कई

* आरोग्यसाधन—(महात्मा गान्धी)

डाक्टरो, प्रवीण चिकित्सकों ने अनेक दृढ़तर प्रमाणों से सिद्ध किया है कि मांस, मछली खाने से शरीर व्याधि मन्दिर हो जाता है। यकृत, यक्ष्मा राज यक्ष्मा, मृगी, पादशोथ, वातरोग संधिवात (Rheumatism) नासूर (Cancer) और क्षयरोग (Consumption) आदि रोग उत्पन्न हो जाते हैं, जिस से मनुष्य को दारुण दुःख भोगना पड़ता है, प्रशंसित डाक्टरों ने प्रत्यक्ष उदाहरण द्वारा यह प्रगट किया है कि मांस मछली खाना छोड़ देने से मनुष्य के उत्कट रोग समूल नष्ट हो गये हैं वे हृष्टपुष्ट हो जाते हैं, डाक्टर एस० ग्रहेमन, डब्ल्यू, एस० फूलर डाक्टर पार्मलो लेम्ब, ब्यानिस्टर वेलर, जे पोटर्र ए० जे० नाइट और जे स्मिथ इत्यादि डाक्टर स्वयं मांस खाना छोड़ देने पर यक्ष्मा अतिसार।अजीर्णता और मृगी आदि रोगों से विमुक्त होकर सबल और परिश्रमी हुए हैं, इसी प्रकार उन्होंने अन्य रोगियों को मांस छुड़ा कर अच्छा तन्दुरुस्त किया है एवं कई डाक्टरों ने अपने परिवार में मांस खाना छुड़ा दिया है।

सर वैन्जीमन डब्ल्यू रिचर्डसन एम० डी० एफ० आर० सी० एम० मांसाहार को कितनी घृणा की दृष्टि से देखते हैं। पब्लिक हैल्थ (Public Health) पर भाषण देते हुए उन्होंने कहा कि मैं सच्चे हार्दिक भाव प्रकट करता हूं और पूर्ण आशा करता हूं कि (उन्नीसवीं) शताब्दी के समाप्त होने से पूर्व ही सब बूचड़ खाने समूल नष्ट कर दिये जायेंगे, और मांस का प्रयोग भोजन में पूर्णतया बन्द कर दिया जायगा।

यह लण्डन के एक प्रसिद्ध डाक्टर के भाव हैं, ऐसे ही कई विद्वान डाक्टरों ने मांसाहार त्याग देने की सलाह दी है ।

जिन देशों में मांस खाने का प्रचार बढ़ा हुआ है, वहां रोग भी स्वाभाविक अधिक हैं और जहां रोगों की अधिकता होती है वहां वैद्यों और डाक्टरों की संख्या भी अधिक पाई जाती है, यह बात निम्नलिखित नक्शे से प्रगट होती है ।

देश	प्रति मनुष्य मांसका खर्च	दसलाख मनुष्यके पीछे डाक्टरों की संख्या
जर्मनी	६४ पौंड	३५५
फ्रांस	७७ पौंड	३८०
ब्रटानिया	११८ पौंड	५७८
आस्ट्रेलिया	२७६ पौंड	७८०

उपरोक्त नक्शे से स्पष्ट प्रकट होता है कि आस्ट्रेलिया में संसार भर से अधिक मांस खाने का प्रचार है, और सब जगह से वहाँ के लोग डाक्टरों से अधिक दवा लेने की आवश्यकता रखते हैं । इसी प्रकार हिन्दुस्तान में मांस का अत्यन्त प्रचार होने के कारण रोग बहुत बढ़ गये ; साथ ही डाक्टरों की संख्या भी बढ़ गई है । *

पूर्वोक्त डाक्टरों और महान पुरुषों के वर्षों के अनुभव हमें यही बतला रहे हैं, कि माँसाहार करने से बीमारियां बढ़ती हैं, और मांस को छोड़ देने से आदमी निरोग-तन्दुरुस्त और हृष्ट

---

* गौहर-बे बहा

पुष्ट हो जाता है। ऐसे प्रमाण कुछ ही डाक्टरों के नहीं बल्कि ऐसे ही अनेक डाक्टरों के प्रमाण दिये जा सकते हैं। जिन्होंने मांसाहार करने से रोगों की उत्पत्ति एवं माँस त्याग से रोगों का नाश होना स्पष्ट कहा है।

न्यूयार्क प्रान्त के अलवेनी नगर में अनाथ बालकों के लालन पालन के लिये एक अनाथालय स्थापित किया गया है। पहिले उसमें ६०-७० बालक रक्खे गये थे। उन में से कभी ४ कभी ५ और कभी ६ लड़के सर्वदा पीड़ित रहते थे, हर महीने में प्रतिशतक एक बालक की मृत्यु होती थी, यह दशा देख कर उस के संरक्षकों ने उन्हें माँस मछली खाना निषेध कर दिया, जिससे वे सब लड़के निरोग रहने लगे। ‡

अनेक डाक्टरों के अनुभव और विचार बताने के बाद उसपर अधिक प्रकाश डालने की आवश्यकता नहीं फिर भी एक बात और पाठकों को बतला कर इस प्रकरण को समाप्त करेंगे।

पहले ही यह कहा गया है, कि जिस पशु का मांस खाया जायगा, उसे जो रोग होगा, वह उस मनुष्य को भी अवश्य हो जायगा।

मान लो किसी तपेदिक या दमे के रोगी ने कफ थूका और उस कफ को किसी मुर्गा या मुर्गी ने खा लिया, जिसका विषैला असर उस के मांस में प्रविष्ट हो गया, उस मुर्गा या मुर्गी का मांस जो खायगा उसको वह रोग अवश्य हो जायगा।

‡ Fruits and Farinaca &c. part III
Chapter XIII

यह आवश्यक नहीं कि मुर्गी को वह रोग हो जाय, परन्तु उसके मांस में असर अवश्य होगा। जैसे चील और गिद्ध मांस खा जाते हैं. उनका मांस न तो कोई खाता है, न उनका मांस गलता ही है। परन्तु यदि उस चील की बीट को कोई कुत्ता खा ले तो पागल हो जाता है, और जिसे वह कुत्ता काटता है यदि यथोचित औषधि न की जाय तो मर जाता है। उसपर यह सब असर सर्प के विष का ही होता है। हालांकि चील को उससे कुछ नहीं हुआ, इसी प्रकार मुर्गी पर यदि कोई असर न हो तो भी उसका मांस खाने से मनुष्य में वह रोग पैदा हो जायगा।

संसार के सभी भयङ्कर रोगों से छुटकारा पाने के लिये और अपने शरीर को निरोग-हृष्ट-पुष्ट करने के लिये यह आवश्यक है कि मांसाहार का सर्वथा त्याग करें।

मांससे अधिक बलदायक पदार्थ

मनुष्य को इस संसार में मांस से बढ़ कर बलदायक पदार्थ सैकड़ों मिले हैं। दूध, दही, मक्खन, घी, बादाम और पिस्ते आदि तरह २ के हरे और सूखे फल व मेवे ऐसे पदार्थ हैं जो केवल शरीर को ही पुष्ट करने वाले नहीं, बल्कि मानसिक शक्तियों का बल देने वाले और ज्ञानेन्द्रियों को शक्ति प्रदान करने वाले हैं।

पूर्वोक्त दूधादि व फलादि में कोई पदार्थ ऐसा नहीं जो किसी प्रकार का रोग पैदा करने वाला हो। किन्तु सैकड़ों

रोगी मांसाहार त्याग कर और फल एवं दूध का उपयोग करके स्वस्थ्य (तन्दुरुस्त) ही नहीं बल्कि हृष्ट-पुष्ट हुये हैं।

ईस्वी सन् १९०८ में "लंदन वेजीटेरियन एसोसिएशन" के सैक्रेटरी मिस एफ० आई निकलसन ने दस हजार लड़कोंको ६ महीने तक बनस्पति की खुराक पर रखा था, और 'लंदन काउन्टी कौन्सिल' ने भी दस हजार लड़कों को ६ महीने तक मांसाहार पर रक्खा था। छः महनों के बाद इन दोनों विभाग के बालकों की परीक्षा वहां के वैद्यक शास्त्रके जानने वाले विद्वानों ने की थी, और उससे यह सिद्ध हुआ था कि बनस्पति के आहार करने वाले बालक मांसाहारी बालकों से अधिक तन्दुरुस्त वजन में अधिक और स्वच्छ चमड़ी वाले थे।

चार्ल्स डार्विन लिखते हैं—प्राचीन काल में मनुष्य बड़ी भारी संख्यामें शाकाहारी ही थे। (Descant of men P. 156) और मैं विस्मित हूं कि ऐसे असाधारण मज़दूर मेरे देखने में कभी नहीं आये; जैसे कि चिली (Chili) की कानों में काम करते हैं। वे बड़े दृढ़ और बलवान हैं, और वे सब शाकाहारी हैं।

ऐसे ही न्यूयार्क ट्रिब्यून (Newyork Tribune) के सम्पादक मि० होरेस ग्रीरेले लिखते हैं कि—मेरा अनुभव है कि मांसाहार की अपेक्षा शाकाहारी १० वर्ष अधिक जी सकता है।

वास्तव में शाक भोजन में छोटे से छोटे और बड़े से बड़े तत्व विद्यमान हैं जो कि मनुष्य जीवन के पालन पोषण के लिये आवश्यक हैं। डाक्टरों ने अच्छी तरह परीक्षा के बाद

यह घोषणा की है कि ९९ प्रतिशत व्याधियां मांस भक्षण द्वारा मनुष्य तक पहुंचती हैं।

सन् १९०८ ई० में प्रसिद्ध विद्युत शास्त्रज्ञ ए० ई० वेरिस ने २५ वर्ष लगातार अपनी प्रयोगशाला में परिश्रम करने अनन्तर सिद्ध किया है कि सब प्रकार के फल और मेवों में एक प्रकार की बिजली भरी हुई है, जिससे शरीर का पूर्ण रूप से पोषण होता है। *

प्रो० जोहन रे० एफ० आर० एस० लिखते हैं कि मनुष्य जीवन के पालन पोषण के लिये जिस जिस वस्तु की आवश्यकता है, वह सब वनस्पति द्वारा प्राप्त हो सकती है। †

प्रो० लारेन्स कहते हैं कि मांसाहार जैसे शरीर की शक्ति और हिम्मत कम करता है, एवं तरह तरह की बीमारियों का मूल कारण है वैसे ही वनस्पत्याहार के साथ कम ताकती डरपोकन, और बीमारियों का कोई सम्बन्ध नहीं।

सैकड़ों डाक्टरों ने अपने अनुभवों के बाद यह घोषणायें की हैं कि हमें कुदरत ने ऐसे बलदायक अनेक पदार्थ दिये हैं, जो कि मांस की अपेक्षा बढ़कर और अन्य दुर्गुणों से निर्दोष है। पाठकों के सामने एक ऐसा वैज्ञानिक नक्शा उपस्थित कर देना आवश्यक है, जिससे पाठक अच्छी तरह जान सकेंगे, कि किस वस्तु में शरीर को पुष्ट करने वाला कौन सा तत्व कितनी मात्रा में है।

---

† हम सौ वर्ष कैसे जीवें ?

* History of plants Book 1 Chap 24

पदार्थों में प्रत्येक तत्वका अलग २ परिमाण *

नाम पदार्थ	प्रोटीन	चिकनाई	चीनी-मेदा	नमक	पानी	भोजन योग
दाल	२५.१	२.३	५५.८	२.८	१.२	८५.६
मेवा	१८.५	५१ ६	९.६	२ ४	२६ २	८२.२
अनाज	१०.६	२.३	७२ ५	२.१	१२.०	८७.८
सूखामेवा	४.४	१.६	६८.५	२ ४	१९.७	७७.१
सब्जी	१ ४	०.३	८ ६	०.८	८७ ७	११.१
ताज़ाफल	१.०	०.९	१६.०	०.६	८१ ४	१८.५
पनीर	२८.३	३१.०	०.०	४ ५	३६.०	६४.०
मांस	१७.०	१७.९	० ०	२.१	६२.९	३७.०
अण्डा	१४.०	१०.५	० ०	१ ५	६४.०	२६.०
मछली	११.९	१.२	०.०	१.२	८६.१	१.३
दूध	४.०	३.९	५ २	० ८	८६ ५	११.८

ऐसे ही सर विलियम एनीशा कूपर सी० आई ई० ने अपनी पुस्तक में भिन्न २ भोजनों का मिलान करते हुए उनके शक्ति अंशों का परिमाण दिया है उसमें से कुछ भाग नीचे दिया जाता है। †

नाम पदार्थ	प्रतिशत कितने अंश शक्ति है
बादाम की गिरी	९१
सूखे मटर चने आदि	८७

---

* आहार विज्ञान

† मानवधर्म

चावल (मांड सहित)	८७
गेहूँ का आटा	८६
जौ का आटा	८४
सूखे फल किशमिस खजूर आदि ...	७३
घी	८७
मलाई	६६
मांस	२८
मछली	१३
अण्डे	२६

पूर्वोक्त दोनों नकशों से अच्छी तरह यह बात स्पष्ट मालूम हो सकती है कि जनता में यह भ्रम ही फैला हुआ है कि मांस भक्षण से शरीर की शक्ति बढ़ती है।

डाक्टरों के अनुभव और उनकी घोषणाओ को पढ़कर प्रत्येक मनुष्य का यह कर्त्तव्य है कि वह अपवित्र पदार्थ का खाना छोड़दे। पुराणो में इस सम्बन्ध में कहा है—

ये भक्ष्यंति पिशितं दिव्य भोज्येषु सत्स्वापि।
सुधारसं परित्यज्य भुजंते ते हलाहलम्॥

अर्थात् दिव्य भोज्य पदार्थों के होने पर भी जो लोग मांस खाते हैं वे वास्तवमें अमृत को छोड़ कर हलाहल-विषको पीते हैं।

मांस किनका आहार है—

यक्षरक्षः पिशाचान्नं मद्यं मांस सुरासवम्।

अर्थात् यक्ष, राक्षस, और पिशाचोका अन्न मद्य-मांस है। महात्मा कबीर ने भी ऐसा ही लिखा है। वे कहते हैं—

मांस अहारी मानवा, परतछ राक्षस अंग।
तिनकी संगति मत करो परत भजन में भंग॥
जोरि कर ज़िबह करें कहते हैं—हलाल।
जब दफतर देखेगा दई तब होगा कौन हवाल॥

जिन देशो में प्रजा के स्वास्थ्य का अधिक ध्यान रक्खा जाता है और प्रजा को निरोग रखने के लिये जहां पर बड़े २ डाक्टर अनुभव कर के प्रजा को स्वस्थ्य रहने के लिये नियम बताते व सूचनायें देते हैं, उन्होंने भी मांस को त्याज्य बताया है। जिनमें से कुछ नीचे दिये जाते हैं।

जापान सरकार ने अपनी प्रजा के लिये आरोग्यवर्धक नियम प्रकाशित किये। उसके दूसरे नियम में यह लिखा है कि-अच्छा अनाज, फल, शाक, और गाय का ताजा दूध तुम अपनी नित्य की खुराक में इस्तमाल करो। मांस बिलकुल नहीं खाना गायका दूध जहां तक हो सके, उसका अधिक उपयोग करना, और अन्न खूब चबा कर गले से उतारना।

इंग्लैण्ड सरकार की ओर से ब्रिटिश बोर्ड आफ एग्रीकल्चर ने ता० ११-११-१५ के टाइम्स आफ इण्डिया द्वारा अन्न, फल और शाक के महत्व सम्बन्धी एक लेख से अंग्रेजी प्रजा को चेतावनी दी थी कि—

मांसाहार छोड़ कर उसके बदले दूध, पनीर, और मसूर की दाल ग्रहण करो, जो मांस की खुराक की तरह हरि शरीर

* कबीर रहस्यवाद

में मांस पैदा करते हैं, और कीमत में बहुत सस्ते हैं, अधिक शाक तथा फल फूलादि ग्रहण करो। *

मांस को न खाने वाले भिन्न भिन्न देश और जाति के लोगों की दशा

शरीर को मांस खा कर हृष्ट-पुष्ट किया जा सकता है या वनस्पत्याहार करके। इसका विचार करनेके लिये हम संसार की ओर एक बार दृष्टि डालकर निर्णय करें।

बहुत दूर की बातें छोड़ दें—तो भी कुछ समय पूर्व प्रोफेसर राममूर्ति जिन्होंने मोटरें रोक कर छाती पर मनों पत्थर रखवा कर और लोहे को मजबूत जंजीरें तोड़कर संसार को चकित किया था, क्या वे भी मांसाहारी थे? कदापि नहीं, वे कट्टर शाकाहारी ही थे।

महाराणा प्रताप की वीरता को कोई हिन्दू या कोई इतिहासज्ञ भुला नहीं सकता, क्या कोई बतला सकता है कि वे मांसाहारी थे? नहीं, पूर्ण वनस्पत्याहार करने वाले थे। ऐसे ही हजारों वीरों के नाम उपस्थित किये जा सकते हैं, जो वनस्पत्याहारी होते हुए भी अपने जौहर दिखा गये हैं।

भारत देश एवं इंगलैण्ड आदि देशों में जितनी भी महान शक्तियां हुई हैं, उन्होंने मांस भक्षण तो किया ही नहीं बलिक मांसाहार को रोकने के कई उपाय किये हैं। हजारों में से कुछ नाम यहाँ दिये जाते हैं—भगवान महावीर, महात्मा बुद्ध, श्री

* जीव दया, रजत महोत्सव अङ्क।

रामचन्द्र और श्री कृष्ण, महादेव और बाबा नानक साहब, राजा अशोक और राजा विक्रमादित्य, सुखरात, अरस्तू, पेथोगोरस, मनु, मैथ्यू, गोरीबाल्डी, मिल्टन, नैलसन, शेली, गोल्डस्मीथ, पोप, एली, रिज्यू, जेम्स, जोनीस्टर जेम्स, पीटर आदि।

अच्छी तरह विचार करने पर यह भलीभाँति समझ में आ जायगा कि वीरता मांस का गुण नहीं, बल्कि पुरुष का स्वाभाविक धर्म है। नपुंसक को ताकतकी हजारों दवायें खिलाने पर भी शक्ति शाली नहीं बनाया जा सकता। बङ्गाल और मगध देशके मनुष्य प्रायः मांसाहारी होते हुए भी इतने कायर हैं, कि प्रायः सतू ही खाने वाले छपरे जिलेके ४-५ आदमियों से ५० आदमी भाग जायेंगे। गुरुगोविन्दसिंह एवं उनके शिष्य सिक्ख लोग जो कि किले फतह करने और युद्ध करनेमें अव्वल नम्बर के गिने आते थे वे भी प्रायः फलाहारी ही थे।

जिस समय ग्रीक और रोमके निवासियों का बल-वीर्य और पराक्रम सारे संसामें प्रसिद्ध होरहा था, उस समय के लोग मांस-मछली नहीं खाते थे, केवल शाकादि पदार्थों को खा कर जीवनयात्रा पूर्ण करते थे।

जो स्पार्टा निवासी धर्म पलाई नामक स्थान पर असाधारण बल-वीर्य और साहस आदि दिखाकर अक्षय कीर्ति से भूषित हुए थे, वे केवल निरामिष भोजन ही करते।

आर्लेण्ड के लोग केवल गोल आल ही खाते हैं यह बड़े परिश्रमी और मांसहारियों से सबल होते हैं।

लन्डन में Order of Golden age * नामक संस्था है जिसने माँसाहार के विरुद्ध प्रचार के लिये बहुत साहित्य प्रकाशित किया है। एवं योरोप के अन्तर्गत बहुतेरे व्यक्ति फल

---

* भारतावर्ष में अहिंसा दया का प्रचार करने वाली हजारों संस्थायें तो विद्यमान हैं, परन्तु पाठकों यह जान कर आश्चर्य न करना चाहिये कि विदेशों में ऐसी सैकड़ों संस्थयें विद्यमान हैं, जो दया के सिद्धान्त का प्रचार करती हैं, मांसहार छुड़ा के उनको वनस्पत्याहार पर रहने को प्रेरित करत हैं–उन की कुछ मुख्य संस्थाओ के नाम नीचे दिये जाते हैं।

दी आडर आफ दी गोल्डन एज लन्दन

दी वेजिटेरियन सोसायटी लन्दन

दी अमेरिकन ह्यमेन एसोसियेशन अमेरिका

दी नेशनल एन्टी वीवीसेकशन लीग लण्दन

दी टौरोन्टो ह्युमेन सोसायटी केनाडा

दी एनीमल रेसक्यु लीग बोस्टन

दी अमेरिकन ह्यमेन एज्युकेशन सोसायटी अमेरिका

दी लन्दन वेजिटेरियन सोसायटी लण्दन

दी फूड एज्युकेशन सोसायटी लण्दन

दी लीवर पुल वेजिटेरियन सोसायटी नीवर पुल इङ्गलैण्ड

दी नोटींगहाम वेजिटेरियन सोसायटी नोटींगहाम

वी स्फोटीस वेजिटेरियन सोसायटी ग्लासगो

दी जर्मन वेजीटेरियन सोसायटी फ्रेन्कफर्न जरमेन

फूलादि खाकर अपने पड़ोसी मांस भक्षियों से अधिक बलिष्ट हुए हैं।

इङ्गलैण्ड और अमेरिका के अन्तर्गत फिले डेल्फिया नगर में बाईबेल क्रिस्टान एक ईसाई सम्प्रदाय विद्यमान है। यह लोग कभी मद्य, मांस, और मछली नहीं खाते; केवल अन्न आदि खाते तथापि उस प्रदेश के मांसाहारी व्यक्तियो से बलवान हैं।

रूस देश के सैनिक और दूसरे सामान्य मनुष्य बहुधा निरामिष भोजन करते हैं। वह बड़े परिश्रमी और बलि होते हैं।

एम० डूपा साहिब ने लिखा है कि फ्रान्सेसियों के दो तिहाई मनुष्य केवल आल और मकई निरामिष भोजन करते हैं। पोलेण्ड, हंगरी, स्वीटजरलैण्ड, स्पेन, इटावा, और ग्रीस आदि के बहुतेरे स्थानों के सामान्य श्रेणी के मनुष्य शस्य और फूलादि खाते हैं। वे बड़े परिश्रमी और बली होते हैं।

स्पेन देश के गोलिगो नामक स्थान के निरामिष खाने वाले और स्मरना नगर के शस्याहारी मोटिये और कहार सात सात मन का बोझ ले आने में तनिक भी नहीं हिचकिचाते, उन में कई मोटिये तो १०, ११ मन बोझ ले जाते हैं।

अमेरिका महा द्विप के मेक्सिको और ब्रजिल आदि के अनेक स्थानों के छोटे श्रेणी के मनुष्य फलफूल खाकर हट्टे-कट्टे और निरोग बने रहते हैं।

अफ्रीका खण्ड के मध्य भारत में बहुतेरे जाति के मनुष्य केवल निरामिष भोजन करते हैं। यह भी बली और परिश्रमी होते हैं उक्त खण्ड के जेन्हा प्रदेश के निवासी केवल शाक और फल

फूल आदि खाकर जीवन निर्वाह करते हैं। इनके समान निरोग, साहसी और परिश्रमी मनुष्य संसार में विरले ही दिखाई देते हैं।

कैरो नगर के शस्यहारी मोटिये (बोझ ढोने वाले) और कहार इतना भारी बोझ ढोते हैं कि जिसे सुनकर लन्दन के मांस भक्षी और मद्यप मोटिये विश्वास नहीं कर सकते।

दक्षिण समुद्र के बहुतेरे द्वीपोंके निवासी भी केवल निरामिष भोजन करते हैं। यह ऐसे बलवान होते हैं कि इङ्गलेण्ड के बड़े बड़े पहलवान इनके साथ मलयुद्ध करके हार जाते हैं।

निग्रो जातके मनुष्य सर्व भक्षी हैं। उनमें से बहुतेरे मनुष्य निरामिष भोजी हैं। उनकी शारीरिक शक्ति ऐसी सबल होती है कि जिसका वृत्तान्त सुनकर सब लोगों को आश्चर्य मालूम होता है। †

सन् १९०२ में जर्मनी के ड्रेस्डेन और बर्लिन शहरों के बीच एक दौड़ रक्खी गई, जिसका फासला १२४ मील था और दौड़ने वालों की संख्या ३२ थी। ये सब ड्रस्डेन से ७॥ बजे सवेरे रवाना हुए। कार्लमन्न नामक एक आदमी २७ घंटेमें बर्लिन पहुंचा, वह फलहारी था, और दूसरे सब रह गये। *

† Fruits and Farinacea the proper food of *man, by gohr Smith part III chapter IV. Lactures* on comparative Anatomay etc. by W. Lawrence, Lecture IV chapter VI The Englih man, weekly supplementary sheet saturday evening, 17 th January 1852.

मांस भोजन विचार।

* हम सौ वर्ष कैसे जीवें ?

पुर्वोक्त सभी देशों और जातियों की दशा पर विचार करने से हम इस निर्णय पर पहुंच जाते हैं कि मांसाहारियों की अपेक्षा वनस्पत्याहार करने वाले अधिक बलवान,फुर्तीले,साहसी और दीर्घजीवी होते हैं। अतः मनुष्य मात्रको मांसाहारका सर्वथा त्याग कर वनस्पत्याहार पर जीवन निर्वाह करना चाहिये।

मांसाहार और मनुष्य कर्तव्य

अर्थात् किसी के साथ बुरा वर्ताव न करो।

Don't abuse to any one.

मनुष्य एक समझदार प्राणी है, मनुष्य अपना जीवन पशुओ के समान व्यतीत नहीं करता। वह प्रत्येक कार्य के अन्तिम परिणाम पर विचार करके प्रवृत्त होता है। यदि मनुष्य मांसाहार के सम्बन्ध में अच्छी तरह विचार करे तो वह मांसाहार का सर्वथा त्याग कर दे। जो आहार प्रकृति के नियम विरुद्ध हो, तरह २ का बुराइयां और बीमारियां पैदा करने वाला हो, नैतिक और व्यवहारिक दृष्टि से जो अधम काय माना जाता हो, सहृदय मनुष्य कभी उस कार्य को न करेगा।

मनुष्य अपने लिये कदापि यह नहीं चाहता कि हमारे साथ कोई बुरा बर्ताव करे। तो हमारा इसके साथ ही यह भी बर्ताव है कि हम भी किसी का बुरा न करें।

संसार में हम कई प्रकार की विचित्रतायें देखते हैं। कोई सुखी है कोई दुःखी, कोई धनवान है कोई गरीब; किसी को खाने के लिये तरह २ पदार्थ मिलते हैं तो किसी को जौ की

रोटी भी भरपेट खानेको नहीं मिलती। किसी का शरीर हृष्ट-पुष्ट और स्वस्थ है, तो कोई रोगों का घर बना हुआ है कोई तो सर्वाङ्ग पूर्ण और सुन्दर है। और कोई अन्धा-लूला या लंगड़ा है। इसका कारण क्या है? कर्म फिलासफी के जानने वाले अच्छी तरह समझते हैं, कि यह सब अच्छे और बुरे कार्यों (कर्मों) का फल है। जो आदमी जैसा कर्म करता है उसे वैसा ही फल भोगता पड़ता है। अच्छे कार्य करने से सुख, और बुरे कार्यों से दुःख उठाना ही पड़ता है। अपनी जिह्वा के क्षणिक स्वादके लिये बेरहमी से बेजबान प्राणियो का जो नाश करते हैं वे अपने लिये बुरे कर्मों का बन्ध करते हैं। जरा अपनी छाती पर हाथ रखके ठन्डे दिलसे विचार करें कि एक मामूली सा कांटा चुभ जाने पर हमें कितना दुःख होता है? तो क्या जिस पर छुरी चलाई जायगी उसे कोई कष्ट न होता होगा? उसके कष्टो को जो अपनी जबान से नहीं बोल सकता, हम नहीं जान सकते। परन्तु इसमे कोई सन्देह नहीं की ऐसे बुरे कार्यों का ऐसा ही फल हमें अवश्य भोगना होगा। मांस शब्दके अर्थ पर भी यदि विचार करें तो यही तात्पर्य निकलता है—

मां स भक्षयिताऽमुत्र यस्य मांसमिहाद्म्यहम्।
एतन्मांसस्य मांसत्वं प्रवदन्ति मनीषिण॥

मनुस्मृति ५। ५५

अर्थात् जिसका मांस मैं यहां खाता हूं, (मां) मुझ को (स) वह भी जन्मान्तर में अवश्य ही खायगा। ऐसा मांस शब्द का अर्थ महात्मा पुरुषों ने कहा—

मांस से हिंसा अवश्य होती है, कहा है—

न हि मांसं तृणात् काष्ठादुपलाद्वापि जायते ।
हत्वा जन्तुं ततो मांसं तस्माद्दोषस्तु भक्षणे ॥

—महाभारत अनुशासन पर्व

अर्थात्—तृण काष्ठ या पत्थर से मांस उत्पन्न नहीं होता किसी जीव को मार कर मांस मिल सकता है। इस लिये मांस भक्षण में दोष (पाप) अवश्य है।

समुत्पत्तिं च मांसस्य वधबन्धौ च देहिनाम् ।
प्रसमीक्ष्य निवर्तेत सर्व मांसस्य भक्षणात्

अर्थात्—मांस की उत्पत्ति और प्राणियों के वध तथा बन्ध को देख कर सर्व प्रकार के मांस भक्षण से मनुष्य को निवृत्त होना चाहिये।

हमें जैसे अपने प्राण प्यारे है, वैसे ही दूसरों को भी अपने प्राण प्यारे हैं, जितना दुःख हमें होता है उतना ही दूसरों को होता है। मनुष्य का वास्तविक स्वभाव व गुण दया है। हम स्वय यह चाहते हैं कि हमें कोई दुख न दें, हमें कोई सताये नहीं और नहीं हमें कोई मारे।

Do as you wish to be done.

जो बात तू अपने लिये पसन्द करता है वह दूसरों के के लिये भी कर।

यदि हम स्वयं यह चाहते हैं, और प्रार्थना करते हैं कि—हे भगवन ! हम पर दया कर, तो हमें स्वय दूसरों पर दया

करनी चाहिये। * प्रसिद्ध विद्वान अंग्रेज कवि ने क्या ही सुन्दर कहा है—

We do pray for mercy, and that same prayer doth teach us all to rendar the deeds of mercy

— Shakashpeare शेक्सपियर

अर्थात् हम दया के लिये प्रार्थना करते है; और वह प्रार्थना हम सबको दया पूर्ण व्यवहार करना सिखाती है।

Kindness is wisdom, there is none in life but needs it and may learn Bailey

दया ही बुद्धि है। ऐसा कोई जीवधारी नहीं है, जिसे स्वय उसकी आवश्यकता न हो और जिसे दयालुता न सीखनी चाहिये। —बेली

पूर्वोक्त महात्माओं के कथन से स्पष्ट मालूम होता है कि मनुष्य दूसरों पर दया करें, कदापि किसी पशुओं को न मारें। शास्त्रोंमें हिंसाका यहाँ तक निषेध है कि राजा महाराजाओं तथा अन्य पुरुषोंको शिकार खेलने तक मना किया है। कहा है—

वने निरपराधनां वायुतोय तृणाशिनाम्।
निघ्नन् मृगाणाम् मांसार्थी विशेष्येत कथ शुनः॥

* यथा मम प्रिया प्राणाः तथा तस्यापि देहिनः।
इति मत्वा न कर्तव्यः घोर प्राणवधो बुधै॥

—मार्कण्डेय पुराण

जैसे मुझे मेरे प्राण प्यारे हैं, ऐसे ही दूसरों को भी है—यह मान कर बुद्धिमानों को घोर हिंसा छोड देनी चाहिये।

अर्थात्—वन में वायु, जल और तृण खाने वाले मृगों को जो मांसार्थी मारते हैं, वे एक प्रकार के कुत्ते हैं।

मनुष्य का धर्म गुण है: दूसरों का उपकार (भला) करना न किसी को सताना पुण्य संचय करना है न कि पाप में प्रवृत्त होना, इसके लिए महात्माओं ने यही मार्ग बताया है—

अष्टादश पुराणेषु व्यासस्य वचन द्वयम्।
परोपकारः पुण्याय पापाय परपीड़नम्॥

अठारह पुराणों में व्यास जी के मुख्य वचन दो ही हैं, अर्थात् परोपकार करने से पुण्य और दूसरों को पीड़ा देने से पाप होता है।

श्रूयतां धर्म सर्वस्वं श्रुत्वाचैवावधार्यताम्।
आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्॥

अर्थात्—सब धर्मों के सर्वस्व निचोड़ को सुनो, और सुन कर धारण करो, वह यह है कि अपनी आत्मा के विरुद्ध कार्य दूसरों के साथ न करो। अर्थात् जो बात तुम अपने लिये नहीं चाहते वह दूसरों के लिये मत करो।

कई लोगों में यह भ्रम भी फैला हुआ है, कि हम तो किसी पशु को अपने हाथ से मारते नहीं, हम तो बाजार से खरीद कर लेते हैं, इससे हमें कोई पाप न होगा। परन्तु यह उन की भ्रान्ति है, यदि कोई मांस न खाया करे, तो कसाई लोग पशुओं की हत्या ही क्यों किया करें। मनुस्मृति में मनुभगवान ने कहा है—

अनुमन्ता विशसिता निहन्ता क्रयविक्रयी ।
संस्कर्त्ता चोपहर्ता च खादकश्चेति घातकाः ।

भावार्थ—मारने की सलाह देने वाला, मरे हुए प्राणियों के शरीर को काटने वाला, मारने वाला, मोल लेने वाला, बेचने वाला, पकाने वाला, परोसने वाला और खाने वाला यह सभी ही घातक हैं, अर्थात् इन सब को दोष लगता है।

कई लोग यह कह देते हैं कि उन पशुओं ने आज नहीं तो कल मर जाना ही है, फिर क्यों न हम अपने काम में ले आयें, यह कोई दलील नहीं। यदि ऐसा हो तो हम अपने सम्बन्ध में भी यह जान कर कि कुछ दिनों बाद मर जायेंगे, आत्म घात करलें, या अपने मरणपर कष्ट अनुभव करें। प्रत्येक व्यक्ति को मानव शास्त्र के इन वाक्यों पर ध्यान देना चाहिये।

यो हिंसको हि भूतानि हिनस्त्यात्मसुखेच्छया ।
स जीवंश्च मृतश्चैव न क्वचित् सुखमेधते ॥
यो बन्धनवधक्लेशान् प्राणिनां न चिकीर्षति ।
स सर्वस्य हितप्रेप्सुः सुखमत्यन्तमश्नुते ॥

भावार्थ—जो हिंसक अपनी आत्मा को सुख पहुंचाने के लिये प्राणियों की हिंसा करता है, वह न तो जीता हुआ कहीं सुख पाता है और न मरने पर कहीं सुख पाता है।

जो मनुष्य बन्धन या वध के द्वारा प्राणियों को क्लेश पहुँचाने की इच्छा नहीं करता, बल्कि सब प्राणियों को सुख देने की चेष्टा करता है, वह अत्यन्त सुखी रहता।

अतः मनुष्य कर्तव्य है कि जैसे स्वयं दुःख नहीं चाहता वैसे ही पशुओं को मांस खाने के लिये मार कर दुःख न दे और इस सिद्धान्त पर अमल करे।

LIVE AND LET LIVE.

खुद रहो तथा औरों को भी रहने दो।

मांसाहार विचार

द्वितीय भाग

मांसाहार और हमारे धर्म

संसार के लगभग सभी धर्मों के सिद्धान्तों की दृष्टि से मांसाहार त्याग करने योग्य है। कोई श्री राम का भक्त हो, या कृष्ण का, महावीर का पुजारी हो, या बुद्ध का, ईसा-मसीह को मानने वाला हो, या जरथोस्त का, गुरु नानक का सेवक हो, या दयानन्द का, पैगम्बर मुहम्मद का अनुयायी हो, या किसी अन्य अवतार का किसी को यह मानने मे इन्कार न होगा, कि उनका पैगम्बर या अवतार 'दयालु' था। यह हमे मानना होगा कि दयालु होना एक ऐसा गुण है जिसकी ओर संसार आकृष्ट होता है, प्रत्येक मत की भाषा, शब्द या क्रिया में चाहे कुछ भी अन्तर हो, परन्तु सबके सिद्धान्तों के रहस्य में से यह बात स्पष्ट निकल आती है, कि हमें दूसरों पर दया या रहम करना चाहिये।

किसी भी धर्म को मानने वाले के लिये यह आवश्यक है

कि वह धर्म के नाते मांसाहार का त्याग करदे। क्योंकि उन के पैगम्बर या अवतार ने स्वयं ही मांस नहीं खाया, और न ही उन्हों ने उसके लिये उपदेश दिया है। भगवान कृष्ण ने मक्खन तो खूब खाया, परन्तु मांस को छुआ तक नहीं, भगवान राम स्वयं तो क्या उनकी नगरी मे ही मांस नही खाया जाता था, वाल्मीकि ऋषि ने रामायण मे जहां अयोध्या की प्रशंसा की है वहां स्पष्ट लिखा है, कि वहां के रहने वाले, केवल शाली और वासमती आदि के चावल ही खाते थे, ऐसे ही वाल्मीकि ऋषि ने जहां दक्षिण के रहने वालों की प्रशंसा की है और सुग्रीव, अंगद, हनुमान आदि के बल को दिखाया है वहां पर यह स्पष्ट लिखा है कि वह फल, मूल-कन्द ही खाते थे। ऐसे ही अन्य अवतारों के सम्बन्ध मे कह सकते है कि उन्हों ने स्वयं मांस न खा कर यह प्रमाणित किया है, कि मांस मनुष्य के आहार के योग्य नही।

ऐसे ही हम अपनी पूजन सामग्री से देख सकते है कि हमारे मन्दिरो मे, चाहे वह कृष्ण का हो, चाहे रामका, जगन्नाथ जी का हो या बद्रीनारायण जी का, किसी भी जगह पूजन मे अन्य सामग्रियो के साथ मांस नही चढ़ाया जाता। और सभी मतानुयायी किसी प्रकार के खून के दाग लगने पर अपने मन्दिर गुरुद्वारे, गिरजे या मस्जिद को नापाक होना कहते हैं, ये सब बातें स्पष्ट प्रगट करती है कि मांस खाने वाला किसी भी धर्म के मानने योग्य ही नही रहता।

मनुष्य में स्वाभाविक तौर पर दया पाई जाती है। विशेषतया भारतवर्ष के आर्य धर्मों मे करुणा के इतने भाव पाए जाते हैं कि वे किसी चिड़िया को भी पिंजरे में दुखी पड़ा हुआ नहीं देख सकते। भारतवर्ष की पवित्रता के कारण ही देवता भी भारत में आने की इच्छा करते हैं। किसी विद्वान ने ठीक ही कहा है—"कि भारतवर्ष मे यदि निर्दयता, हिंसा तथा मांस भक्षण होता तो यह भी अन्य देशों की स्थिति पर होता, देवताओं का निवास स्थान नही। देवता भी यहां आने की इच्छा न करते। मांस का उपयोग न करने के कारण ही इस देश को आर्य देश कहा है।" +

अहिंसा–दया का प्रत्येक धर्म के साथ घनिष्ट सम्बन्ध है। भर्तृहरि जी ने अपने एक श्लोक मे कई ऐसी बातें बताई हे जिनका सम्बन्ध प्रत्येक धर्म से है। वे लिखते है—

प्राणाघातान्निवृत्ति: परधनहरणे संयम: सत्यवाक्यम्।
काले शक्त्या प्रदानं युवतिजनकथा मूकभाव: परेषाम्॥
तृष्णास्रोतोविभंगो गुरुषु च विनय: सर्वभूतानुकम्पा।
सामान्य: सर्वशास्त्रेष्वनुपहतविधि: श्रेयसामेष पंथा:॥

— राजर्षि भर्तृहरि

भावार्थ— प्राणीहिंसा से निवृत्त होना, दूसरे के धनको हरण करने से मन को रोकना, सत्य बोलना, उचित समय पर

+ इङ्गलैण्ड के प्रसिद्ध लेखक विलियम कावेट के एडवाइस् टू यंगमेन, के आधार पर लिखित "युवाओं को उपदेश"

अपनी शक्ति के अनुसार दान देना, पर-स्त्रियों में निरत न होना तथा उनसे अनुचित सम्भाषण आदि भी न करना, तृष्णा के स्रोत को रोकना, गुरुजनों में विनय रखना तथा सब प्राणियों पर अनुकम्पा (दया) करना सामान्यतया यही कल्याण का मार्ग है; तथा इस आचरण के विधान का किसी शास्त्र में प्रतिषेध नहीं।

भर्तृहरि जी ने अपने इस भावपूर्ण श्लोक में सबसे प्रथम धर्म प्राणी-हिंसा से निवृत्त होना लिखा है। महाभारत में भी कहा है—

अहिंसा लक्षणो धर्मो ह्यधर्मः प्राणिनां बधः,
तस्मात् धर्मार्थिभिर्लोकैः कर्तव्या प्राणिनां दया।

अर्थात्—दया ही धर्म है और प्राणियों का बध अधर्म है। इस कारण धर्मार्थी लोगों को सब प्राणियों पर दया करनी चाहिये।

हमें यहां एक और बात पर भी विचार करना है कि हिन्दू मुसलमान, क्रिश्चियन तथा दूसरे धर्म वाले संसार के प्रत्येक पदार्थ को अपने परमात्मा का बनाया हुआ मानते हैं प्रत्येक स्थान तथा जान में ईश्वर का अस्तित्व माना जाता है, और प्रत्येक प्राणी में परमात्मा या खुदा का अंश स्वीकार करते हैं। यदि यह सच है तो किसी भी जीव की हत्या न करनी चाहिये। क्योंकि किसी भी जीव का घात करना ईश्वर के

अंश का घात करना है। श्री कृष्ण भगवान अर्जुन से कहते है—

ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति

—गीता अध्याय १८ श्लोक ६१

हे अर्जुन ! ईश्वर सब प्राणियों के हृदय में रहता है।

'सर्वं विश्वात्मकं विष्णुम्' —नारद पुराण प्रथम खण्ड अ० ३२

अर्थात्—विष्णु भगवान सम्पूर्ण विश्व में व्याप्त हैं।

'आसीनः सर्वभूतेषु' —वाराह पुराण अध्याय ६४

सर्वभूतमयो विष्णु परिपूर्णः सनातनः श्लो० ३३ अ० १६

अर्थात—भगवान सर्व प्राणियों में विराजमान है।

अस्थिनि वसतिरुद्रस्तथा मांसे जनार्दनः।

शुक्रे वसति ब्रह्मा तस्मान्मांसं न भक्षयेत् ॥

—विष्णु पुराण

अर्थात्—हड्डियों में शिव, और मांस में विष्णु तथा वीर्य में ब्रह्मा का निवास होता है अतएव मांस कदापि भक्षण न करे।

बीजं मां सर्वभूतानां विद्धि पार्थ सनातनम्।

—गीता अध्याय ७ श्लोक १०

अर्थात्—हे अर्जुन ! सब प्राणियों का मैं बीज हूं।

"ईश्वरः सर्व भूतस्थः" —याज्ञवल्क्य स्मृति श्लोक १७८

अर्थात्—ईश्वर सब प्राणियों में रहने वाला है।

मुसलमानों का भी ऐसा ही कहना है—

आदम को खुदा मत कहो, आदम खुदा नहीं।
लेकिन खुदा के नूर से, आदम जुदा नही ॥

ऐसे ही ईसामसीह ने अपनी बाईबिल में कहा है—

In him we live and move and have our being.

अर्थात्—हम प्रभु के अन्दर ही जीते हैं क्रियायें करते है और जीवन व्यतीत करते हैं। और देखिये—

Christ later on said "Know ye not that ye are the temple of God that spirit of God resideth in ye"

अर्थात्—हजरत यसू ने फरमाया—क्या तुम नही जानते कि तुम परमात्मा के मन्दिर हो, और खुद भगवदात्मा (खुदाकी रूह) तुम्हारे अन्दर निवास करती है।

भगवान कृष्ण गीता में स्पष्ट उपदेश देते हैं—

यो मां पश्यति सर्वत्र सर्वं च मयि पश्यति।
तस्याहं न प्रणश्यामि स च मे न प्रणश्यति ॥
सर्वभूतस्थितं यो मां भजत्येकत्वमास्थितः।
सर्वथा वर्तमानोऽपि स योगी मयि वर्तते ॥
आत्मौपम्येन सर्वत्र समं पश्यति योऽर्जुन !
सुखं वा यदि वा दुःखं स योगी परमो मतः ॥

—गीता अध्याय ६, श्लोक ३०-३१-३२

अर्थात हे अर्जुन! जो मुझे सर्वत्र देखता है और प्रत्येक वस्तु एवं प्राणी आदि को मेरे अन्दर देखता है उसे मैं कभी छोड़ने वाला, नाश करने वाला नहीं और न वह मेरे से नाश किया जायेगा। सर्व प्राणियों में बसने वाले मुझ को जो एक स्थान रह कर भजता है वह योगी वहां रहता हुआ भी मेरे में वास करता है। हे अर्जुन! जो सर्वत्र आत्मा की समानता पहचान कर सुख तथा दुःख में समता रखता है, वह परम योगी है।

विष्णु पुराण में इस बातकी पुष्टि करते हुये हिंसा न करने का स्पष्ट उपदेश दिया है। उसमे लिखा है—

यो मां सर्वगतं ज्ञात्वा न च हिंसेत् कदाचन ॥
तस्याहं न प्रणश्यामि सच मे न प्रणश्यति ॥

अर्थात जो मुझे सब जगह जान कर कभी हिंसा न करेगा उसे मैं नष्ट न करूंगा और वह मेरे से जुदा न होगा, अर्थात मेरे में ही रहेगा।

किसी कवि ने क्या ही सुन्दर कहा है—

जीव मत मारो बापुरा सबका एक ही प्रान।
जीव हत्या नहीं छूटती करोड़ गऊ करे दान ॥
दया दिलमें राखिये तूं क्यों निर्दय होय।
सब ही जीव हैं साईं के कीड़ी कुञ्जर सोय ॥

पूर्वोक्त प्रमाणों से यही तात्पर्य निकलता है कि किसी

भी जीवकी हत्या करना परमात्मा के अंशका नाश करना है, खुदाकी बनाई हुई वस्तु को मिसमार करना है, तथा भगवान के निवासस्थान का विध्वंस करना है। अतः जीव हिंसा करना छोड़ दो, परमात्मा की सन्तान की रक्षा करो, न कि मारो। यदि यह मानते हो कि ईश्वर सर्व व्यापक है, खुदा सब जगह हाजिर नाजिर है तो भूल कर भी किसी जीवकी हिंसा न करो और न ही उसके निमित्त भूत बनो, इस प्रकार भगवान की कृपा और प्रसन्नता तुम पर रहेगी। और तभी आप सच्चे धर्म को मानने वाले हो सकोगे।

वेद कुतेब कहो मत झूठे, झूठा जो न विचारे।
सबमें एक ही खुदा कहत है तो क्यों मुर्गी मारे॥

—महात्मा कबीर।

इस तरह कोई भी धर्म प्राणी-हिंसा की आज्ञा नहीं देता।

दया ही स्वर्ग की सीढ़ी है। —महाराणा प्रताप।

दूसरों को दुख देने की अपेक्षा स्वयं दुःख सहना अच्छा है। —प्लेटो।

कुदरत का अटल नियम है कि सुख देने से सुख मिलता है, और दुख देने से दुःख मिलता है। 'अहिंसापरमोधर्मः' यह उत्तम धर्मकी आदर्श शिक्षा है।

मांसाहार और हिन्दू*

'मा हिंस्यात सर्वभूतानि,— छान्दोग्य उपनिषद्
अर्थात किसी भी जीवकी हिंसा न करो।

हिन्दू धर्म के प्रामाणिक ग्रन्थों का अध्ययन करने से, उनकी मान्यताओं एवं रीति रिवाजों पर दृष्टिपात करने से

* 'हिन्दू' शब्दमें– सनातन धर्म, आर्य समाज, देव समाज, सिख, जैन और बौद्ध आदि भी अन्तर्गत हैं; परन्तु इस प्रकरण में प्राय: सनातनधर्म के ही प्रमाण दिये गये है।

वेदोपनिषद् आदि के कुछ प्रमाण ऐसे भी इस प्रकरण में दिये गये हैं, जो आर्यसमाज को भी सनातन धर्म की तरह समान रूपसे मान्य हैं।

बौद्ध, सिख और आर्यसमाज के ग्रंथ-प्रमाण अलग २ प्रकरणों में दिये हैं।

जैन धर्म के ग्रंथ–प्रमाणों को विस्तार भय से इसलिये संगृहीत नही किया गया, क्योंकि जैनियों में मांसाहार बिलकुल प्रचलित नहीं। उनको पद पद पर सूक्ष्म अहिंसा का उपदेश दिया है। अपने प्राण अर्पण करदें, हजारों कष्टों को सहन करलें, परन्तु दूसरों का मन, वचन काय से अहित न करे। यही उनका अन्तिम ध्येय है। —लेखक।

हमें यह स्फटिक की तरह स्पष्ट मालूम हो जायगा कि हिन्दूधर्म में पद पद पर मांसाहार का निषेध ही नहीं, बल्कि किसी जीव को सताना भी वर्जित कहा है एवं सब जीवों पर दया करने का उपदेश दिया है।

पहले प्रकरण में यह कहा जा चुका है कि हिन्दू धर्म का कोई अवतार मांस-भक्षी न था, और न ही पूजन सामग्री मे कहीं मांस का विधान है। भिन्न भिन्न ऋषि मुनियों ने अपने पवित्र ग्रन्थों में जगह जगह दया धर्म को मुख्य रखते हुए मांसाहार त्याग और जीवों को न मारने का उपदेश दिया है। हिन्दुओं के साधारण आचार विचार भी हमें यही विश्वास दिलाते हैं। गाय को माता के समान समझना, उनके लिये जगह जगह गौशालायें खोलना, बीमार जानवरों और पक्षियों के लिये हॉस्पिटल और पिंजरापोल खोलना हिन्दुओं की स्वाभाविक दयावृत्ति के द्योतक हैं।

श्री कृष्ण भगवान अर्जुन को दया का उपदेश देते हुए कहते हैं—

सर्वे वेदा न तत्कुयुः सर्वे यज्ञाश्च भारत !
सर्वे तीर्थाभिषेकाश्च यत्कुर्यात् प्राणिनां दया ॥

—महाभारत, शान्ति पर्व प्रथम पाद

हे अर्जुन ! जो शुभ फल प्राणियों पर दया करने से होता है वह फल न तो सकल वेदों से हो सकता है न समस्त यज्ञों से एवं तीर्थ-वन्दन वा स्नान से भी उतना फल नहीं मिलता जो प्राणियों पर दया करने से होता है।

दयाधर्म का उपदेश देते हुए महाभारत में कहा है—

अहिंसालक्षणो धर्मो ह्यधर्मः प्राणिनां वधः ।
तस्माद् धर्मार्थिभिर्लोकैः कर्तव्या प्राणिनां दया ॥

अर्थात्—जहां अहिंसा-दया है वहां धर्म है, प्राणियों का बध करना निश्चय ही अधर्म है, इस कारण धार्मिक पुरुषों को सर्वदा दया ही करनी चाहिये ।

गोस्वामी तुलसीदास जी का यह दोहा जगत्प्रसिद्ध है—

दया धर्म का मूल है, पाप मूल अभिमान ।
'तुलसी' दया न छोड़िये जब लग घट में प्रान ॥

पुराणों का निम्न श्लोक दया-धर्म का कितना स्पष्ट उपदेश देता है—

यथा मे न प्रियो मृत्युः सर्वेषां प्राणिनां तथा ।
तस्मान् मृत्युभयं नित्यं ज्ञातव्यं प्राणिनो बुधैः ॥

अर्थात्—जैसे मुझे मृत्यु प्यारी नहीं, वैसे ही सभी प्राणियों को प्यारी नहीं इस लिये बुद्धिमानों को जानना चाहिये कि मृत्यु से हमेशा सभी डरते हैं ।

मार्कण्डेय ऋषि ने भी कहा है—

यथा मम प्रियाः प्राणास्तथान्यस्यापि देहिनः ।
इति मत्वा न कर्तव्यो घोरः प्राणिवधो बुधैः ॥

—मार्कण्डेय पुराण

अर्थात्—जैसे मुझे अपने प्राण प्यारे हैं, वैसे ही उस देहधारी प्राणी को भी प्यारे है, यह समझ कर सहृदय जनों

को प्राण नाश करने का घोर पापकार्य न करना चाहिये ।

आत्मवत्सर्वभूतानि यः पश्यति स पश्यति ।

—चाणक्य नीति अ० १२ श्लो० १४

अर्थात्—सब प्राणियों को अपनी तरह ही देखना चाहिये । जैसे हम दुःख और मृत्यु नहीं चाहते वैसे ही हम दूसरों को दुःख न दें और न मारें ।

सर्वे तनुभृतस्तुल्या यदि बुद्ध्या विचार्यते ।
इदं निश्चित्य केनापि न हिंस्यः कोऽपि कुत्रचित् ॥

—रुद्र पुराण

अर्थात्—यदि बुद्धि से विचारा जाय तो सभी जीव एक समान हैं ऐसा विचार कर कहीं पर भी किसी जीव को न मारे ।

अमेध्यमध्ये कीटस्य सुरेन्द्रस्य सुरालये ।
समाना जीविताऽकांक्षा तुल्यं मृत्युभयं द्वयोः ॥

—महाभारत

अर्थात्—गन्दे सड़े पदार्थों में कीड़े की और स्वर्ग में देवेन्द्र की जीने की इच्छा बराबर ही है और दोनों को ही मृत्यु से समान रूप से भय होता है । अतः किसी प्राणीका जीवन न ले ।

आत्मौपम्येन सर्वत्र समं पश्यति योऽर्जुन !
सुखं वा यदि वा दुःखं स योगी परमो मतः ॥

—गीता अ० ६ श्लो० ३२

जो महात्मा सबमें अपने समान ही सुख और दुःख

दोनों मानता है वही परम योगी माना जाता है।

न हिंस्यात् सर्वभूतानि नानृतं वा वदेत् क्वचित्।
नाहितं नाप्रियं ब्रूयात् न स्तेनः स्यात् कथञ्चन॥

—कूर्मपुराण अध्याय १६ पृष्ठ ५५३

अर्थात्—किसी भी प्राणी की हिंसा न करे, कभी झूठ न बोले, और न किसी को अप्रिय और अहित-कर वचन कहे और न ही किसी प्रकार की चोरी करे।

जरायुजाण्डजोद्भिज्जस्वेदजानि कदाचन।
ये न हिंसन्ति भूतानि शुद्धात्मानो दयापराः॥

—वराह पुराण

अर्थात—जरायुज, अण्डज, उद्भिज और स्वेदज जन्तुओं में से जो मनुष्य किसी भी जन्तु की हिंसा नहीं करते, वे ही शुद्धात्मा और दयापरायण हैं।

मनु महाराज ने जोरदार शब्दों में मांस भक्षण का निषेध किया है—

नाकृत्वा प्राणिनां हिंसां मांसमुत्पद्यते क्वचित्।
न च प्राणिबधः स्वर्ग्यस्तस्मान्मांसं विवर्जयेत॥
समुत्पत्तिं च मांसस्य बधबन्धौ च देहिनाम्।
प्रसमीक्ष्य निवर्तेत सर्वमांसस्य भक्षणात॥—मनुस्मृति

अर्थात्—प्राणियोंकी हिंसा किये विना, मांसकी उत्पत्ति नहीं हो सकती, और न ही प्राणियों का बध स्वर्ग देने वाला है, इसलिये मांस भक्षण त्याग दे।

मांसकी उत्पत्ति (मल-मूत्रादि से) देख कर, और प्राणियों

के बध बन्धन रूपी क्रूर कर्म को भली भांति जान कर सब प्रकार के मांसभक्षण से हट जाना चाहिये।

वेदों में लिखा है*— 'मांसं तदेव नाश्नीयात'- अथर्ववेद ६-३६-६

अर्थात मांस कभी न खावे।

यावज्जीवं च यो मांसं विषवत् परिवर्जयेत्।
वशिष्ठो भगवानाह स्वर्गलोकस्य संस्थितिः॥

अर्थात्—वशिष्ट भगवानने कहा है, कि जो जीवन पर्यन्त मांस-भक्षण छोड़ देता है उसे स्वर्ग की प्राप्ति होती है।

यावन्ति पशुरोमाणि पशुगात्रेषु भारत!
तावद्वर्षसहस्राणि पच्यते नरके नरः॥ —महाभारत

अर्थात्—हे भारत! पशुके शरीर पर जितने रोम होते हैं उतने हजार वर्ष तक पशुघातक मनुष्य नरकमें दुःख भोगता है।

किं जापहोमनियमैस्तीर्थस्नानैः शुभाशुभैः।
यदि खादति मांसानि सर्वमेतन्निरर्थकम्॥

अर्थात—जप, होम, अच्छे नियम और तीर्थस्नान आदि शुभ कार्यों के करने का क्या लाभ है? यदि कोई मांस खाता है तो यह सब निरर्थक ही हैं।

यस्य चित्तं द्रवीभूतं कृपया सर्वजन्तुषु।
तस्य ज्ञानेन मोक्षेण किं जटाभस्मलेपनैः॥
—चाणक्यनीति अ० १५ श्लो० १

---

* वेदों के अन्य प्रमाण 'मांसाहार और आर्यसमाज' प्रकरण में देखें।

अर्थात्—जिसका चित्त सब प्राणियों पर दया से पिघल जाता है, उसको ज्ञानसे, मोक्षसे, जटासे, और भस्मलेपसे क्या ?

तिलसर्षपमात्रं तु यो मांसं भक्षते नरः।
स याति नरकं घोरं यावच्चन्द्रदिवाकरौ ॥

अर्थात् जो मनुष्य तिल और सरसों जितना भी मांस खाता है वह घोर नरक में जाता है, जब तक कि चन्द्र और सूर्य विद्यमान हैं।

तिल भर मछली खायके कोटि गऊ दे दान।
काशी करवट ले मरे तो भी नरक निदान ॥

दया से बढ़ कर और कुछ नहीं

कपिलानां सहस्राणि यो द्विजेभ्यः प्रयच्छति।
एकस्य जीवितं दद्यात् स च तुल्यं युधिष्ठिर ! ॥

—महाभारत शान्ति पर्व

अर्थात्—एक ओर तो कई ब्राह्मणों को हजारों गौवें दान देता है और दूसरी ओर कोई एक प्राणी को जीवन-दान देता है, हे युधिष्ठिर ! वह बराबर है।

एतैस्तीर्थमहापुण्यं यः कुर्यादभिषेचनम्।
अभक्षणं च मांसस्य न च तुल्यं युधिष्ठिर ॥ —विष्णु पुराण

विष्णुपुराण में अनेक तीर्थों के नाम लिखने के बाद वह कहते हैं कि हे युधिष्ठिर! इन अनेक तीर्थों के स्नान का पुण्य मांस न खाने से बढ़ कर नहीं।

एकतः क्रतवः सर्वे सर्वस्ववरदक्षिणाः ।

एकतो भयभीतस्य प्राणिनः प्राणरक्षणम ॥— सौर पुराण

अर्थात्—एक ओर ऐसे यज्ञ कि जिनमें सर्वस्व अर्पण कर दिया जाय और एक ओर भयभीत प्राणी की रक्षा की जाय यह दोनों समान हैं।

वर्षे वर्षेऽश्वमेधेन यो यजेत शतं समाः ।

मांसानि न च खादेत तयो. पुण्यफलं समम् ॥

—मनुस्मृति अध्याय ५ श्लो० ५३

अर्थात्—एक व्यक्ति हर साल अश्वमेध यज्ञ करे, और एक व्यक्ति मांस न खाये उनका पुण्य फल बराबर है।

एकतः काञ्चनो मेरुर्बहुरत्ना वसुन्धरा ॥

एकतो भयभीतस्य प्राणिनः प्राणरक्षणम् ॥ —महाभारत

अर्थात्—एक ओर तो स्वर्ण का मेरु पर्वत एवं विविध रत्नों से परिपूर्ण वसुन्धरा और दूसरी ओर भयभीत प्राणी की रक्षा यह दोनों समान हैं। भागवत में भी कहा है—

सर्वे वेदाश्च यज्ञाश्च तपोदानानि चानघ ।

जीवाभयप्रदानस्य न कुर्वीरन् कलामपि ॥

—भागवत स्कन्ध ३ अ० ७ श्लो० १३

अर्थात्—हे अकलंक! सर्व वेद, यज्ञ, तप और दान

का फल एकत्रित करो तब भी जीवों को अभय दान देने से जो फल होता है, वे उसका एक अंश मात्र भी फल नहीं रखते।

जीवितस्य प्रदानाद्धि नान्यदानं विशिष्यते।
तस्मात्सर्वप्रयत्नेन देयं प्राणाभिरक्षणम् ॥
अहिंसा सर्वदैवत्यं पवित्रं सर्वपावनम् ।
—ब्रह्मवैवर्त पुराण

जीवन दान देने से बढ़ कर दूसरा कोई दान नहीं, अतः सब प्रयत्नों से प्राणियों की रक्षा करनी चाहिये। अहिंसा सब देवताओं की प्रतिमूर्ति और सबको पवित्र करने वाली है।

ये त्वनेवंविदोऽसन्तः स्तब्धाः सदभिमानिनः ।
पशून् द्रुह्यन्ति विस्रब्धाः प्रेत्य खादन्ति ते च तान् ॥
—श्रीमद् भागवत १४-११-५

अर्थात—जो निश्चल भाव को प्राप्त हो अहिंसा धर्म को न जान कर अपने को अच्छा मानने वाले जो असाधु पुरुष पशुओं से द्रोह करते हैं वे उन पशुओं से दूसरे जन्म में खाये जाते हैं।

तस्मान्न कस्यचिद् द्रोहमाचरेत्स तथाविधः।
आत्मनः क्षेममन्विच्छन् द्रोग्धुर्वै परतो भयं ॥
—श्रीमद् भागवत

अर्थात्—इस लिये अपना कल्याण चाहने वाला किसी से द्रोह न करे, ताकि विपक्षी को भय न हो।

महाभारत अनुशासन पर्व में भीष्म पितामह युधिष्ठिर से कहते हैं—

गर्भवासेषु पच्यन्ते क्षाराम्लकटुकै रसैः ।
मूत्रस्वेदपुरीषाणां परुषैर्भृशदारुणैः ॥२६॥
जाताश्चाप्यवशास्तत्र च्छिद्यमानाः पुनः पुनः ।
पाच्यमानाश्च दृश्यन्ते विवशा मांसगृद्धिनः ॥३०॥
कुम्भीपाके च पच्यन्ते तां तां योनिमुपागताः ।
आक्रम्य मार्यमाणाश्च भ्राम्यन्ते वै पुनः पुनः ॥३१॥

अर्थात्—मांस-भक्षी पुरुष गर्भवास के समय क्षार, आम्ल और कटु रसों एवं मल मूत्र से परिताप को प्राप्त होते हैं, वे अनेक योनियों में उत्पन्न होते हैं, और वे महादुःख-दायी कुम्भीपाक मे पकाये जाते हैं; और यमदूत लोग आक्रमण करके बार बार उन्हें दुःखदायक स्थानों में ले जाते है ।

अल्पायुषो दरिद्राश्च परकर्मोपजीविनः ।
दुष्कुलेषु प्रजायंते ये नरा मांसभक्षकाः ॥ –विष्णु पुराण

अर्थात्—जो मनुष्य मांस खाते हैं, वे थोड़ी आयु वाले, दरिद्री, दूसरों के आश्रय पर जीने वाले और नीच कुल में जन्म लेते हैं ।

मांसभक्षैः सुरापानैर्मूर्खैश्चाक्षरवर्जितैः ।
पशुभिः पुरुषाकारैर्भाराक्रान्तास्ति मेदिनी ॥—चाणक्यनीति

मास के भक्षण और मदिरापान करने वाले निरक्षर और मूर्ख पुरुषाकार पशुओं के भार से पृथ्वी पीड़ित रहती है ।

महाभारत अनुशासन पर्व के अध्याय ११६ में मांस के सम्बन्ध में युधिष्ठिर और भीष्म पितामह का वार्तालाप पढ़ने

योग्य है। उस वार्तालाप के केवल दो श्लोक ही पाठकों को भेंट करते हैं विस्तार से उसमें देखें।

इमे वै मानवा लोके नृशंसा मांसगृद्धिनः ।
विसृज्य विविधान् भक्ष्यान् महारक्षोगणा इव ॥

अर्थात्—ये मनुष्य लोग जो नाना प्रकार के भक्ष्योंको छोड़ कर मांस लोलुप हैं वे प्रत्यक्ष राक्षस की तरह दिखाई देते हैं।

स्वमांसं परमांसेन यो वर्द्धयितुमिच्छति ।
नास्ति क्षुद्रतरस्तस्मात् सनृशंसतरो नरः ॥

अर्थात्—जो अपने मांस को दूसरों के मांस से बढ़ाना चाहता है, उस निर्दय से बढ़ कर क्षुद्र व्यक्ति इस संसार में कोई नहीं।

वाराह पुराण में वराह जी ने वसुन्धरा से अपने बत्तीस अपराधियों में से मांसाहारी को अठारहवां अपराधी कहा है, उसमें स्पष्ट कहा है कि जो मांसाहार करके मेरी पूजा करता है वह मेरा १८ वां अपराधी है।

यस्तु मात्स्यानि-मांसानि भक्षयित्वा प्रपद्यते ।
अष्टादशापराधं च कल्पयामि वसुन्धरे ! ।

मनुस्मृति में कहा है कि जो अहिंसक जीवों को अपने सुख के लिये मारता है, वह जीता हुआ भी मरे हुए के समान है क्योंकि उसको कहीं सुख नहीं मिलता। जैसे—

योऽहिंसकानि भूतानि हिनस्त्यात्मसुखेच्छया ।
स जीवंश्च मृतश्चैव न क्वचित् सुखमेधते ॥
—मनुस्मृति अ० ५ श्लो० ४५

फलमूलाशनैर्मेध्यैर्मुन्यन्नानां च भोजनैः ।
न तत्फलमवाप्नोति यन्मांसपरिवर्जनात् ॥
—मनुस्मृति अ० ५ श्लो० ५४

अर्थात्—जो 'पुण्य फल' पवित्र फलमूलादि के भोजन से भी नहीं मिलता वह केवल मांसाहर के त्याग करने से ही मिल जाता है।

धर्म शास्त्रमें अहिंसा और उसका महत्व

तत्राऽहिंसा सर्वदा सर्वथा सर्वभूतानामनभिद्रोहः। —व्यास भाष्य

अर्थात्—सदैव सभी प्राणियों के साथ सर्वथा द्रोह न करना ही अहिंसा है।

दुष्टं हिंसायाम्। तस्य समभिव्याहरतो दोषः। —वैशेषिक सूत्र

अर्थात—हिंसा बुरी वस्तु है, इसका नाम लेने से भी दोष लगता है।

कर्मणा मनसा वाचा सर्वभूतेषु सर्वदा।
अक्लेशजननं प्रोक्तमहिंसात्वेन योगिभिः॥ –याज्ञवल्क्य संहिता

अर्थात—कर्म, मन और वचन से सब प्राणियों को क्लेश न पहुंचाना योगियों ने अहिंसा बताया है।

अहिंसा सत्यमस्तेयं ब्रह्मचर्यापरिग्रहौ।
भावशुद्धिर्हरेः भक्तिः संतोषः शौचमार्दवम्॥ —अत्रि स्मृति

अर्थात्—अहिंसा, सत्य, चोरी त्याग, ब्रह्मचर्य, परिग्रह न रखना, भाव शुद्धि, प्रभुभक्ति, सन्तोष, मृदुता आदि धर्म के लक्षण हैं।

अहिंसासत्यास्तेयब्रह्मचर्यापरिग्रहा यमाः ॥

—योगसाधन पाद सूत्र

अर्थात्—अहिंसा, सत्य, चोरी का परित्याग, ब्रह्मचर्य और परिग्रह न रखना ये यम हैं। यहां भी अहिंसा को सर्व प्रथम स्थान मिला है।

अहिंसा सत्यमस्तेयं ब्रह्मचर्यापरिग्रहौ।
यमाः संक्षेपतः प्रोक्ता नियमाञ्छृणुपुत्रक! —ब्रह्मपुराण

अर्थात्—अहिंसा, सत्य-भाषण, चोरी-त्याग, ब्रह्मचर्य, किसी वस्तु का संग्रह न करना ये संक्षेप से यम कहे हैं अब नियमों को सुनो।

हिंसास्तेयान्यथाकामं पैशुन्यं परुषानृते।
सम्भिन्नालापव्यापादमभिध्यादृग्विपर्ययम् ॥

पापं कर्मेति दशधा कायवाङ्मानसैस्त्यजेत्।
अवृत्तिव्याधिशोकार्त्ता ननु वर्तेत शक्तितः ॥

वाग्भट्ट सूत्रस्थान अ० २ श्लो० २१-२२।

अर्थात् हिंसा, चोरी, आदि यह दस पाप हैं। इनको मन वचन और कर्म से छोड़ें एवं बेरोजगार, व्याधि और शोक से दु:खी की यथाशक्य सहायता करें ॥

सत्यं तीर्थं क्षमा तीर्थं तीर्थमिन्द्रियनिग्रहः।

सर्वभूतदया तीर्थं सर्वमार्जवमेव च ॥ —अगस्त मुनि

सत्य, क्षमा, इन्द्रियनिग्रह और सब प्राणियों पर दया करना एवं सरलता यह सब तीर्थ ही हैं।

अहिंसा परमो धर्मः पापमात्मप्रपीडनम् —शिवपुराण

अर्थात्–अहिंसा परम धर्म है, और दूसरोंको पीड़ा पहुंचाना पाप है।

अहिंसा परमो धर्मोह्यहिंसा परमं सुखम्।—गरुड़ पुराण अ० २३

अर्थात्—अहिंसा ही सर्वोत्तम धर्म और परम सुख है। अहिंसा का गौरव और उसका सुन्दर परिणाम क्या है देखिये—

अहिंसाप्रतिष्ठायां तत्संनिधौ वैरत्यागः।

—पातंजल योगदर्शन साधन पाद सूत्र ३५

अर्थात्—जहां सच्ची अहिंसा है वहां दुश्मन भी अपना वैर भूल जाते हैं।

अहिंसा सत्यमस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः।

दानं दमो दया क्षान्तिः सर्वेषां धर्मसाधनम् ॥

— याज्ञवल्क्य स्मृति आचाराध्याय गृहस्थधर्म प्रकरण श्लो० १२२

अर्थात्—अहिंसा–प्राणियों को पीड़ा न पहुंचाना सच बोलना, दया पालना आदि यम नियम धर्म के साधन है।

इसी याज्ञवल्क्य स्मृति के आचाराध्याय श्लोक ३३ में मांस और प्राणीहिंसा छोड़ने का स्पष्ट उपदेश है। देखिये—

मधुमांसाञ्जनोच्छिष्टशुक्तस्त्री प्राणिहिंसनम्।

भास्करालोकनाश्लीलपरिवादादि वर्जयेत् ॥

गीता में दैवीसंपत् को कहते हुए अहिंसा, दया, अभय-दान आदि का स्पष्ट समावेश किया है । देखिये—

अहिंसा सत्यमक्रोधस्त्यागः शान्तिरपैशुनम् ।
दयाभूतेष्वलोलुप्त्वं मार्दवं ह्रीरचापलम् ॥
श्रीमद् भगवद् गीता अध्याय १६ श्लो० २

अष्टादशपुराणेषु व्यासस्य वचनद्वयम् ।
परोपकारः पुण्याय पापाय परपीडनम् ॥

अर्थात् १८ पुराणों में व्यास जी के दो ही उपदेश हैं। पुण्य के लिये परोपकार करना चाहिये, दूसरों को दुःख देना पापका कारण है ।

महतामपि दानानां कालेन क्षीयते फलम् ।
भीताभयप्रदानस्य क्षय एव न विद्यते ॥ —महाभारत

किये गये बड़े २ दानों का फल समय २ पर क्षय होजाता है, परन्तु किसी डरे हुये प्राणी को अभयदान देने का पुण्य नष्ट नहीं होता ।

क्षीयन्ते सर्वदानानि यज्ञहोमबलिक्रियाः ।
न क्षीयते पात्रदानमभयं सर्वदेहिनाम् ॥
—चाणक्यनीति अ० १६ श्लो० १४

अर्थात सब दान, यज्ञ, होम, बलि ये किये हुए सब नष्ट होजाते हैं, लेकिन सत्पात्र को दान देना, सब जीवों को अभय-दान देना ये क्षीण नहीं होते ।

सर्वभूतसमः शान्तः स वै भागवतोत्तमः –विष्णुपुराण अ०११

अर्थात् जो शान्तहृदय व्यक्ति सब प्राणियों पर सम भाव रखता है वह भगवान का उत्तम भक्त है।

प्रत्येक प्राणी को अपने प्राण सबसे बढ़ कर प्यारे हैं यदि कोई मरते हुये को करोड़ अशर्फी दे और कोई उसे जीवन दान दे तो वह करोड़ अशर्फियां छोड़ कर जीने की ही इच्छा करेगा। कहा है—

दीयते म्रियमाणस्य कोटिर्जीवित एव वा।
धनकोटिं परित्यज्य जीवो जीवितुमिच्छति॥

संसार मे सज्जन पुरुषों का नियम है कि यदि मुख मे घास लेकर शत्रु शरण में आये तो क्षमा कर दिया जाता है तो फिर सर्वदा तिनके खाने वाले जानवरोंको क्यों मारा जाता है? कहा है—

वैरिणोऽपि विमुच्यन्ते प्राणान्तैस्तृणभक्षणात्।
तृणाहारा सदैवेति हन्यन्ते पशवः कथम्॥

महापुरुषों का कहना है कि—

निर्गुणेष्वपि सत्वेषु दयां कुर्वन्ति साधवः।
नहि संहरते ज्योत्स्नां चन्द्रश्चांडालवेश्मनि॥

अर्थ—गुणों से रहित प्राण धारियों पर भी सत्पुरुष दया करते हैं जैसे चन्द्रमा चांडाल के घर से भी अपनी किरणें नहीं खींच लेता।

प्रत्येक प्राणी पर दया करते हुये कबीर जी कहते हैं—

कबीरा सोई पीर है जो जाने पर पीर।
जो पर पीर ना जानिये सो काफिर बेपीर॥

यज्ञ-श्राद्ध और धर्मार्थ हिंसा भी युक्त नहीं *

न भूतानामहिंसायां ज्यायान् धर्मोऽस्ति कश्चन ।

—महाभारत शान्तिपर्व मोक्षधर्माधिकार

प्राणियों की हिंसा करने से किञ्चित् भी धर्मफल नहीं होता। क्योंकि कहा है—

अन्यस्थाने कृतं पापं धर्मस्थाने विनश्यति ।
धर्मस्थाने कृतं पापं वज्रलेखो भविष्यति ॥

अर्थात—दूसरे स्थान पर किया हुआ पाप धर्म स्थान पर नष्ट होता है, यदि धर्मस्थान पर ही पाप किया जायेगा तो वह पाप वज्रलेख की तरह हो जायेगा, अर्थात् वह पाप नहीं मिट सकता।

---

* 'वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति' अथवा देवी देवताओं के आगे या यज्ञ में पशुओं का बलिदान करने का एवं श्राद्ध के लिये मारे गये जानवरों का हिंसाजन्य दोष नहीं लगता, ऐसा मानने वालों के लिये थोड़े से प्रमाण इस विभाग मे दिये गये हैं, इनके अतिरिक्त इस विषय में अनेक पर्याप्त प्रमाण और युक्तियां ऐसी विद्यमान हैं जिनसे हम निस्सन्देह यह कह सकते हैं कि धर्मके नाम पर की गई हिंसा का दोष अन्य हिंसा से कम नहीं, इस विषय में विस्तारपूर्वक युक्तियां व प्रमाण अलग पुस्तक के रूप में पाठकों की सेवा में अर्पण करने का विचार रखता हूं। —लेखक

'त्यजेद् धर्मं दया हीनम्' —चाणक्य नीति अ० ४ श्लो१६
दया रहित धर्म छोड़ दे ।

सुरां मत्स्यान् मधुमांसमासवं कृसरौदनम ।
धूर्तैः प्रवर्तितं ह्येतत् नैतद् वेदेषु कल्पितम् ॥

अर्थात—मदिरापान, मच्छली का भोजन, मधु-मांस का भक्षण एवं अपवित्र भोजन यह सब धूर्तों से ही कल्पित हुए हैं वेदोंमे इसका विधान नहीं ।

पार्वती जी शिव जी से कहती हैं—कि हे देव !

पशून् हत्वा तथा त्वम्बां योऽर्चयेन् मांसशोणितैः ।
तावत्तन नरके वासो यावच्चन्द्रदिवाकरौ ॥

जो पशुओं को मार कर मांस और रुधिर से हमारी तुम्हारी पूजा करते हैं, उनका तब तक नरक में वास होगा जब तक सूर्य चन्द्र विद्यमान हैं ।

मदर्थे शिव कुर्वन्ति तामसा जीवघातनम् ।
आकल्पकोटि नरके तेषां वासो न सशयः ॥
यज्ञे यज्ञपशुं हत्वा कुर्यात् शोणितकर्दमम् ।
स पचन्नरके घोरे यावद्रोमाणि तस्य वै ॥

—पद्म पुराण (शिवं प्रति दुर्गा)

हे शिव ! दुष्ट वृत्ति वाले तामम लोग मेरे नाम सेवा मेरे लिये पशुघात करते हैं, वे करोड़ों कल्प तक नरक में रहेंगे इसमें संशय नहीं जो यज्ञ में पशुओं को मार कर खून से कीचड़

करता है वह घोर नरक में उतनी बार दुःख पायेगा जितने पशु के शरीर में रोम हैं।

मुसलमान लोग यदि गौ माता की कुर्बानी करते हैं तो हमें असह्य दुःख होता है, परन्तु यह याद रखना चाहिये कि उसका कलंक भी हिन्दुओं के मस्तक पर लगाया जाता है, एक मुसलमान के इन शब्दों पर विचार करिये :—

"जब आप लोग अपने मन्दिर तक में पशु-हत्या करते हैं, तो हम भी करें इस में क्या दोष है? आप पशु बलि को धर्मविहित बतलाते हैं तो हमारे यहां भी गाय की कुर्बानी करना बतलाया है इस लिये आप लोग पशुहत्या बन्द नहीं कर सकते तो हम लोग भी क्यों करें?" मुसलमान

हिन्दुओं को गौ माता की रक्षा के लिये बलिप्रथा एवं मांसाहार का अन्त ही कर देना चाहिये। ज्यों मांसाहार बढ़ेगा त्यों गौओं के नाश में वृद्धि होगी।

प्राणियों का नाश करना तो धर्म ही नहीं है, पुराणों में कहा है—

प्राणिघातात्तु यो धर्ममीहते मूढ़मानसः।
स वाञ्छति सुधावृष्टिं कृष्णाऽहिमुखकोटरात्॥

जो मूर्ख मनुष्य प्राणियों का नाश करके धर्म की इच्छा करता है वह भयङ्कर काले सर्प के मुख से अमृत की वृष्टि चाहता है।

यदि प्राणिवधाद् धर्मः स्वर्गश्च खलु जायते ।
संसारमोचकानां तु कुतः स्वर्गोभिधास्यते ॥

अर्थात— यदि प्राणियों का नाश करना धर्म हो और उससे स्वर्ग मिलता हो, तो संसार को छोड़ देने वाले त्यागियों को कैसा कहां से स्वर्ग मिलेगा ।

धिक धिक ऐसो धर्म जो, हिंसा करत विधान ।
धिक धिक ऐसो स्वर्ग जो बधकर मिलत महान ॥
क मांसं क शिवे भक्तिः क मद्यं च शिवाचनम् ।
मद्यमांसानुरक्तानां दूरे तिष्ठति शङ्करः ॥

अर्थात् – कहां मांस का खाना, और कहां शिवजी की भक्ति, कहां मद्य पीना, और कहां शिवजी का पूजन करना, अर्थात् इनका मेल ही नहीं, मद्य और मांस में अनुरक्त प्राणियों से शङ्कर जी दूर ही रहते हैं ।

वृक्षांश्छित्वा पशून् हत्वा कृत्वा रुधिरकर्दमम् ।
यद्येवं गम्यते स्वर्गं नरकं केन गम्यते ॥

अर्थात वृक्षों को काट कर पशुओं को मार कर और रुधिर से भूमि पर कीचड़ उत्पन्न करके यदि कोई मनुष्य स्वर्गको जा सकता है तो फिर किन दुष्कर्मों के करने से मनुष्य नरक को जाता है ?

अधर्मो धर्मघाताय प्रारब्धः पशुभिस्त्वया ।
नायं धर्मोह्यधर्मोऽयं न हिंसाधर्म उच्यते ॥ —मत्स्य पुराण

अर्थात् धर्मका नाश करने के लिये तूने पशुघात का अधर्म किया है, हिंसा धर्म नहीं बल्कि अधर्म ही है।

हिंसा विहाराह्यलुब्धाः पशुभि स्वसुखेच्छया।
यजन्ते देवता यज्ञैः पितृभूतपतीन् खलाः॥ —भागवत

हिन्सा में कौतुक मानने वाले धूर्त लोग अपनी सुख कामना से पशुओं द्वारा यज्ञ करके देवता के स्थान पर यमराज और भूतेश्वरों की पूजा करते हैं।

यस्तु प्राणिबधं कृत्वा मांसेन तर्पयेत पितृन्।
सोऽविद्वान् चन्दनं दग्ध्वा कुर्यादङ्गारविक्रयम॥

—बृहत्पाराशर संहिता अ० ५

अर्थात् जो पुरुष प्राणी-बध करके मांस से पितरों की तृप्ति करना चाहता है, वह मूर्ख चन्दन को जला कर कोयलों को बेचना चाहता है।

श्रीमद् भागवत के चतुर्थ स्कन्धके अध्याय २५ में प्राचीन बर्हिष मुनिसे नारद जी कहते हैं—

भो भोः! प्रजापते राजन्! पशून्पश्य त्वयाध्वरे।
संज्ञापितान् जीवसङ्घान निर्घृणेन सहस्रशः॥७॥
एते त्वां संप्रतीक्षन्ते स्मरन्तो वैशसं तव।
संपरेतमयैः कूटैश्छिन्दन्त्युत्थितमन्यवः॥८॥

अर्थात्—हे राजन्! देख, जिन हजारों प्राणियों का तू ने यज्ञ में बध किया है, उन पशुओं की आत्मायें क्रुद्ध होकर

तेरे आने की प्रतीक्षा कर रही हैं, कि कब यह मर कर आये और कब हम इसको काट कर अपना बदला चुकायें।

'स यं पुरुषमालभन्त स किं पुरुषोऽभवद्यमजमालभन्त स शरभोऽभवत्तस्मादेतेषां पशूनां नाशितव्यमपक्रांतमेधा पशवः सर्वेषां वा एष पशूनां मेधौ यद् व्रीहियवौ —यजुर्वेद ब्राह्मण

अर्थात्—जिस पुरुष की यज्ञमें हिंसा की, क्या वह पुरुष हुआ? जिस गौ घोड़ा, बकरी, उष्ट्र आदि को मारा क्या वे, वे ही रहे? क्या बकरा कभी बलि होकर बन का मृग बन गया? अर्थात्—नहीं। अतएव इन पशुओं का बध नहीं करना चाहिये, ये बिचारे अबोध हैं, अतएव पशुओं के बध-स्थान पर धान तथा जौ से कार्य लेना चाहिये।

तस्य तेनानुभावेन मृगहिंसाऽत्मनस्तदा।
तपो महत् समुच्छिन्नं तस्माद् हिंसा न यज्ञिया॥

—महाभारत शान्तिपर्व मोक्षधर्माधिकार अ० २७३ श्लो० १८

अर्थात्—स्वर्ग की इच्छा से एक मुनि ने मृग की हिंसा की, तब उस मुनिका जन्मभर का किया गया तप नष्ट हो गया।

पाठको! तप करने वाले का तो तप ही नष्ट हुआ, परन्तु जिन्होंने कभी तप किया ही नहीं उनका क्या हाल होगा? यह स्वयं विचारें।

महाभारत के शान्ति पर्व में यज्ञ के लिये पशुबध का ज़ोरदार शब्दों में निषेध है—

नैषधर्म सतां देवा यत्र वध्येत वै पशुः।
इदं कृतयुगं श्रेष्ठं कथं वध्यते वै पशुः॥

अर्थात् यज्ञ में पशुका वध करना सत्पुरुषों का धर्म नहीं, यह सतयुग सब युगों से श्रेष्ठ है इसमें पशुबध करना कैसे उचित हो सकता है ?

ये चक्रुः क्रूरकर्माणः शास्त्रं हिंसोपदेशकम।
कृते यास्यन्तिनरके नास्तिकेभ्योपि नास्तिकाः॥

जो शास्त्र क्रूरकर्म हिंसा का उपदेश देते हैं उनको मानने वाले नास्तिकोंसे भी बढ़कर नास्तिक हैं और वे नरकमें जायेंगे।

ब्राह्मण भी शूद्र ?

विक्रेता मद्यमांसानां स विप्रः शूद्र उच्यते।

चाणक्यनीति अ० ११ श्लो० १४

अर्थात् मद्य मांस के बेचने वाला ब्राह्मण भी शूद्र है। सच्चा ब्राह्मण तो वह है जो अहिंसा-निरत हो, नित्य हवन करने वाला सन्तोषी ब्राह्मण हो। यमस्मृतिमें कहा है—

अहिंसानिरतो नित्यं जुह्वानो जातवेदसम्।
स्वदारनिरतो दाता स वै ब्राह्मण उच्यते॥

विष्णु पुराण मे कहा है—

आकाशगामिनो विप्राः पतिता मांस भक्षणात्।
विप्राणां पतनं दृष्ट्वा तस्मान्मांसं न भक्षयेत्॥
शुक्रशोणितसंभूतं यो मांसं खादते नरः।
जलेन कुरुते शौचं हसंते तत्र देवताः॥

अर्थात्— आकाश में भ्रमण करने वाले ब्राह्मण मांस-भक्षण करने से गिर गये, उन ब्राह्मणों का पतन देख कर मांस भक्षण न करे। वीर्य और रक्त से बनने वाले मांस को खाकर जब मनुष्य जल से शुद्धि करते हैं, तब उन पर देवता हंसते हैं।

विक्रयं मद्यमांसानामभक्षस्य च भक्षणम्।
अगम्यगामिताचौर्यं शूद्रैः स्यु पातहेतवः॥
प्राणदानं च यो दद्यात् सर्वेषामपि देहिनाम्।
स याति परमं स्थानं यत्र देवी चतुर्भुजः॥

—पाराशर यमस्मृति

अर्थात्—मद्य मांस विक्रय करना, अभक्ष वस्तुओं का भक्षण, अगम्य स्त्री सेवन और चोरी यह सब पाप के कारण हैं जो मनुष्य सभी प्राणियों को प्राणदान देता है, वह उस उत्कृष्ट स्थान को पाता है जहां भगवान स्वयं विराजमान हैं।

न हिंसा सदृशं पापं त्रैलोक्ये सचराचरे।
हिंसको नरकं गच्छेत् स्वर्गं गच्छेदहिंसकः॥

·· शिवपुराण युद्ध ख ५ अ० ५ श्लो० २०

अर्थात—इस चराचर संसार में हिंसा से बढ़ कर कुछ पाप नहीं, हिंसक मनुष्य नरक में और अहिंसक स्वर्ग में जाता है।

पाठक महोदय! उपरोक्त वेद—उपनिषद् स्मृति और पुराण आदि धर्म ग्रन्थों से भली भांति जान सके होंगे, कि इन में अहिंसा, जीवों की रक्षा, एवं मांसाहार त्याग के लिये हर

पहलू से जोर दिया है, धर्म के नाम पर या धर्म की आड़ में हिंसा करने वालों की आंखें इन प्रमाणों से खुलनी चाहियें। हमारा तो नम्रता पूर्वक यही निवेदन है कि प्रत्येक सनातनधर्मी अपने धर्मग्रन्थों की आज्ञाओं का यथार्थ विचार और मनन कर उस पर आचरण करे एवं सनातन धर्म का सच्चा अनुयायी बन कर दिखाये। रूढियों के चक्कर में, लोभ-लालच के चंगुल में और स्वादके पंजेमें फसे हुये जो जीवों की हत्या करते या कराते हैं एवं मांसाहार की पुष्टि करते हैं, उनसे सादर प्रार्थना है कि वे अवश्य इसपर विचार करें। सनातनधर्म के साधु महात्माओं, गुरु और उपदेशकों से तो यह आशा है, कि अपने अनुयायियों में मांसाहार का सर्वथा त्याग करा कर अपना कर्तव्य पालन करेंगे और अपने अनुयायियों को सच्चे और सीधे मार्ग पर लाकर उनका जीवन पवित्र करेंगे।

इस गुरुस्थान से आग्रह पूर्वक यह आज्ञा की जाती है कि धर्मके नाम पर जिस किसी राज्य अथवा जाति में पशुहिंसा अभी तक प्रचलित हो तो उसे कायदे से अथवा जातिसत्ता से राज्य तथा प्रजा में बन्द करादी जाय।

शारदापीठ
२७—६—१६१६ } —जगद्गुरु शंकराचार्य

मांसाहार और आर्य समाज *

मांस तदेवनाश्नीयात्—अथर्ववेद ६-३६-६।

आर्यधर्म अर्थात् श्रेष्ठ आचरण 'करने योग्य वैदिक धर्म, श्रेष्ठ धर्म मे मांसाहार का विधान हो ही नहीं सकता, वरन् सर्वत्र उसका निषेध ही उपलब्ध होगा। आर्यसमाज के प्रवर्तक स्वामी दयानन्द जी ने भी अपनी पुस्तकों में दयाधर्म का उपदेश दिया है और प्राणियों की रक्षा करना धर्म बतलाया है।

'सत्यार्थ प्रकाश' के प्रथम समुल्लास में ही स्वामी दयानन्द जी ने उपनिषद् का प्रमाण देकर कहा है कि 'हे सन्तानो! जो अनवद्य, अनिन्दनीय अर्थात् धर्मयुक्त कर्म हैं वे ही तुम को करने योग्य हैं, अधर्म युक्त नहीं।

'यान्यनवद्यानि कर्माणि तानि सेवितव्यानि नो इतराणि"

—तैत्तिरीयोपनिषद् प्रपाठक ७ अनु० ११

---

* जीवों की रक्षा करना ही धर्म है, यह मांसाहार और हिन्दू प्रकरण में वेदोपनिषद स्मृति आदि के प्रमाणो सहित विस्तार से बताया गया है। उन मान्य ग्रंथों को आर्यसमाज भी उसी श्रद्धा और भक्तिसे मानता है, जैसे कि सनातनधर्मी। आर्यसमाज के नाम पर भिन्न प्रकरण लिखने का उद्देश्य इनके विशेषमान्य ग्रंथों (सत्यार्थप्रकाशादि) के प्रमाण देना है, वेद आदि के जिन प्रमाणों को पहले प्रकरण में दिया जा चुका है, उनका यहां पिष्ट पेषण उचित नहीं। अतः विस्तार के लिये उस प्रकरण को देखने की कृपा करें।

तीसरे समुल्लास में उन्होंने लिखा है कि विद्वानों और विद्यार्थियों को चाहिये कि कल्याण के मार्ग के लिये अहिंसा का उपदेश करें। एवं अहिंसा-वैरत्याग, सत्य, चोरी का त्याग ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह इन पांच यमोंका सभी सदा सेवन करें।

अहिंसा के सिद्धांत की पुष्टि के साथ वे क्रिया में भी प्राणियों की रक्षा के लिये सचेत करते हैं—दूसरे और पांचवें समुल्लास में लिखा है—

'दृष्टिपूतं न्यसेत्पादं वस्त्रपूतं पिबेज्जलम्।'

अर्थात्—अच्छी तरह देखकर पैर रखे और वस्त्र से छान कर जल पिये। इस उपदेश का मुख्य तात्पर्य यही है कि किसी प्रकार जीवोंका नाश न हो, यही बात 'संस्कार विधि' पृ० १६५ पर लिखी है कि—चलते समय देख कर पांव रखे जिससे कीड़ा पतंगा कोई दब कर न मर जाय और सर्वदा कपड़े से छान कर पानी पिये।

इसी प्रकार भूमिका के पृष्ठ ३८ पर लिखा है कि कीड़े आदि को मरने वाले स्थान से हटा देना चाहिये नही तो पांव के नीचे दब कर या आग मे जल कर मर जायेंगे और तुम्हे पाप होगा।

स्वामी दयानन्द जी तीसरे और दसवें समुल्लास मे मांस के सम्बन्ध में अपनी मान्यता स्पष्ट करते हुए लिखते हैं—

वर्जयेन्मधुमांसञ्च...........प्राणिनां चैव हिंसनम्।

अर्थात्— प्राणियों की हिंसा, मधु और मांस का सर्वथा त्याग करें। चतुर्थ समुल्लास में वे लिखते हैं— सब

प्राणियों को पीड़ा न देकर धर्म का संचय करें ।

'धर्मं शनैः सञ्चिनुयाद्...... ..सर्वभूतान्यपीडयन् ।'

इसी तरह पाखण्डियों धूर्तों और नीचों के लक्षण में वे कहते हैं कि—हिंसा करने वाला प्राणियोंका घातक तथा अन्यसे वैर बुद्धि रखने वाला......धूर्त और नीच समझो ।" इसी प्रकार वैश्यके गुण कर्म बताते हुए उन्होंने सबसे पहिले 'पशूनां रक्षणं'–पशुओं की रक्षा करना कहा है ।

स्वामी दयानन्द जी ने 'गोकरुणानिधिः' पुस्तक में अपने विचारों को और भी विस्तार से समझाया है वे भूमिका में ही लिखते हैं कि— "शोक है उन पर जो स्वार्थी दयाहीन होकर जगत मे हानि करने के लिये वर्तमान हैं । पूजनीय जन वे है कि जो अपनी हानि होती हो तो भी सबके हितके करने में अपना तन, मन, धन लगाते हैं और तिरस्करणीय वे हैं जो अपने ही लाभमें सन्तुष्ट रहकर सबके सुखोंका नाश करते हैं । ऐसा सृष्टि में कौन मनुष्य होगा जो सुख और दुखको स्वयं न मानता हो क्या कोई भी मनुष्य है ? कि जिसके गले को काटे वा रक्षा करे वह दुःख और सुख का अनुभव न करे ? जब सब को लाभ और सुख ही में प्रसन्नता है तो बिना अपराध किसी प्राणी का प्राण वियोग करके अपना पोषण करना यह सत्पुरुषों के सामने निन्दित कर्म क्यों न हो ?"

ऐसे ही 'गोकरुणानिधि' में स्वामी दयानन्द जी मांसाहारियों से दुःखी हो कर लिखते हैं— "हे मांसाहारियो !

तुम लोग जब कुछ काल के पश्चात् पशु न मिलेंगे तब मनुष्यों का मांस भी छोड़ोगे वा नहीं ?

पशुओं पर दयार्द्र हो कर वे भगवान से अपनी पुकार करते हुए लिखते हैं—'हे परमेश्वर ! तू क्यों इन पशुओं पर दया नहीं करता ? क्या उन पर तेरी प्रीति नहीं है ? क्या इनके लिये तेरी न्याय सभा बन्द हो गई है ? क्यों उनकी पीड़ा छुड़ानेपर ध्यान नहीं देता ? और उनकी पुकार नहीं सुनता ? क्यों इन मांसाहारियों के आत्माओं में दया का प्रकाश कर निष्ठुरता, कठोरता, स्वार्थपरता और मूर्खता आदि दोषोंको दूर नही करता ? जिससे यह इन बुरे कर्मों से बचें ।

इसके अनन्तर हिंसक और रक्षक के विस्तृत संवाद में स्वामी दयानन्द जी ने मांसाहारियों की अनेक दलीलों का बड़ा ही सुन्दर उत्तर देकर मांसाहार त्याग और प्राणी रक्षा का उपदेश दिया है । विस्तार के लिये पाठक उसी पुस्तक का अध्ययन करें ।

स्वामी दयानन्द जी कहते हैं कि 'यजुर्वेद के प्रथम ही मन्त्रमें परमात्माकी आज्ञा है कि 'अघ्न्याः यजमानस्यपशून्पाहि' हे पुरुष ! तू इन पशुओं को कभी मत मार और यजमान अर्थात् सबको सुख देने वाले जनों के सम्बन्धी पशुओं की रक्षा कर·· '

सत्यार्थ प्रकाश में वे कहते हैं कि 'जो लोग मांसभक्षण तथा मद्यपान करते हैं उनके शरीर और वीर्यादि धातु भी दुर्गन्ध से दूषित होजाते हैं············गाय, भैंस, हाथी, घोड़े भेड़, बकरी आदि से भी बड़ा उपकार होता है । इन पशुओं के

मारने वालेको सब मनुष्यों की हत्या करने वाला जानिये।

वेदों में भी मांस खाना सर्वथा बुरा बताया है, इसमें सन्देह ही नहीं। अभक्ष पदार्थों का वर्णन करते हुये अथर्ववेद अध्याय ६ ऋचा ७०-१ में मांस सुरापान आदि अभक्ष बताये हैं।

'वह व्यक्ति जो पशु का मांस, घोड़ेका मांस और मानव शरीरों का भक्षण करते है, उनके सिर, मित्र ! फोड़ डालो।

—ऋग्वेद १०–८७–१६

हे अग्नि ! जल और मांस भक्षियों को अपने मुंहमें रख,

—ऋग्वेद १०। ८७। २

ये त्रिषप्ताः परियन्ति विश्वा रूपाणि बिभ्रतः।
वाचस्पतिर्बला तेषां तन्वो अद्य दधातु मे* ॥

अथर्ववेद ऋचा १

भावार्थ— महाकारुणिको जगदीश्वरो जीवान् बोधयति "सर्वैश्वर्यैककारणीभूतायै मत्प्रीतये विद्वद्भिस्सर्वजन्तवः सदा-रक्षणीयाः, न च तेषु केचन हिंसनीयाः।" इति।

अर्थात्— जल, स्थल और आकाश में अनेक रूपों के धारण करने वाले जो अनेक प्राणी इधर उधर भ्रमण करते हैं, उनके शरीर को बलवान पुरुष न सताये। बल्कि मुझे सन्तुष्ट करने के लिये उनकी रक्षा करें न कि मारें।

महान् कृपालु जगदीश्वर जीवों को बोध देते हैं कि मुझे सन्तुष्ट करने के लिये सब जीवों की सर्वदा रक्षा करनी चाहिये उनमें से किसी भी प्राणि का हिंसा न करो।

---

* जीवरक्षा दर्पण।

य आमं मांसमदन्ति पौरुषेयं च ये क्रविः।
गर्भान्खादन्ति केशवास्तानितो नाशयामसि ॥
अथर्ववेद १–७०–६

अर्थात्— जो कच्चे मांस को खाते हैं और जो हिंसक इस कार्य में सहायता देते हैं वे दूसरों की सन्तानों को खाते हैं उन्हें इस पाप के कारण हम अवश्य दण्ड देंगे।

यथा मांसं यथा सुरा यथाऽक्षा अधिदेवने।
यथा पुंसो वृषण्यतः स्त्रियां निहन्यते मन' ॥ —अथर्ववेद

अर्थात्—जिस प्रकार मद्यपान द्यूत क्रीड़ा और अनियमित स्त्री प्रसङ्ग से मानसिक शक्तियों का ह्रास होता है उसी प्रकार मांस भक्षण से भी।

असुर्या नाम ते लोका अन्धेन तमसावृताः।
तांस्ते प्रेत्यापि गच्छन्ति ये केचात्महनो जनाः ॥

यस्तु सर्वाणि भूतान्यात्मन्येवानुपश्यति।
सर्व भूतेषु चात्मानं ततो न विचिकित्सति ॥ —यजुर्वेद

अर्थात्—जो लोग जीव हिंसा करते है वे मर कर अन्धकारसे व्याप्त लोक में जाते है, और जो सब प्राणियों को अपनी तरह ही समझते हैं, उसके लिये परमात्मा के मार्ग मे कोई रुकावट नहीं।

मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे। —यजुर्वेद १८–३

मैं मित्र की दृष्टि से सब प्राणियों को देखूं।

'हस्तिन आलभते। श्रोत्रायभृङ्गा० -यजुर्वेद अ० २४,-२९

इस मंत्र में हाथी भ्रमरादि जीवों की रक्षा करना लिखा है।

'आरण्योऽजोनकुलः' यजुर्वेद अ० २४ मं० ३२

इस मन्त्र में जंगल में रहने वाले नेवला आदि जीवों की रक्षा करना कहा है।

'अन्यवायोऽर्द्धमासानामृश्योमयूरः' -यजुर्वेद अ० २४-३७

इस मंत्र में मोर आदि जीवों की रक्षा का विधान है।

'वर्षाहूर्ऋतुनामाखुः० कपोत उलूकः० -यजु० अ० २४-३८

इसमें मूसा, कबूतर और उल्लू आदि जीवों की रक्षा का वर्णन है।

'खड्गोवैश्वदेवः श्वा कृष्णाः कर्णोगर्दभस्तरक्षुस्ते रक्षसा· मिद्रायसूकर०। —यजु० अ० २४ मं० ४०।

इस वेद मंत्रमें गैंडा, कुत्ता, गधा, सूअर आदि जीवों की रक्षा का वर्णन आया है।

उक्त मन्त्रों से यह बात स्पष्ट है कि किसी भी जीवकी हत्या नहीं करनी चाहिये, यह वेद आज्ञा है।

गौहर बे बहा में मांसनिषेध के सम्बन्ध में निम्नलिखित वेद प्रमाण दिये हैं—

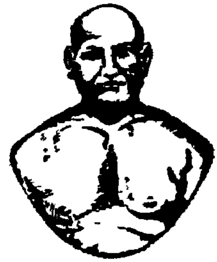
जो कच्चे मांस को खाते हैं और जो आदमी पकाये हुये मांस को खाते हैं, जो अण्डों को खाते हैं उन दुष्टों का मैं नाश करता हूं। —अथर्ववेद काण्ड ८ वर्ग ६ मन्त्र १३

जैसे मांस, मदिरा, जुआ. और मैथुन में मन नहीं लगता ऐसे ही हे स्त्री तेरा मन भी पर पुरुष में नही लगता।

—अथर्ववेद काण्ड ६ वर्ग मन्त्र ११

ऐसे ही अथर्ववेद काण्ड ४ वर्ग २१ मन्त्र २ और काण्ड २ वर्ग ३५ मन्त्र ५ और काण्ड ७ वर्ग २ मन्त्र १५ में स्पष्ट रूप से मोर, बकरी, कुंज भेड़, घोड़ा, गऊ आदि पशुओं के मारने का निषेध है।

'मनुष्य को उचित है कि बकरी, मोर आदि पशुओं को न मारे वरन उनकी रक्षा करे। —यजुर्वेद अ० १३ मन्त्र ५१



स्वामी दयानन्द जी 'सत्यार्थ प्रकाश' के अन्तिम समुल्लास स्वमन्तव्य प्रकाश में लिखते है—

"मनुष्य उसी को कहना जो मनन-शील होकर स्वात्मवत् अन्यों के सुख दुःख और हानि लाभ को समझे।"

इसी प्रकार स्वमन्तव्य प्रकाश के नियम २६ मे लिखा है— "मनुष्यको सब से यथायोग्य स्वात्मवत् सुख दुःख, हानि लाभ मे वर्तना श्रेष्ठ अन्यथा वर्तना बुरा समझता हूं।'

दुःख और आश्चर्य की बात यह है कि आज स्वामी दयानन्द जी के ही कई अनुयायी उनकी आज्ञाओं का उल्लङ्घन कर मांसाहार करने लगे हैं, जिह्वा के थोड़े से स्वाद के लिये प्राचीन मर्यादा, धर्ममान्यता एवं प्रवर्तक महर्षि की आज्ञाओं की अवहेलना करना शोचनीय ही है।

प्रत्येक आर्य महाशय से सादर प्रार्थना है कि वे अपने मान्य ग्रंथों, आर्य समाज के सिद्धान्तो और महर्षि दयानन्द जी के विचारों के अनुसार चल कर धर्म पर दृढ़ रहे और मांसाहार का सर्वथा त्याग करें

मांसाहार और बौद्ध

जैसा मै हूं वैसे ही वे हैं, और जैसे वे हैं वैसा ही मैं हूं। इस प्रकार अपने उदाहरण से (सर्वात्मैक्य) समझ कर न किसी को मारे और न मारने को प्रेरित करे।—धम्मपद [ब्राह्मणवग्गो]

भगवान बुद्धने अपना पवित्र जीवन अहिंसा प्रचार में ही व्यतीत किया। बौद्धधर्मकी बुनियाद अथवा सर्वस्व अहिंसा का नियम ही था और है। मन, वचन तथा काया से प्राणीमात्र की रक्षा करना बुद्ध भगवान का प्राभाविक उपदेश व आचरण था, जिसका प्रमाण बौद्धों के माननीय प्रामाणिक ग्रंथ दे रहे हैं। आज बुद्धधर्म के अनुयायी (बौद्धलोग) भी संसार के प्रवाह में वह कर शिथिल होरहे हैं। बुद्धधर्म को पालने वाले किसी प्राणी को नहीं मारते। परन्तु फिर भी वे मांस खाने लगे हैं। उनको बुद्धभगवान के अमृतमय वाक्यों का पान कराकर यह नम्र निवेदन करते हैं कि वे बुद्ध भगवान के सच्चे भक्त बनें और यह तभी हो सकता है जबकि वे मासभक्षण छोड़ दें। बुद्ध भगवान की जगह २ यही शिक्षा है कि प्राणिमात्र की रक्षा करो। बुद्ध के एक माननीय ग्रंथ मे लिखा है कि—

अपनी प्राण-रक्षा के लिये भी जान बूझ कर किसी प्राणी का वध न करे। —सुत्त निपात [नालकसुत्त]

पूर्वोक्त ग्रंथम ही चांडाल कौन? इसके उत्तर में लिखा है कि जो प्राणियों का वध करता है, प्राणियों के ऊपर जो दयाभाव नहीं रखता उसे चांडाल समझना चाहिये।

—सुत्तनिपात [वसलसुत्त]

अन्यत्र लिखा है—

जो प्राणियों की हिंसा करता है, वह आर्य नहीं। समस्त प्राणियों के साथ जो अहिंसा का वर्ताव करता है वही आर्य है। —धम्मपद [धमट्ठ वग्गो]

बुद्धों की शिक्षामें भी हिंसा का निषेध कहा है—

अनुपवादो अनुपघातो पातिमोक्खे च संवरो।
मतञ्जुता च भत्तस्मिं पंतञ्च सयनासनं।
अधिचित्ते च आयोगो एतं बुद्धान सासनं॥ धम्मपद [बुद्ध वग्गो]

अर्थात्—निन्दा न करना, हिंसा न करना, संयम रखना, मित भोजन करना, एकान्त में वास करना और चित में योग लगाना, यह बुद्धोंकी शिक्षा है।

मनुष्य यह विचार किया करता है कि मुझे जीने की इच्छा है, मरने की नहीं; सुखकी इच्छा है, दुःख की नहीं। यदि मैं मेरी ही तरह सुख की इच्छा करने वाले प्राणी को मार डालूं तो क्या यह बात उसे अच्छी लगेगी? इस लिये मनुष्य को प्राणी-घात से तो विरत ही हो जाना चाहिये और उसे दूसरों को हिंसा से विरत कराने का प्रयत्न करना चाहिये।

—बुद्ध लीला [गुजराती संस्करण]

हिंसा-जन्य पापों का फल बुरा होता है और वह अवश्य भोगना पड़ता है, इस सम्बन्ध में बुद्ध जी अपना ही उदाहरण उपस्थित करते हुए कहते हैं—

"इत एक नवतिकल्पे शक्त्या मे पुरुषो हतः ।
तेन कर्मविपाकेन पादे विद्धोस्मि भिक्षव: ॥"

अर्थात्— हे भिक्षुओ ! इस भव से एकानवे कल्प में मैं ने शक्ति से पुरुष को मारा था उससे उत्पन्न हुए पाप कर्म के विपाक से मैं कण्टक से पाद में विद्ध हुआ हूं।

"दूसरे को दुःख देकर जो अपना सुख चाहता है वह वैर के जाल में फंस कर उससे छूट नही सकता।"

धम्मपद [पकिएक वग्गो]

जहां मन हिंसा से मुड़ता है वहां दुःख अवश्य ही शान्त हो जाता है । —धम्म पद [ब्राह्मण वग्गो]

पहिले तीन ही रोग थे— इच्छा, क्षुधा, बुढ़ापा । पशु की हिंसा से बढ़ते २ वे अट्ठानवे होगये ।

बुद्धचर्या [ब्राह्मण धम्मिक सुत्त]

एक स्थान पर ब्राह्मण किसे कहें ? इसके उत्तर में कहा है—'चर-अचर सभी प्राणियों में प्रहार-विरत हो जो न मारता है न मारने की प्रेरणा करता है उसे मैं ब्राह्मण कहता हूं।'

—मज्झिम निकाय [वासेट्ठ सुत्तन्त]

बुद्ध भगवान के उपरोक्त उपदेशों से यह स्पष्ट है कि न किसी प्राणी को मारे, और न ही उसका कारण बने, इस अमूल्य उपदेश पर आचरण करते हुए मांसाहार का सर्वथा त्याग करना चाहिये ।

सर एडविन आर्नोल्ड ने भगवान बुद्ध के 'पंचशील तत्व' को कविता के रूप में लिखते हुए कहा है—

मांसाहार निषेध



पेड़ काटने पर बहते हुए दूध को [illegible] बुद्ध ने [illegible] पर [illegible] लगाया, भिक्षुओं ने [illegible] [illegible] [illegible] से कहा—यह मेरी तरह से जीता है—इसका [illegible] नहीं होने दूंगा। हां! इसके बदले में अपना शरीर भी देने को तैयार हूं।

"Kill not for pitys' sake and lest ye slay;
The meanest thing upon its upward way."

अर्थात्—दया के लिये किसी जीव को मत मारो, ऐसा न हो कि किसी तुच्छ जीव को मार डालो जो उन्नति की राहपर हो।

'पाणातिपातिस्स पुरिसपुग्गलस्स पाणातिपात वेरमणी होति परिनिब्बानाय। —मज्झिम निकाय [सल्लेखसुत्तं]।

अर्थात्—जो प्राणी हिंसा करता है उसका हिंसा से विरक्त होना निर्वाण के लिये है।

'पाणातिपातवेरमणी कुसलं,—मज्झिमनिकाय [सम्मादिट्ठि सुत्तं]

अर्थात—प्राणियों की हिंसासे विरक्त होना हितकारी है।

'पाणातिपातो······· नप्पसंसंति पण्डितानि,—दीग्घ निकाय

अर्थात्—प्राणियों के घात की पण्डित लोग प्रशंसा नहीं करते। बौद्ध उपासकों को मांस, मदिरा, विष, और सजीव प्राणी इन पांच प्रकारके व्यापार करने का ही निषेध है देखिये—

'पच इमा भिक्खवे वणिज्ज उपासकेन अकरणीया:। कतमे पंच: सत्थवणिज्जा, सत्तवणिज्जा, मंसवणिज्जा, मज्जवणिज्जा विसवणिज्जा। अंगुत्तर निकाय ५-१७७

'बुद्धचर्या' में लिखा है कि 'द्रव्य शेष को तृण रहित स्थान पर छोड़ दे या प्राणी रहित पानी में डालदे। इससे दया के भाव स्पष्ट झलकते हैं।

बौद्धों के 'लंकावतार सूत्र' में मांसभक्षणपरिवर्तो नाम का आठवां अध्याय है, जिस से यह पूर्णतया सिद्ध होता है कि बुद्ध के अनुयायी किसी भी गृहस्थ या साधु को मछली या अन्य किसी भी पशु का मांस नहीं लेना चाहिये। उसमें भगवान बुद्ध ने मांस ग्रहण न करने के अनेक कारण बताये हैं। उसमें से यहां 'जैन बौद्ध तत्व ज्ञान' के आधार पर कुछ कारण ही उद्धृत किये जाते है, विस्तार के लिये मूल पुस्तक का अवलोकन करने का कष्ट करें। स्वयं भगवान बुद्ध कहते हैं—

'यह मांस दुर्गन्धमय है, अपयश कारक है, म्लेच्छों द्वारा सेवित है, आर्य जनों के द्वारा वर्जनीय है। यह मांस वीर्य और रुधिर से उत्पन्न होता है इस लिये पवित्रता को चाहने वाले बौद्ध के लिये मांम अभक्ष्य है। आर्यजन ऋषियों के भाजन के समान भोजन करते हैं, मांस रुधिर का आहार नहीं करते।'

'बहुत से कीड़े जन्तु एवं कोढ़ आदि अनेक रोग मांसाहारी के होते हैं, पुत्र के मांस के समान (मांम) आहार को बताता हुआ, मै किस तरह म्लेन्छों से सेवित व आर्यों से निषेध योग्य अनेक दोषों को देने वाला, अनेक गुणों से रहित, ऋषि भोजन के अयोग्य मांम व रुधिर की आज्ञा दे सकता हूं?'

"मैं हे महामते! यह आज्ञा कर चुका हूं कि पूर्व ऋषि-प्रणीत भोजन चावल, जौ, गेहूं, मूंग, उरद, घी, तेल, दूध, शक्कर, खाण्ड, मिश्री आदि से उत्पन्न लेना योग्य है।"

"मांस को न कभी खाना चाहिये, न ही उसके लिये घात करना चाहिये।"

"जो प्राणी लोभ के लिये प्राणी को मारते हैं व मांस के लिये धन देते हैं दोनों ही पापी हैं वे रौरवादि नरकमें जायेंगे।"

"हे महामते! पूर्व काल में एक राजा सिंह सौदास हो गये हैं जिसको मांसाहार की अतिलोलुपता होगई थी मांस की तृष्णा से वह मनुष्यों का मांस खाने लगा, इस लिये उसके मित्र मन्त्री जाति बन्धु आदि ने उसे त्याग दिया, पहले ही नगर-वासियों ने अपने राज्य से निकाल दिया। उसने मांस के हेतु बहुत कष्ट पाया।"

"जो जन्तुओं को कष्ट देते हुए इस लोक में घूमते हैं उनका साधुपना नष्ट है, उनका ब्राह्मणपना भ्रष्ट है, न उनमें धर्म है न विनय है।"

'इसी जन्म में प्रचुर मांस की लोलुपता से मनुष्य मांसके खाने वाले अघोर डाकडाकनी हो जाते हैं, फिर मरने पर उसी ही मांस रसके संकल्पके कारण घोरतर योनियों मे गिर जाते हैं।'

'मैने किसी भी सूत्र में मांस को सेवने योग्य नहीं कहा है न ही आज्ञा दी है, न उत्तम भोजनों में कहा है, न लेने योग्य कहा है।'

अन्त में हम यह आशा करते हैं कि प्रत्येक बुद्धानुयायी बुद्ध भगवान की आज्ञा व उपदेश पर आचरण कर मांसाहार का सर्वथा त्याग करेगा।

मांसाहार और सिक्ख

जे रत लगे कपड़े, जामा होवे पलीत ।
जे रत पीवें मानुषा, तिन क्यो निर्मल चित ॥

—बाबा नानक 'बार मास मांझ महल्ला १ पृ० १४०

अर्थात्—यदि कपड़े पर रक्त-खून लगने से कपड़े पलीत भ्रष्ट हो जाते है, तो हे मनुष्य यदि तू वह अपवित्र रक्त पी जायगा, तो तेरा चित्त निर्मल कैसे रह सकता है ?

सिक्ख धर्म के धार्मिक ग्रन्थो का अध्ययन करने एवं उन के अमृतमय उपदेश से यह बात भली भांति विदित होगी, कि उनके प्रवर्तक गुरु नानक, गुरु गोविंद सिंह आदि दयाप्रेमी थे, और उन्हों ने बहुत ही स्पष्ट शब्दों मे मांसाहार का निषेध किया एवं लोगो को मांस न खाने की प्रेरणा की ।

सिक्ख-धर्मके प्रसिद्ध धार्मिक ग्रन्थ 'नानक प्रकाश'के पूर्वार्ध अध्याय ५५ पर एक कथा आती है, जिसका शीर्षक है "देवलूत राक्षस का प्रसङ्ग या बन मानुआं राक्षसां दी कथा" गुरु नानक एक बार घूमते घूमते जंगलमें निकल गये, वहां पर बन-मनुष्यों ने उस प्रतापी गुरु नानक का स्वागत करते हुए उनको भोजन करने का आग्रह किया, उनके इस निमन्त्रण के उत्तरमें उन्होंने क्या कहा ? यह पाठक खूब ध्यान से पढ़ें. उन्हों ने कहा—

यों नहीं तुमरो खायें कदापि, हो सब जीवन के सन्तापी ।
प्रथम तजो आमिष का खाना, करो जाम हित जीवन हाना ॥
तजो तामसी वृत्ति दुखारी, करो भगति करतार सुखारी ॥

अर्थात—हम तुम्हारे यहां भोजन कदापि नहीं कर सकते क्योंकि तुम सबके सब जीवों को दुःख देने वाले हो, सब से पहिले तुम मांस खाना छोड़दो जिस कारणसे तुम्हारा जीवन नष्ट हो रहा है, दुःखदायक तामसिक वृत्ति छोड़ कर सुख देने वाले करतार प्रभु की भक्ति करो। उसके आगे लिखा है—

सब राक्षस को नाम जपायो आमिष खान तिन्हें तजवायो।
जीय घातकी बान विसारी सत्सङ्गत करहें सुखारी ॥

अर्थात सब राक्षसों को प्रभु के नाम का जाप करना बताया और उन्हें मांस खाना छुड़वा दिया, उन लोगों की चिर-काल से चली आने वाली आदत मिट गई, अच्छी संगत से मनुष्य सुखी हो जाता है।

सिक्ख धर्म के गुरु मांस को कितना बुरा समझते थे, और उन्होंने उसके आहार के विरुद्ध कैसा प्रचार किया होगा यह ऊपर के दृष्टान्त से पाठक अच्छी तरह समझ गये होंगे। और देखिये— कबीर जी ग्रन्थ साहब में लिखते हैं—

भांग, माछली, सुरापान, जो जो प्राणी खायें।
तीर्थ बरत अरु नेम किय सभे रसातल जाये ॥

अर्थात— जो प्राणी भंग या सुरापान करते हैं, और जो मछली खाते हैं, उनके किये हुए व्रत, नियम और तीर्थयात्रायें सभी व्यर्थ जाती हैं। और देखिये, कहा है—

खूब खाना खीचरी जा में अमृत लौन।
हेरा रोटी कारणे गला कटावे कौन ॥

कितना स्पष्ट निषेध है—

साबत सूरत रब्ब दी ते भन्ने बेइमान। —कबीर

अर्थात— प्रभु की बनाई हुई पूरी सूरत को जो तोड़ता है वह बेईमान है, उसका कोई धर्म ही नहीं।

जीव की हत्या करना धर्म नहीं है— इसी को स्पष्ट करते हुए कहते हैं—

जीअ बधहु सुधरम कर थापहु, अधरम कहु कत भाई।
आपस कउ मुनवर कर थापउ काकउ कहु कसाई॥
—ग्रन्थ साहब कबीर रागमारु पृ० ११०३

अर्थात्— यदि जीवों को बध करना धर्म है, तो भाई अधर्म किसे कहेंगे ? यदि जीव बध करने वाले अपने को मुनि समझें तो कसाई किसे कहेंगे ?

जोर किया सो जुल्म है लेह जवाब खुदाय।
दफ्तर लेखा नीकसे मार मोहे मुंह खाय॥

कुछ भाइयों का धर्म की आड़ में यह ख्याल होता है— कि हम तो बकरी आदि पशुओं को मुसलमानों की तरह तड़पा तड़पा कर धीरे २ नहीं मारते, बल्कि एक ही झटके से मार डालते हैं— झटका किया हुआ हमारे लिये हलाल होता है। उन भाइयों का यह ख्याल बिल्कुल ठीक नहीं, इस सम्बन्ध में कबीर साहब का स्पष्ट कथन है कि—

इन झटका उन बिसमिल कीना, दया दोहां से भागी।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, आग दोहां घर लागी॥

मुसलमान मारे करद, हिन्दू मारे तलवार।
कहे कबीर दोनों मिली जायें जम के द्वार॥

जिया जो मारे जोर कर कहते नाम हलाल।
दफ्तर वही जब काढ़िये है गो कौन हवाल॥

इनसे यह स्पष्ट है कि धार्मिक ग्रन्थों में जीवों की हत्या न करने को जो कहा गया है उसका झटका और हलाल से कोई सम्बन्ध नहीं, गौ और सूअर का प्रश्न नहीं, यहां तो सब जीवों पर दया करने को कहा है—

हक पराया नानका उस सूरा उस गाय।
गुरू पीर हा माता भरे जा मुरदार न खाय॥

—वार माझ महल्ला १ सफा १४१

मांस मांस सब एक हैं मुरगी हिरनी गाय।
आंखि देख नर खात है ते नर नरकहिं जाय॥

जो सिर काटे और का अपना रहे कटाय।
धीरे धीरे नानका बदला कहीं न जाय॥

जो बीजे सो ऊगसी कभू न होवे हान।
समय पाय फल देत है नानक निश्चय जान॥

इनसे यह स्पष्ट है कि जीव-हत्या को हलाल कह देने से काम नहीं चल सकता, उसका फल अगले जन्म में भोगना ही पड़ेगा।

किसी कवि ने कहा है कि बकरी वृक्ष के पत्ते ही उतार कर खाती है जिसका फल उसे यह मिलता है कि उसकी खाल

उतारी जाती है, और फिर जो बकरी ही खा जाते हैं उनका क्या हाल होगा—

बकरी पाती खात है उसकी काढें खाल !
जो बकरी को खात हैं तिनको क्या अहवाल ॥

सिक्खों के प्रसिद्ध ग्रन्थ 'वारां भाई गुरुदास' वार २५ में एक शेर और बकरी की कथा आती है*—जब शेर ने बकरीको अपने पञ्जे में पकड़ लिया, तो बकरी भयभीत होने और चिल्लाने की बजाय खिलखिला कर हंस पड़ी, शेर को आश्चर्य हुआ और उसने इस अवसर पर हंसनेका कारण पूछा।

बकरी ने विनय पूर्वक यह उत्तर दिया कि हम आक और धतूरा खाती हैं तो भी हमारी खाल-चमड़ी उखाड़ी जाती है, पर मुझे आश्चर्य है कि जो किसी के गले को काट करके खाते हैं उनकी क्या दशा होगी ?

धर्म ग्रन्थों में दया ही को प्रधान माना है—यदि दया का पालन नहीं किया तो सब कुछ किया हुआ व्यर्थ है—

---

* सिंह पजूती बकरी मरदी हुई खिड़ खिड़ हसी।
सिंह पुछे विस्माद होये इत औसर रहसर हसी ॥
विनय करेंदी बकरी पुत्र असाडे जीव कोहसी।
अक धतूरा खादियां खल उखल विनसी ॥
मास खान गल़ वढ के हाल तिन्हां दा कौन होवसी।
गर्व गरीबी देह खेह अखाज खाज अकाल करसी ॥
जग माया सब कोई मरसी।

हिंसा तो मन ते नहीं छूटी जीव दया नहीं पाली।
परमानन्द साधसंगत बिन कथा पुनीत न चाली॥

देखिये बहुत ही स्पष्ट शब्दों में कहा है—

अठसठ तीरथ सकल पुन जीव दया परधान।
जिस नूं देवे दया कर सोई पुरुष सुजान॥

—माझ महल्ला ५ बारां माह (माघमाह)

जो मांस खाता है उसमें दया नहीं होती, और न ही उस में पवित्रता होती है। कहा है—

सुच्चम करके चौका पाया, जीव मार के मास चढ़ाया।
जिस रसोई चढ़ाया मास, दयाधर्म का होया नास॥

गौड़ी कबीर जी में कहा है—कि जो सजीवको तो काटता है और निर्जीव को पूजता है उससे बढ़ के मूर्ख कौन होगा, उसका अन्तिम समय बड़ा बुरा होता है—

"सरजीव काटे निरजीव पूजे अन्तकाल को भारी"

—गौड़ी कबीर

इस लिये जो गुरु ग्रन्थ साहब की पूजा करने वाला है उस का कर्तव्य है कि वह सब जीवों पर दया भाव रक्खे उनको काटे नहीं बल्कि उनकी सेवा करे।

सिंघ च भोजन जो नर जानै।
ऐसे ही ठग देउ बखानै॥

अर्थात—यदि जंगली जानवरों शेर आदि का भोजन (मांस) मनुष्य करता है तो उसे तो ठग ही कहना चाहिये।

भाई रामसिंह जी ज्ञानी 'परम प्रसाद' पुस्तक के १४ पृष्ठ पर लिखते हैं कि 'मांस का खाना और जीव हिंसा करना मनुष्य का धर्म नहीं। यदि मनुष्यों का धर्म मांस खाना होता तो मनुष्य के दांत व नख मांस खाने वालों की तरह तीक्ष्ण होते, मनुष्य घूंट भर कर पानी न पीता, दिल में तर्स–रहम न होता, मांस के साथ रोटी न खाता, पेट में कच्चा मांस हज़म करने की शक्ति होती, प्रकृति मनुष्य को मांस खाने की आज्ञा नही देती, इत्यादि।

अन्त में सिक्ख भाइयों से इतना ही नम्र निवेदन है कि आप अपने ग्रंथों का उपदेशरूपी अमृत पान करें और अपने उन ग्रंथों की आज्ञा श्रद्धा और सचाई से पालें, आपके ग्रंथों में मांस खाने की आज्ञा नहीं है, अपनी जिह्वा के स्वाद की खातिर अपना धर्म न छोड़ें और आज से ही बेजुबान जीवों का मांस खाना छोड़ कर अपने कर्तव्य का पालन करें।

क्या आप जानते हैं—

कि केवल लण्डन में ही जीवदया प्रचारक १०७ कार्यालय हैं। वे मांसाहार त्याग और फलाहार का प्रचार करते है।

मांसाहार और मुसलमान

ارحموا من في الارض يرحمكم الرحمن.

'इरहमु मनफिल अर्दें यरहम कुमुर्रहमानु'

अर्थात—दुनियां वालों पर तुम रहम करो, क्योंकि खुदा ने तुम पर बड़ी मेहरबानी की है, यह वाक्य मुसलमानों की माननीय पुस्तक 'हदीस' (जिसमें पैगम्बर मुहम्मद साहब के कलाम हैं) में लिखा है।

पैगम्बर मुहम्मद के उन वाक्यों से यह बात भली भांति मालूम होती है कि वे भी सब जीवों पर रहम चाहते थे, जिसका उन्हों ने अपने अनुयायियों को उपदेश दिया। हदीस की आयत में लिखा है कि थोड़ा सा रहम (दया) बहुत भक्ति से अच्छा है।

मुसलमान लोग कुर्बानी के नाम पर बकरों को मारते और उनका मांस खाते हैं, परन्तु यह उनके असूलके खिलाफ है, जब कुर्बानी देने की शुरूआत हुई थी, तब और उसके बाद भी हजारों वर्षों तक ऐसा नियम रहा, कि कुर्बानी के नाम पर मारे गए बकरे को मुसलमान लोग नहीं खाते थे, कई मुल्कों में अभी तक भी यही नियम है कि वे कुर्बानी का मांस नहीं खाते। आज कल के मुसलमान भाइयों ने अपनी जुबान की खातिर मांस को खाना शुरू कर दिया है।

एक कवि मांसाहारियों के विचार से आश्चर्यचकित होकर कहता है, कि 'हलाल' और 'हराम' भी अपनी इच्छानुसार मानते हैं, जिसे खुदा मारता है, उसको तो हराम कहते हैं और जिसे स्वयं मारते हैं उसे हलाल कहते हैं यह कैसी मूर्खता और दम्भ की बातें हैं। वह कहता है—

साईं मारे राह सुधारे उसको कहें 'हराम' मुआ।
जीते को मुर्दा कर डालें उसको कहें 'हलाल' हुआ॥
पढ़ें निमाज रक्खे फिर रोजा पराये पुत्र का काढ हिया।
गर बहिश्त मिले-यों ही तो क्यों न कुटुम्ब हलाल किया॥

अगर दूसरों के बच्चों को मारने से बहिश्त मिलता है तो अपने कुटुम्ब को हराम न होने दे उन्हें भी हलाल कर दें। परन्तु ऐसा कोई भी नहीं करता।

मि० अब्दुल्लाखान नाजिम अन्त मुसलमा ने एक पेम्फलेट प्रकाशित किया उसमें उन्होंने लिखा है कि—खुदाताला के मुकाबले में कोई हादी, मौलवी, इमाम कुछ वुक़त नहीं रख सकता, और खुदाकी किताब कुरान शरीफके सामने कोई इन्सानी किताब बराबरी का दम नहीं मार सकती, उस खुदा और तमाम इस्लामी फिरकों की मुसल्लमा किताब कुरान मजीद का इर्शाद सुनो— सूरा हज जिकर हजमें फरमाया है—

لَنْ يَّنَالَ اللّٰهَ لُحُوْمُهَا وَلَا دِمَاۤءُهَا وَلٰكِنْ يَّنَالُهُ التَّقْوٰى۔

लंई यना लल्लाहा लुहू मुहा वला दिमा ओहा
वला कींअ यना लुहत तकवा।

अर्थात् अल्ला ताला को तुम्हारी कुर्बानियों के गोश्त और खूनसे कोई वास्ता नहीं, केवल विश्वास की जरूरत है, दूसरी जगह लिखा है कि खुदाके नजदीक विश्वास वाले की इज्जत है। देखिये—

إِنَّ أَكْرَمَكُمْ عِندَ اللَّهِ أَتْقَاكُمْ

इन्नां अकरमां कुम इन्दल्लाहे अका कुम

सूरे बकर में हजके बयान में एक शख्स का जिक्र है—

وَإِذَا تَوَلَّىٰ سَعَىٰ فِي الْأَرْضِ لِيُفْسِدَ فِيهَا وَ
يُهْلِكَ الْحَرْثَ وَالنَّسْلَ وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ الْفَسَادَ

वैजा तवल्ला साआ फिल अरदे लयुफ सिदा फीहा
व युह लिकल हरसा वन्नस्ल वल्लाहो ला युहिबुल फसाद

जिसका खुलासा यह है कि जानवरों और खेती को तबाह करना जमीन मे खराबी फैलाना है। और अल्ला खराबी को पसन्द नहीं करता।

कुरान शरीफ पारा १७ सूरा हज रकू ५ आयत ३८ में लिखा है कि खुदा को उसका मांस और खून कदापि न पहुंचेगा बल्कि तुम्हारी परहेजगारी पहुंचेगी।

मुहम्मद साहब का मत दया सिखाना है वे हिंसा को बुरा समझते थे, कुरान शरीफ ८८ वें अध्याय में कहा है कि "ऊंटों का मांस ईश्वरको स्वीकृत नहीं और न ही उनका खून" इसलिये तुम्हारा धर्मभाव मात्र स्वीकृत है।*

मन न करदम खल्कतासूदे कुनी।

बल्के खुद बर बन्दगान सूदे कुनी ।।—मसनवी मौलाना रूम

अर्थात्—मै ने दुनियां इसलिये पैदा नहीं की, कि तुम इससे फायदा हासिल करो, बल्कि इस लिये की है कि तुम खुद बन्दगान खुदा पर भलाई करो।

इस प्रकार मुसलमानों की माननीय पुस्तकों में जगह जगह यही उपदेश है कि दूसरों की सेवा करो, दूसरों पर रहम करो न कि मारो। मुसलमान एक दातुन को कई दिन करते हैं। इस का कारण भी यही मालूम होता है कि जहां तक हो सके दातुन के लिये भी वृक्ष न काटना पड़े और उनको कष्ट न पहुंचे।

मुसलमानों की प्रसिद्ध हदीस में लिखा है कि—

مَنْ عَرَفَ نَفْسَهُ فَقَدْ عَرَفَ رَبَّهُ

"मन अरफ नफ्सहु फक़द आर्फरब्ब हु"

अर्थात्— जिसने नफ्स को पहचाना है उसने खुदा को पहचान लिया है।

---

* गो वाणी पृ० १०१

मुसलमान लोग जब हज का विचार करते हैं तो ३२ दिन से उनको यहां तक आज्ञा है कि मक्का शरीफ पहुंचने तक किसी जानवर को न मारो, वरन् जूं तक भी कपड़े पर हो तो उसको न हटाओ। इस आज्ञा का अभिप्राय यही है कि इस प्रकार मुसलमान धीरे २ हत्या करना छोड़ देंगे। इसके सिवा इस्म पढ़ने व चिल्ला काटने की अवस्था में पशु को छोड़ने की भी आज्ञा है।

उनकी इन प्रथाओं से यह बात भली भांति मालूम होती है, कि उनके पैगम्बरों को जीवों की हिंसा कदापि पसंद न थी, मुसलमान लोगों को उस जगह नमाज पढ़ना मना है जहां पर कि जानवरों को मारते हैं, खून के धब्बे वाले कपड़ों से निमाज़ अदा नहीं की जा सकती। इन सब बातों से यह बात प्रकट होती है कि किसी जीव का नाश करना महान अपवित्र कार्य है तो उसे पेट में डाल जाना तो और भी अधिक अपवित्र है। इसी तरह फिर्का अलविया जो अपने को हज़रत अली की औलाद से बतलाये जाते हैं, गोश्त नहीं खाते हैं।

हज़रत सुल्लिलल: अलै वसल्लम कहते हैं कि अपने पेटों को हैवानात की कबरें न बनाओ—मौलवी फीरोजद्दीन साहब हकीम देहलवी अपने कुरान मजीद के अनुवाद में लिखते हैं कि

Let man look at his food. It was We who rained down to copious rain and caused the

upgrowth of grain and grapes and healing herbs and the olive and the palm and on closed gardens rich with trees and herbage for the service of yourselves and your cattle. 20—40

अर्थात—कुरान शरीफ में नं० २४ सूरा ८० पर लिखा है कि मानव को अपने भोजन पर ध्यान देना चाहिये। हमने बहुत पानी बरसाया, अनाज, अंगूर, औषधियें, खजूर आदि उगवाए, उनके चारों तरफ वृक्षों से फलों से व घास शाक से घने भरे हुए बाग बनवाए, तुम्हारी और तुम्हारे पशुओं की सेवा के लिये।

कुरान शरीफ में भी मांसाहार छोड़ कर शाकाहार करने की पुष्टि की है। देखो ४४ सूरा २०—

He hath sent down rains from heaven and by it. We bring forth the kind of various herbs. Eeat ye and feed your cattle.

भावार्थ—उसने पानी बरसाया है, जिससे हम नाना प्रकार की बनस्पति को पैदा कर सकें। उन्हें तुम खाओ और अपने पशुओं को खिलाओ।

कुरान शरीफमें सूरा तुल मायदा, पारा ४ मंजल २ आयत ३ मे लिखा है कि ईमान वालो! जिस समय कि तुम आराम में हो शिकार मत खेलो।

मौलवी रहीम बख्श इस्लाम की चौथी पोथी में लिखते हैं कि जो जानवर दुःख नहीं देते जैसे शहद की मक्खी चिड़िया, हुदहुद, और मुर्गी आदि उनको मारना मना है ।

मुसलमानों के प्रसिद्ध कवि शेखसादी बड़े दयालु थे कहते हैं— फर्दोसी पाकजाद ने कहा है—

"मियाज़ार मोरे कि दाना कशास्त"

अर्थात्— कीड़ी को भी दुःख मत दो, क्योंकि बेचारी दाना ले जाती है, और हमारी तरह उसकी भी जान है ।

"मबाश दरपये आज़ार वहरचि ख्वाही कुन किदर शरायिते मा गैर अज़ीगुनाह नेस्त"

अर्थात्— किसी जीव को दुःख मत दो और जो चाहे सो करो, क्योंकि शरहमें इससे बढ़ कर और कोई पाप नहीं है ।

" अज़ीज़ां मुर्गो माही रा म्याज़ार
न बाशी ता खजल तू पेशे चदावार "

अर्थात— हे प्यारे ! जानवर और मछली को दुःख मत दो, जिससे तुम को खुदा के सामने लज्जित व चुप खड़ा न होना पड़े । और देखिए—

"हज़ार गंज कनाअत हज़ार गंज करम,
हज़ार अताअत शबहा हज़ार बेदारी ।
हज़ार सहर व सहर सजदारा,
हज़ार नमाज कबूल नेस्त गर खातर बयाज़ारी ॥

अर्थात्— मनुष्य में हजार गुना धैर्य है, हजार खजाने रोजाना दान करता हो, हजारों रातें केवल भक्ति में गुजारे और हजारों ऐसे सिजदे (प्रणाम) करे कि हर एक सिजदे के साथ एक एक हजार नमाज पढ़े, यदि वह किसी को तकलीफ देगा तो खुदा को उसकी हजार इबादत (पूजा) कदापि स्वीकार न होगी। कितना स्पष्ट और सुन्दर उपदेश है जिनके धार्मिक ग्रन्थों मे ऐसे सुन्दर उपदेश लिखे हुए हों, भला फिर उस धर्म के मानने वाले अपने मजहब के खिलाफ मांस कैसे खा सकते है? मुसलमान भाइयों को इस पर विचार करके मांस खाना छोड़ देना चाहिये।

मुसलमानों के प्रसिद्ध नेता ख्वाजा हसन निजामी २१ जनवरी सन् १९३५ को देहली में भाषण देते हुए कहते हैं—

"जैन धर्म जो कदीमी है— मेरी अन्तरात्मा कहती है कि जैन धर्म के असूल (दया आदि) तारीफ के योग्य तथा माननीय हैं।"

ऐसे ही भारत के प्रसिद्ध नेता सरहद्दी गांधी खान अब्दुल गफार खां आज अहिंसा के कायल हैं। आज वह दुश्मनों के साथ भी रहमदिली का बर्ताव करने का उपदेश दे रहे हैं।

नामदार सर आगाखां देहली में ३१-१२-२८ को आल-पार्टीज कांफ्रेंस के सभापति हुए थे, उन्होने अपने भाषण में कहा था—

कि आप यह अपना धार्मिक वचन जानते हैं, कि जानवरों का मांस या लहू खुदा को नहीं पहुंचता, इत्यादि । यह एक जीवदया का विचार है ।

मांगरौल, नवसारी (गुजरात) के पीर की गद्दी के अधिकारी, तथा मुसलमानों के धर्मगुरू पीर मोटा मियां साहब, २०-२५ वर्ष से गौ रक्षा एवं जीवदया का घर २ प्रचार कर रहे है और उन्होंने अपना जीवन इस पवित्र कार्य में लगा रखा है ।

इस तरह मुसलमानोंके प्राचीन बादशाओं पर विचार करें तो यही मालूम होगा कि वह सभी भी अनर्थ और अत्याचार नही चाहते थे । शाहनशाह बाबर ने हुमायूं को आज्ञा दी थी * कि हिन्दुओं की धार्मिक मान्यताओं का अनादर न करना (गौ वध इत्यादि न कराना) इसी में तुम्हारा भला है । ऐसे ही अफगानिस्तान के नामदार अमीर हबीबुल्लाखान जैसों ने (जब देहली मे तशरीफ लाये थे) गाय की कुर्बानी बन्द करवाई थी । बादशाह अकबर के सम्बन्ध मे लोगों में भ्रम है कि वह अधिक मासाहारी था, यह गलत है ।

"शाहनशाह अकबर गोहत्या से तो विरुद्ध था, साथ ही किसी जानवर के मांस को खाने से भी परहेज करता था । इस विषय में 'आइने अकबरी' में लिखा है कि बादशाह अकबर को

---

* असल फरमान भूपाल की शाही लायब्रेरी में सुरक्षित है ।

मांस खाने से हार्दिक घृणा थी। वह कहता था कि बाज मांस खाता है। यद्यपि वह बहुत नहीं खाता तो भी उसकी आयु कम होती है, मनुष्य मांस खाता है और खूब खाता है, इस का क्या हाल होगा? यह नहीं कहा जा सकता। मांसाहारियों से मुझे बहुत घृणा है, शासन के स्वत्व में हस्तक्षेप करना अनुचित है, यह विचार कभी न रहे तो मै मांसाहार बन्द कर दूं, अथवा मेरा शरीर इतना हृष्ट पुष्ट हो कि सब मांसाहारी उसे खा कर सन्तुष्ट हों, बेजुबान प्राणियों को सन्ताप देना बन्द कर दें तो मै ऐसा भी करूंगा.................।

आज कल तो लोगों की यह दशा है कि कभी मांस न मिले, और यदि उसे यह मालूम हो कि शरीर में दुःख नहीं होता तो वह स्वयं अपने शरीर को काट कर भी मांस खाने के लिये तैयार हो जाए। †

इस्लाम धर्म मे कठोरता पसन्द नहीं इस लिये धार्मिक फर्मानों मे सदा कोमलता रखी जाती है, और कठोरता के व्यवहार का निषेध किया जाता है।

जो बात इस्लामी धर्मशास्त्र से सिद्ध नहीं उसमें आवश्यकतानुसार परिवर्तन होता रहता है और हर समय लाभ हानि की नीति रखी जाती है।

इस्लाम धर्म विरोध, लड़ाई, झगड़ा, तथा टंटाको नापसंद

---

† आइने अकबरी जिल्द दोयम पृ० २२७

करता है, और जो मुसलमान न हो उस के साथ भी सम्बन्ध रखने में सम्पूर्ण बल से सहायक है। *

महमूद गजनवी के बाप सुबुक्तगीन को खुदा ने बादशाही इसी लिये बख्शी थी क्योंकि उसने हरणी के बच्चे पर रहम किया था।

दया और निष्पक्षता का व्यवहार सबके प्रति रक्खो, केवल उनको छोड़ कर जो चालाक, छछोड़े और परमात्मा के कार्य के विरोधक हैं। [KORAN L. X.]

कोई भी पक्षी अथवा पशु ऐसा नहीं है, जो तुम्हारे (मनुष्य के) समान न हो। [KORAN VI]

सचमुच मूक पशुओं की भलाई करने में और उन्हें पीने को पानी देने में पुण्य है। [*The Prophet L. 164*)

हजरत मुहम्मद के निम्नलिखित सुभाषितों से भी अहिंसा की पुष्टि होती है—

'जो सर्व प्राणियों और अपने बच्चों पर प्रेम नहीं करता है उससे परमात्मा भी प्रेम नहीं करता है।'

'परमात्माकी संतति सब जीवित प्राणी हैं और वही उस को अधिक प्यारा है जो उसके इन प्राणियों की भरसक भलाई करता है।'

स्वतः हजरत मुहम्मद की सख्त आज्ञा है कि काबे के हरम शरीफों में किसी प्रकार का बध न किया जावे। मुसलमान

---

* पीर मुहम्मद यूनिस—बेतिया (बिहार)

जब 'तरीक़त' इख्तियार करते हैं तो मांसका खाना छोड़ देते हैं कहा जाता है कि मुहम्मद साहिब का दामाद० ह० अली मांस भक्षण न करने का उपदेश देता था।

प्रो० एम० ए० वूच अपनी *Ethics of the Koran* नामक पुस्तक मे पृष्ठ १२७-१२८ पर स्पष्ट लिखते हैं कि—

इस्लाम धर्मका मूल भाव तो उसके उत्कृष्ट अहिंसा तत्वमें है। वह कहता है कि साधारण स्थिति मे साधारण मनुष्यों के लिये बुराई के बदले बुराई और भलाई के बदले भलाई का उत्तम सिद्धान्त है। परन्तु इस्लामके सच्चे अनुयायी वे ही हैं जो खुदा के प्रेम में इतने पगे है कि उनके दिल और दिमाग़ में द्वेषका नाम निशान नही है। वे बुराइयों का बदला भलाइयों मे देते हैं, द्वेषका बदला प्रेम में, चोटका दर्द शरीकी में और क्रोधका क्षमा मे। खुदा कहता है जो कोई एक भला कार्य करता है उसके लिये दस पुरस्कार हैं और मैं जिसको चाहूं उसको अधिक भी दूंगा। और जो कोई बुराई करता है उसकी सजा उसके बराबर है या मैं उसको क्षमा भी करता हूं। और वहजो मुझको एक क्यूबिट (हाथ) ढूंढेगा मैं उसके निकट दो फैथम (२ गज) पहुंचूंगा और जो मेरी तरफ आता है मैं उसकी तरफ़ दौड़ूंगा, और वहजो मेरे सामने गुनाहोंसे भरपूर आयेगा, परन्तु मेरा साझीदार नहीं होना चाहेगा मैं उसके समक्ष पूर्ण क्षमता धारण कर आऊंगा। वस्तुतः मनुष्यका औरों के प्रति व्यवहार उसी ढङ्गका होना चाहिये जिस ढङ्गका परमात्माका उसकी ओर।

कुरान शरीफ में लिखा है— (देखो सूरः अंबिया ३ हेन) कि जब हमारा रब (खुदा) रहमानुर्रहीम (बहुत ही बड़ा दयालु) है, हमारे रसूल रहमतुल आलमीन हैं तो अब हमको भी सिवाय रहम (दया) करम (कृपा) व अफ्रू (क्षमा) व मफह (शौच) के कुछ न चाहिये, शायद अल्लाह हमें बख्श दें।

आकबतुल मुजकीन (पृष्ठ १७३–७५) में भी यही कहा है कि 'जो कोई लोगों पर रहम नहीं करता उस पर अल्लाह रहम नहीं करेगा।'

हजरत मूसा एक वाक्य में कहते हैं कि—'तुम्हारा ईमान दुरुस्त नहीं है जब तक रहम न करो।'

इब्न अमरू की हदीस में फर्माया है कि रहमत (दया) करने वालों पर रहमान (खुदा) रहमत करता है। तुम रहम करो उन पर जो जमीन में हैं, तुम पर वह रहमत करेगा जो आसमान में है।'

हजरत असकर बुखारी ने कहा है कि 'एक आदमी ने कहाकि मुझको बकरी जिबह (मारने) करने पर रहम आता है तो आपने फरमाया कि अगर तू उस पर रहम करेगा तो अल्लाह तुझ पर रहम करेगा।'

हजरत मिसाई ने कहा है कि किसी जानदार को मारना चिउंटी हो या चिड़िया या कोई और जानवर दाखिल जुल्म है, बिल्कुल खिलाफ रहम है।

हदीस-उल-उमर में एक औरत का किस्सा है कि उसने एक बिल्लीको भूखा प्यासा बांध रक्खा था वह जहन्नुम में गई।

अबूहरैरा की रवायत है कि उसने प्यासे कुत्ते को कुएं में से पानी भर कर पिलाया था वह जन्नत (स्वर्ग) में गया।

अबूदाऊद ने बाहम (एक दूसरे को) भड़काने लड़ाने को मना किया है, जैसे मुर्गे लड़ाना मेढ़ों हाथियों की लड़ाई कराना।

कई हदीसो में यह भी आया है कि लोग गुलामों से ताक़त से ज्यादा काम न ले बल्कि अपनी तरह उनको खिलावें पिलावें।

एक दिन हजरत इमाम जैनुलआबदीन ने एक ऊंट को मारने के लिये कोड़ा उठाया— थोड़ी देर के बाद कुछ ख़याल करके कोड़े को हाथ से फेंक दिया और कहा— 'मारूं इस बेजबान को कि मुझे कयामत का खौफ है।'

कुरानशरीफ की शुरुआत में अल्लाताला (खुदा) का विशेषण रहीम दिया है 'बिस्मिल्लाह् रहिमान्नुर्रहीम' इस प्रकार मंगलाचरण के बाद कहा गया है कि सर्व जीवात्माओं पर रहम करो। कुरान शरीफ में सुरवे आम, मे लिखा है कि जो पशु पृथ्वी पर चलता है और जो पक्षी हवा में उड़ते हैं वे कोई दूसरे नहीं हैं उनमें भी अपनी तरह जीवात्मा है अर्थात उनको भी अपना जीवन प्रिय है।

لَاتُوذِ خَلْقَ اللّٰهِ.

'लातोजे खलक्ल्ला'

अर्थात्—हे मोहम्मद दुनियां को विश्वास दे कि अल्ला की दुनियां को कोई नहीं सतावे।

हजरत जौक उर्दू के एक मशहूर (कवि) शायर हुए हैं, वे किसी को रोता देखते थे तो उनको बहुत दुःख होता था, उम्र भर उन्हों ने कभी अपने हाथ से पशुबध नहीं किया, और जब कभी रास्ते में मुर्गी, बटेर आदि का बध होते देखते थे, तो तत्काल मुंह फेर लेते थे। उनके दयालुपने और परमात्मा से भय करने की बहुत सी कथाएं है। एक दिन उनके मशहूर शिष्य हाफिज वीरान और हजरत जौक दोनों चले जा रहे थे कि एक बर्र हजरत की गर्दन पर आ बैठी और डंक मारा जिस के दर्द से हजरत तिलमिला गये। लेकिन बर्र को नहीं मारा और उड़ा दिया। हाफिज वीरान ने पूछा कि हजरत आपने इसको मारा क्यों नहीं? आपने उत्तर दिया कि मुझे भी ख्याल आया था, परन्तु थोड़ी सी तकलीफ के लिये उसकी प्यारी जान लेना उचित न समझा और यह शेर पढ़ा—

'न छोड़ी हमने सलामत रवी की चाल।
चले जो राह में चिउंटी को भी संभाल चले॥"

एक दिन इसी प्रकार घर में सांप निकल आया लोग मारने दौड़े, लेकिन आपने मना किया और जब वह बिल मे

चला गया तो भली भांति बिल को बन्द कर दिया। हाफिज़ वीरान पास बैठे थे। उनको बड़ा आश्चर्य हुआ और कहा कि आपने ग़ज़ब किया जो मूज़ी (काल) को न मारा। आपने उत्तर दिया कि किसी जानदार को मारना उचित नहीं है क्योंकि उसके भी प्यारी जान है।

शेख़ शिबली की कथा भी दया का पाठ पढ़ाती है—
लिखा है कि यदि तू भला मनुष्य व खुशनसीब है तो अच्छे लोगोंकी एक कहानी सुन कि हज़रत शिबली गेहूं वालेकी दुकान से गेहूं ख़रीद कर गांवको लेगये। एक चिऊंटी उस अन्न मे देखी जो चारों ओर हैरान व परेशान फिर रही थी, उस पर तरस खाकर वह रात भर जागते रहे और प्रातःकाल उसको उसके घर पहुंचा दिया और कहा— इस कमज़ोर चिउंटी को उसकी जगह से दूर रखना मुहब्बत की बात नहीं। परेशान लोगों को इत्मीनान से रख ताकि तू भी ज़माने में इत्मीनान से रहे।

पवित्र आदत वाले फ़िरदोसी कवि ने क्या अच्छा कहा है किसी चिउंटी को मत सताओ कि वह दाना चुगती है और जान रखती है और उसको वह बहुत प्यारी है, जो चाहता है कि चिउंटी को तकलीफ़ पहुंचे वह काले हृदय वाला और निर्दयी है। कमज़ोरों को मत सता क्योंकि एक दिन तू भी चिउंटी के समान कमज़ोर होगा। क्या देखता नहीं कि पतंगों पर दया न करने के कारण शमा (मोमबत्ती) महफिल में क्यों

कर जलती है; मैंने माना कि तुझसे अधिक कमज़ोर हैं परन्तु जानले कि आखिरकार तुझसे भी ताकतवर कोई है।

(अहिंसा से)

मसनवी मौलाना रूमी में एक रवायत है कि एक औरत (जो मक्के शरीफ के हज के लिये रवाना हुई थी) ने प्यासे कुत्ते की जान अपने कपड़ों और बालों को काट कर बचाई। रास्ते में एक स्थान पर कुएं के गहरे होने के कारण उसमें से पानी निकालना कठिन था। इस लिये उसने अपने बालों का रस्सा बना कर अपने कपड़े के साथ बांधा और कुएं से पानी निकाल कर प्यासे कुत्ते को पिलाया।

इस पर ख़ुदा इतना ख़ुश हुआ कि उसे रात को मक्के शरीफ के दर्शन होगये, और उसका मक्के शरीफ की हज उसी जगह पर पूरी समझी गई। इस पर मौलाना साहबने लिखा है—

दिल बदस्तावर ज़े अकबरस्त।

अज़ हज़ारां काबा यक दिल बेहतरस्त॥

अर्थात्— दिलों को काबू में करो, क्योंकि यही सब से बड़ा हज है। हज़ारों काबों से एक दिल को काबू करना बहुत बेहतर है।

इस्लाम के विद्वान नवाब अहमदयार खां साहब कहते हैं कि किसी जानवर पर हदसे अधिक बोझ न लादो, उससे बहुत देर तक या थकावट व बीमारी की हालत में काम न लो। जानवरों को आपस में मत लड़ाओ। उनको उलटी गरदन कर

मत उठाओ। शक्ति से अधिक काम मत लो और उनके खाने पीने सर्दी गर्मी के बचाव का ऐसा प्रबन्ध रक्खो जैसा अपने कुटुम्ब का रखते हो। अपनी दिल्लगी के लिये न तो निशाना बाज़ी करो न किसी जानवर को पिंजड़े आदि में बन्द करो। जानवरों के अंग मत काटो।

प्रिय पैग़म्बर साहब की मार्फत खुदा कुरान शरीफ में हुक्म करते हैं कि— 'किसी भी जीव को उसकी ताकत से अधिक तकलीफ़ मत दो। प्र० २, आयत २३३।

'जो दूसरों पर जुल्म करते है वे स्वयं अपने ही ऊपर ज़ुल्म करते हैं। ४-४

'खुदा जुल्म करने वालों को नहीं चाहता। ३ ७, ५-६४

'जिससे खेती और ढोरों का नाश हो ऐसा तूफ़ान न मचाओ क्योंकि ऐसे तूफान खुदाको अच्छे नहीं लगते। ३-२०

'जिन्होंने पहिले अपने हाथों से ज़ुल्म किया है उनपे जब आफत आयेगी तो वे लोग खुदाकी कसम खाकर कहेंगे कि भलाई और मेल मिलाप के सिवाय हमारा कोई दूसरा इरादा न था। ४-८ सूरा माइदाह पारा वाज़ा सम ऊर कोय १२ मे मांस भोजन का निषेध करते हुये लिखा है—

ऐ मोमनो! खाओ सुथरी चीज़ें अर्थात— जिनके खाने से तुम को फायदा हो, शरीर पुष्ट हो, दीन दुनियां में हितकर हो, न तुम्हारे शरीर को हानि देवे, न कोई तुम पर एतराज़ करे न उससे नुक्सान वाके हो न तुम्हारी रियाज़त व इबादत में फ़ितूर आवे।

الثمرات رزقكم الله۔

"अलसमरात ज़रकाकमल्ला... .....।"

अर्थात्— खुदा ने तुम लोगों के रज़क के लिये मेवा व व फल अता किया है।

कुरानशरीफ़ की एक आयत में मांसका स्पष्ट निषेध किया है, जिसका भाव है कि इस दिन स्वास्थ्यकर पदार्थ तुम्हारे लिये बताये गये हैं, और मांस उनही जीवों का जिन्होंने शरीयत (शास्त्रों) को पालिया है, जायज़ है, उसी तरह जिस तरह तुम्हारा मांस उनके लिये जायज है।* दूसरे शब्दों में इसका अर्थ यह है कि यदि तुम अपना मांस दूसरों को खिला सकते हो तो दूसरों का मांस तुम भी खा सकते हो। परन्तु हम प्रत्येक को देखते हैं कि कोई भी अपने शरीर का मास दूसरे को नहीं खिला सकता। उसे इससे बड़ा कष्ट दिखाई पड़ता है, ऐसी अवस्था मे हज़रत मुहम्मद यहां पर मांस भोजन का निषेध ही कर रहे हैं, वे प्रायः निरामिष-भोजी थे।

कुरान शरीफ में मांसाहार ही नहीं बल्कि शिकार तक मना किया है—उसकी एक आयत का यह भाव है—

ऐ मोमिनो! दर असल शराब और मौके के शिकार और बुत (*Divining*) और तीर शैतान के बरगलाने के काम हैं,

---

* *The Ethics of Koran.*

उन्हें छोड़ो कि तुम फलो फूलो! इन कामों से शैतान तुममें द्वेष और अनैक्य के बीज बोयेगा। शराब और मौकेके शिकारों से तुम्हें परमात्मा की स्मृति और प्रार्थना से अलग करेगा। इस लिये क्या तुम इनसे परहेज़ नहीं करोगे ?+

हज़रत मुहम्मद की रवायतों में भी शुद्ध भोजन करने वाले को सुखका अधिकारी बतलाया है।*

'सीरुल्मिताखरीन' जिल्द अव्वल पृष्ठ १८५ (आगरा कालिज हालात अकबर आज़म में लिखा है कि अकबर कहता था "कि मांस आखिर दरख्त (वृक्ष) मे नहीं लगता, ज़मीन (पृथ्वी) में नहीं उगता—जानदार के बदन से कट कर जुदा होता है, उसे दुःख होता है। अगर हम इन्सान (मनुष्य) हैं तो हमें भी दर्द आना चाहिये। हज़ारों नियामतें खुदा ने दी हैं— खाओ पीओ और मज़े लो। ज़रा से चटखारे के लिये जो कि पलभर से ज्यादा नहीं रहता, जान का ज़ाया (नाश) करना बड़ी बेअकली (मूर्खता) और बेरहमी (निर्दयता) है (देखो आइने हमदर्दी पृ० ५०–६५) †

शेख बहाउद्दीन बर्नावी जो कि जहांगीर के जमाने में एक मशहूर फक़ीर हुए हैं, एक दिन हरिण का पीछा कर रहे थे

+ *The Ethics of Koran P. 92*

* *The sayings of Mohammad P. 64*

† सत्य मार्ग

बन्दूक छोड़ने को ही थे कि इतने में उस हरिण ने अपना मुंह उनकी तरफ किया, और उनके कान मे यह आवाज आई कि ऐ परमात्मा के प्यारे ! यह क्या हरकत है ? इस आवाज को सुनते ही उन्होंने बन्दूक एक तरफ फेंक दी; हरिण गायब हो गया आप पर उसका इस कदर असर हुआ कि आपने उस दिन से शिकार खेलना बन्द कर दिया *

किताब आलमगीरी मे कहा है—

'आहिस्ता ख़िराम बल्कि मख़िराम ज़ेरे कदमत हज़ार जानास्त'

आलमगीर बादशाह अपने लड़के से कहते हैं कि धीरे २ चलो बल्कि चलो ही नहीं क्योंकि हज़ारों जानवर मरते हैं— तुम्हारे कदम के नीचे आकर।

ग़मे ज़ेरदस्तां बख़ुर जीनहार।
बतरसज ज़बरदस्तिये रोज़गार॥ —शेखसादी

अर्थात्— आजज़ों पर ग़म खा और ज़माने को ज़बरदस्ती से डर।

मयाज़ोर मन्दी मकुन बर के हां।
कि बरयक निमतमो नमानद जहां॥

अर्थात्— ऐ बड़े लोगो ! छोटों को न दबाओ क्योंकि जहान एक सी हालत पर नहीं रहता।

---

* ओरियण्टल कालेज मेगज़ीन नवम्बर १९२७ में प्रकाशित प्रो० महमूद शेरानी के लेख से।

हमारे मुसलमान भाई अपने ईश्वर को रहिमान कहते हैं। रहिमान शब्दका अर्थ 'दयालु' है। तब वह ईश्वर हत्याकी आज्ञा किस प्रकार दे सकता है? इसी प्रकार उनके पीर और वलियों ने भी अपनी खुराक शाकाहार रक्खी है जैसा कि—
१—तवारीखे फ़रिश्ता २-तजकीरतुल औलिया ३-रुफनतुल औलिया और ४-तफहातुलउनस आदि ग्रन्थों के अवलोकन से स्पष्ट प्रतीत होता है। इसके सिवाय पैगम्बर हज़रत मुहम्मद नबी साहब का खलीफा से तथा दामाद हजरत अलीसाहब ने स्पष्ट रूप से फर्माया है कि—

१- फलातज अल् बुतून, कुम मकाबरल हैवानात।
न साजी मकामे शिकम ए तु गूर।
ज़ बेहरे बहायाम ज़े बेहरे तु पूर।

अर्थात तू पशु पक्षियों की कब्र अपने पेट मे मत कर याने पशु पक्षियो को मार कर मत खा। कुरान शरीफ के सुरायत आम मे लिखा है कि— लोही और डुकर का मांस, मृत्यु से मरे हुये का मांस, मूर्ति के नाम पर मारे गये का मांस, अथवा किसी प्राणी के हाथ से मारे जाने वाले का मांस तुम मत खाओ। बकरीद के दिन बकरा मारने के विषय में कुरान के सूरा हज्ज की ३६ वी आयत मे अल्लाह ने खुद फर्माया है कि मांस और खून से मैं तृप्त नही हो सकता। मै केवल एक संयम से तृप्त हो सकता हूं।

मुसलमान भाइयोंके अहकामातके आधार पर हम उनसे पुरज़ोर अपील करते है कि वे मांसाहारका बिल्कुल त्याग करदें।

मांसाहार और ईसाई

"We who are deaf to suffering creature's cries,
Remember their sound goes up to heaven;
Perchance a day may come when we shall crave
For mercy to be given." —Tennyson

हम दुःखी प्राणियों के आर्तनाद के सुनने के लिये बहरे बने रहते हैं। परन्तु याद रखो कि उनकी आहें स्वर्ग तक पहुंचती हैं, सम्भव है कि कोई दिन ऐसा आजाए कि हमें इस अपराधकी क्षमा याचना के लिये गिड़-गिड़ाना पड़े।

Do not kill अर्थात् किसी प्राणी का बध न करो।

ईसाइयों की दस आज्ञाओं में यह पहली आज्ञा है।

ईसाई धर्म को पैगम्बर ईसामसीह ने चलाया, जो कि स्वयं ही सब पर दयालु और परोपकारी थे। इस धर्म में भी प्राणियों पर दया करने की पूरी पूरी आज्ञा है जिस धर्ममें दयाका उपदेश दिया गया है उस धर्म के अनुयायी मांसाहार कैसे कर सकते हैं। क्योंकि किसी जीव के बध के विना मांस प्राप्त नहीं किया जा सकता। अगर इस धर्म में मांसाहार का निषेध नहीं मानते तो क्या उन पैगम्बरोंके ये वाक्य उनके अनुयायी झूठ ठहराते हैं? नहीं, उन पैगम्बरों ने सच्चा 'मार्ग' दया का ही बतलाया, परन्तु उनके अनुयायियों में शिथिलता आगई। खुदा ने मूसा के द्वारा जो आज्ञाएं भेजीं उनमें यह एक मुख्य आज्ञा थी।

मौजीज़ को उपदेश देते हुये कहा— Thou shalt

not kill. अर्थात किसी की हत्या–खून न कर।

"Ye shall be holy man unto me neither shall ye eat any flesh that is torn of beasts in the fields.

अर्थात:— तुम मेरे पास एक पवित्र आत्मा होवोगे यदि तुम किसी जीव का मांस न खाओ।

ईसाई धर्म मे अहिंसा को महत्व देते हुये स्पष्ट लिखा है कि प्रत्येक ईसाई (Christian) यदि ईश्वर इच्छानुसार आनंद मय जीवन व्यतीत करना चाहता है तो (Great Teacher) परमात्मा के इन वाक्यों को सदैव याद रखे—

Go ye learn what this meaneth, I desire Mercy and not Sacrifice.'

जाओ और जाकर सीखो, मैं (परमात्मा) दया चाहता हूं बलिदान (कुर्बानी) नहीं।

मत्ती की इंजील बाब ५ आयत ३९ में लिखा है कि जो कोई तेरे दाहिने गाल पर तमाचा मारे तू दूसरा गाल भी उसकी ओर फेर दे। इससे मालूम होता है कि ईसाई धर्म में दयाका कितना महत्त्व है। इसी इंजील के अन्य भी ऐसे उपदेश देखिये जिनमें दया का उपदेश है।

"धन्यवाद है उन पुरुषों को जो दयालु हैं, क्योंकि उनपर दया की जायगी [मत्ती बाब ५ आयत ७]"

'बुरे विचार' खूंन रेजियां (किसी को मारना) व्यभि-चार आदि काम मनुष्य को अपवित्र करते हैं। [मत्ती बाब

१५ आयत १६]

"ईसा ने कहा है कि हत्या न कर मैथुन न कर इत्यादि।

[मत्ती बाब १६ आयत १८]

"यदि तुम उसके अर्थ जानते कि मैं कुर्बानी नहीं बरन दया पसन्द करता हूं, तो निरपराध जीवों को अपराधी न ठहराते। [मत्ती बाब १२ आयत ७]

पूर्वोक्त उपदेशों से यह स्पष्ट हो जाता है कि ईसाई धर्म में दया का बड़ा महत्व है। इसके अतिरिक्त महात्मा ईसा ने उनके खाने योग्य पदार्थों को बताते हुये मांसाहार का सर्वथा निषेध किया है बाईबिल में कहा है—

Behold, I have given you every herb bearing seed, which is upon the face of all the earth and every tree in which is the fruit of a tree yielding seed to you it shalt be for meat.

[Gensis chep. I. 297]

देखो—मैंने पृथ्वी पर सब प्रकार की जड़ी बूटियां तथा उनके बीज दिये हैं। और साथ ही अनेक प्रकार के फलदार वृक्ष भी दिये हैं तथा उनके बीज भी, इस लिये कि वह तुम्हारे लिये मांस का काम करें। कितना स्पष्ट शाकाहार का विधान और मांसाहार का निषेध है। और देखिये—कहते हैं।

Let them enjoy their little day
'Their humble bliss receive

Oh ! do not lightly take away
The life them, canst not give.

अर्थात्—उन जीव जन्तुओं को जिनको अपने अल्प जीवन में परमात्मा के उस महान ऐश्वर्य में से रंच मात्र ही मनोरंजन प्राप्त है। आनन्द से जीवन व्यतीत करने दो। उस जीवन अर्थात् जान को मत लो जिसको तुम बदले में प्रदान नहीं कर सकते।

अन्यत्र एक स्थान पर बाइबिल में लिखा है—

यदि वह तुम्हें कहे कि हमारे साथ चल और दूसरों का खून बहाने के लिये तू हमारे साथ छुप कर रह, तथा बिना अपराध के निर्दोष प्राणियों का घात करने के लिये हमारे साथ साथ फिर तो हे मेरे पुत्र ! तू उसकी संगति मत करना, और ना ही उनके पन्थ पर कभी चलना, क्योंकि उनका पैर उसे उल्टे रास्ते ले जा रहा है और वह हमेशा खून करवाने को तत्पर रहता है।

बाइबिल के ऐसे ऐसे दयापूर्ण उपदेशों का अधिक अध्ययन करने के लिये बाइबिल के नीचे लिखे इन भागो को पढ़ें [जो कि विस्तार के भय से यहां नही दिये] "साम ५०वां ६–१४, साम ५१ वां १४–१७, मीका प्रकरण छठा ६–८, कहावते प्रकरण १ ला १०–१८, प्रकरण छठा १६–१६, प्रकरण २३ वां २०, एक जोडस प्रकरण २० वां १३, मेथ्यु प्रक० ५ वां २१, प्रक० २१ वां १२, प्रक० ६ वां १३, जेनीसीस प्र० १ ला

२६, रोमन्स प्र० १४ वां १६-२१, होजीया प्रक० छठा, ईसाइया प्रकरण १ ला १०-१४, प्र० ६६ वां ३, एक लीजीअेस्टीज प्रकरण ५ वां १, जेरीमीश्रा प्रक० ६ ठा २० और रामोस प्रक० ५ वां २२।

इन प्रकरणों के पढ़ने से यह बात स्पष्ट समझ में आ जायगी कि ईसाई धर्म को मानने वाले किसी भी मनुष्य को मांसाहार करना कदापि उचित नहीं तथा प्रत्येक प्राणी पर दया करना हमारा कर्तव्य है।

न्यूटेस्टामेंट में सेंट ल्यूकस कहते हैं—

Be ye therefore merciful, as your father also is merciful (36.-6)

अर्थात् क्योंकि तुम्हारा पिता दयावान है, अतः तुम भी दयावान बनो।

For meat, destroy not the work of God. All things indeed are pure, but it is evil for that man who catch offence. It is good neither to eat flesh. nor to drink wine, nor anything where thy brother stumbleth or is offended or is made weak.

मांसके लिये खुदा के काम को मत बिगाड़ो, सब वस्तुएं वास्तव में पवित्र हैं जो पाप करके खाता है वह मानव पाप करता है। यह भला है कि कभी मांस न खाओ शराब न पीओ

न ऐसी चीज खाओ जिससे तुम्हारा भाई दुःखी हो या निर्बल हो।

हजरत मूसाकी दी हुई शिक्षा २बाईबिल प्रकरण २२ वें में लिखा है—'तू मेरी ओर पवित्रता से रह, बेचारे किसी भी पशु को मार कर उनका मांस मत खा।'

हुसिया (Hosia) अध्याय ८ आयत १५ में लिखा है—

And when ye spread forth your hands, I will hide mine eyes from you. Yes, when ye make many prayers, I will not hear, your hands are full of blood.

अर्थात जब तुम अपने हाथ प्रार्थना करने के लिये ऊंचे करोगे, तब मैं (ईश्वर) अपनी आंखें तुम्हारी ओरसे दूसरी ओर हटा लूंगा और तुम बराबर प्रार्थना करोगे तो भी मैं ध्यान नहीं दूंगा क्योंकि तुम्हारे हाथ प्राणियों की हत्याके कारण रक्त-मय होरहे हैं।

प्रसिद्ध कवि वर्डसवर्थ (Wordsworth) लिखता है

Don't mingle thy pleasure or thy joy with the sorrow of the meanest thing that pells.

Pleasures of life.

अर्थात हे भाई, ऐसे किसी भी कार्य में सुख और आनन्द मत समझो जिसमें किसी भी प्राणी को दुःख हो।

मुबारक हों वह जो दयावान हैं क्योंकि उन पर भी दया

की जायेगी। खुदा कुरबानी को नहीं, बल्कि रहम चाहता है।
(St. Matthew 7)

मैं भेड़, बकरी आदि के रुधिर बहाने से हर्षित नहीं होता हूं। तुम्हारे हाथ रुधिर से भरे हैं, इनको धो डालो। अपने आपको पाक और साफ बनाओ। मेरे सामने आने के पहिले पापों का प्रायश्चित ले लो, दुराचार का त्याग कर दो और सदाचार ग्रहण कर लो। (Isahia 11. 15-17)

"मुबारिक है वह जो रोटी खायेगा। खुदा की बादशाहत में। (St. Duke XI)

जिसने कि दया नहीं की है फैसले के समय उस पर भी दया नहीं की जायगी।" (St. James 11. 13.)

हम सब खुदा के बेटे हैं और हमें एक दूसरे को सताना नहीं चाहिये। (Isahia)

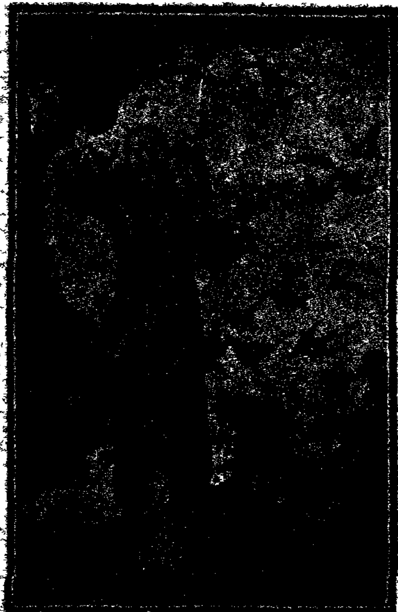
यदि कोई व्यक्ति खुदा के मन्दिर को अपवित्र करता है, तो उसको खुदा नष्ट करेगा, क्योंकि खुदा का मन्दिर पवित्र है और वह मन्दिर तुम ही हो। (St. Paul)

धर्मात्मा व्यक्ति अपने पशुओं की रक्षा का भी ध्यान रखता है। (St. Solomon)

मती रसूल वृक्षों के बीज, सख्त छिलके वाले फलों और अन्य शाकों पर बिना मांस छूए जीवन व्यतीत करते थे।*

---

* सत्यमार्ग



भाइयो ! आओ ! तुम्हारी आत्मा भी मेरी ही तरह है । प्रभु तुम्हें सुख और शान्ति प्रदान करे ।

दयार्द्र हृदय संत

फ्रांसिस ऑफ एसिसी



दुखियों का सहारा ।
अभी कुछ दूर जाना है, यह छोटी भेड़ थक गई होगी, इसे कन्धेपर ही उठालूँ

मांसाहार और पारसी

पशुओं को खाना नहीं, और जानवरों का शिकार भी नहीं करना ऐसा हमारा पवित्र जरथोस्ती (पारसी) धर्म है। -फिरदोसी

लगभग १३०० वर्ष पूर्व ईरान से आये हुये जरथोस्ती हिन्दुस्तान में पारसी के नाम से कहे जाते हैं। खुरशेद जी ज० ब० वाहडिया अपने एक लेख में लिखते हैं, "हम पारसियों का धर्म जरथोस्त साहब का चलाया हुआ नेक निय्यती और दया का मजहब है। हमारी धर्म पुस्तक 'अबस्ता' है जिसमें जरथोस्त के चलाए हुए पवित्र कलाम (उपदेश) हैं, इस 'अबस्ता' पुस्तक में गूंगे एवं निर्दोष गाय आदि जानवरों पर प्यार तथा उन पर दया रखने की जाबजा नसीहत है तथा उन गाथाओं में गूंगे निर्दोष जानवरों को काटने वाले अथवा जान लेने वाले को बहुत बुरा गिना गया है। आगे चल कर के लिखते हैं कि जरथोस्ती धर्म के फरमानों की रू (नियम) से महीने में कमसे कम चार चार दिन 'अन्न रोज' को मांस न खाने के लिये बन्धे हुए हैं। इतना ही नहीं बल्कि अपनी जन्म गांठ या विवाह के समय या किसी की मृत्यु पर पहिले चार दिन मांस कदापि नहीं खाना, यह रिवाज है। परन्तु दुर्भाग्य से आज कल सुधरे हुए जमाने में यह असली सुन्दर सादा और संगीन रिवाज हम भूल गये हैं।

पारसियों की पूर्वोक्त मान्यताओं तथा रीति रिवाजों पर ध्यान देनेसे हम यह भली भान्ति जान सकते हैं कि पारसी धर्म

में भी मांसाहार के निषेध पर ज़ोर दिया गया है। पारसियों के गुरु जरथोस्त मांस नहीं खाते थे, पारसियों की धर्म पुस्तक 'शापस्तलाशायस्त' में मांस ग्रहण का निषेध है।

सेठ सोहराब जी जमशेद जी ने 'राहे पारसा' में साफ़ कहा है— कि परवरदिगार की फिरोज़ गिरि और उस साहिब की रहनुमाई से एकाध दो इलमइखलाक की किताबें देखने में आईं, उन पर से यही मालूम हुआ कि बिचारे पशु जानवरों की हिफाजत (रक्षा) तथा निगेहबानी (Care) अच्छी हिफाजत से रखना तथा उन्हें अच्छी खुराक देना कहा है। एवं उनको काट कर न खाने की सख्त ताकीद की है।

ऐसे ही सेठ रुस्तम जी मनचेर जी मोबेद जी ने 'जरथोस्तियों' को मांस खाने की मनाई की। एवं एक बहुत विद्वत्ता—पूर्ण साहित्य के वाक्यों दलीलों तथा दृष्टान्तों के साथ ६० पृष्ठ की एक पुस्तक लिखी, और सन १८९७ मे थियोसोफीकल सोसायटी के ब्लेवेटस्की लॉज की बिल्डिंग में एक भाषण देकर धार्मिक आदि असूलों से यह समझाया था कि जरथोस्ती (पारसी) को मांस तथा अण्डे न खाने चाहिये।

ऐसे ही पारसी धर्म में कई ऐसी सोसायटियां हैं जो मांसाहार छुड़ा कर अन्न फल फूल के आहार का प्रचार करती हैं। तथा कई विद्वान पारसी भी इस सिद्धान्त का प्रचार करते हैं।

"As to meat as an article of diet, one may be excused for asking if it does not stand to reason that habitual indulgance in flesh and blood may lead to fleshly inclinations and thoughts ? At any rate it may be safely assumed that men never feel so innocent as when living on an innocent diet."

"The Indian Eye on English Life"
B. M. Mabborai.

भावार्थः— कोई पूछ सकता है कि मांस भी भोजन का अंग क्यों न हो। इस पर निस्सन्देह कहा जा सकता है कि मांस खाने वाले की वृत्तियां पाशविक हो जाती हैं, हर हालत मे यह माना जा सकता है कि सात्विक भोजन करने से ही मनुष्य की वृत्तियां सात्विक हो जाती हैं।

He will not be acceptable to God who shall thus kill any animal. Angel Asfundarmed says. "O holy man, such is the command of God that the face of the earth be kept clean from blood, filth and Carrior, Angel Amarded Says about vegetable." "It is not right to destroy it uselessly or to remove it with purpose.

भावार्थ— इस तरह जो कोई पशु को मारेगा उसको परमात्मा स्वीकार नहीं करेगा पैगम्बर ऐसफादर मद ने कहा है ऐ पवित्र मानव ! परमात्मा की यह आज्ञा है कि पृथ्वी का मुख रुधिर मैल तथा मांससे अछूता-पवित्र रखा जाय अमरदाद

पैगम्बर वनस्पति के लिये कहते हैं कि इसे वृथा नष्ट न करना चाहिये, न वृथा हटाना चाहिये।

प्रसिद्ध कवि फिरदौसी पारसी धर्म पुस्तक 'शाहनामे' में लिखते हैं—

नीस्त मन्द खुरो ने जानवर जु।
चनीन अस्त दीने मरदुस्तनेकु ॥

जीव जन्तुओं की रक्षा करना धर्म है, पशुओं को कत्ल करना तो 'अहुरमजद' बुरा बतलाते है—

जो सब से अच्छे प्रकार की जिंदगी गुजारने से लोगों को अटकाते हैं और जो पशुओं को मारने की खुश खुशाल सिफारिश करते हैं उनको 'अहुरमजद, बुरा समझते हैं।

आयत—३२—१२

ऐ होरमजद ! पशुओ की पैदायश के घास चारा सम्बन्धी मेरी अत्यन्त बेदरकारी को बन्दगी के द्वारा मैं दूर करूं तो कितना अच्छा है ? ३३-४

यहां तक कहा है कि पशुओं के घास चारा डालनेमें यदि वे दरकादी की गई है, तो सच्चे जिगरसे बन्दगी करनी चाहिये

खशूरान खशूर आयत १—२ में कहा है कि + "चौपाये जानवर बे आजार है और जानवरों को मारने वाले नहीं हैं जैसे घोड़ा, गाय, ऊंट, खच्चर, गधा वगैरह, इनको मत मारो और बेजान मत करो क्योंकि इनके कामों की सजा और

+ सत्यमार्ग

तरह पर अक्ल अव्वल की तरफ से है। जैसा कि घोड़े पर सवारी करना, बैल, ऊंट, गधा, खच्चर आदिपर बोझ लादना। यह जानवर पहिले जन्म में आदमियों को बेगार पकड़ते थे जबरन बोझ उठवाते थे। इस लिये खुदा ने इनकी सजा यही नियत की।.........कि उनपर सवारी की जाय और बोझ लादा जाय। तुम इनको मत मारो। अगर कोई जानबूझकर बेआज़ार जानवरों को मारे और उस वक्त सजा न पावे तो जरूर खुदा आलमुलगैब से दुबारह जन्म लेकर सजा पावेगा।

'जिन्दावस्ता' में लिखा है कि यकीनन दोज़ख की आग और पछतावा उनके लिये हर समय तैयार है जो अपनी ख्वा-हिशात बुझाने और दिल्लगी के लिये बिचारे बेजबान जानवरों को सताते और तकलीफ देते हैं।'

'आर्दवीराफ' (१६२) मे लिखा है कि 'उन स्त्रियों को पुरस्कार मिलता है, जिन्हों ने संसार मे पृथ्वी और वृक्ष चौपाए और भेड़ों एवं अहूरामजदा के शेष अच्छे प्राणियो का मान किया है।

'दिनकर्द' में मनुष्यों के लिये तीन बातें पालन करने के लिये बताई गई हैं यथा प्रथम मनुष्य जीवन सम्बन्धी भलाई, दूसरे जानवरों को चरागाह देना, तीसरे सिपाहियों को अच्छा भोजन देना, जिससे अच्छी हालतमें रहे। *Dinkord Vu 452*

'इजस्ने' की ३२वें हाय में भी लिखा है कि

(अवस्ता भाषा) मजदाओ अकामरोद इओगे ओशमरेदान
ओरु आखश ओरवती जीओ तुम ॥

अर्थात—जो पशुपक्षियों को दुःख देने तथा उन्हें मारने में अच्छी जिन्दगी समझते हैं अथवा मारने तथा खाने का हुक्म देते हैं उनको 'होरमझद' (खुदा-परमेश्वर) ने मारने की आज्ञा दी है।

प्रसिद्ध धर्मग्रन्थ 'जरदोस्तनामा' में कहा है—

बकुशतन नियारन्द कसुक दरेह।
न आंगुस फन्दा के बसद बरेह ॥

अर्थात—किसी प्राणी को चाहे वह जवान बूढ़ा या बच्चा हो न मारो अर्थात् जीवधारी मात्र को मारने की मनाई है।

पारसी भाइयों के धर्म ग्रन्थों से यह भली भांति स्पष्ट हो गया है, कि किसी जीव को सताना भी बुरा है मारना और काटना उनको आहार के काम में लाना उनके धर्म के विरुद्ध है आशा है पारसी भाई अपने धर्मग्रन्थों और पूर्वजों की आज्ञा का पालन करते हुए मांस भक्षण छोड़ देंगे।

समाप्त

तरह पर अक्ल अव्वल की तरफ से है। जैसा कि घोड़े पर सवारी करना, बैल, ऊ'ट, गधा, खच्चर आदिपर बोझ लादना। यह जानवर पहिले जन्म में आदमियों को बेगार पकड़ते थे जबरन बोझ उठवाते थे। इस लिये खुदा ने इनकी सजा यही नियत की।·········कि उनपर सवारी की जाय और बोझ लादा जाय। तुम इनको मत मारो। अगर कोई जानबूझकर बेआजार जानवरों को मारे और उस वक्त सजा न पावे तो जरूर खुदा आलमुलगैव से दुबारह जन्म लेकर सजा पावेगा।

'जिन्दावस्ता' में लिखा है कि यकीनन दोज़ख की आग और पछताबा उनके लिये हर समय तैयार है जो अपनी ख्वा-हिशात बुझाने और दिल्लगी के लिये बिचारे बेजबान जानवरों को सताते और तकलीफ देते हैं।'

'आर्दवीराफ' (१६२) मे लिखा है कि 'उन स्त्रियों को पुरस्कार मिलता है, जिन्हों ने संसार में पृथ्वी और वृक्ष चौपाए और भेड़ों एवं अहूरामजदा के शेष अच्छे प्राणियों का मान किया है।

'दिनकर्द' में मनुष्यों के लिये तीन बातें पालन करने के लिये बताई गई हैं यथा प्रथम मनुष्य जीवन सम्बन्धी भलाई, दूसरे जानवरों को चरागाह देना, तीसरे सिपाहियों को अच्छा भोजन देना, जिससे अच्छी हालतमें रहे। *Dinkord Vii 452*

'इजस्ने' की ३२वे हाय में भी लिखा है कि

(अवस्ता भाषा) मजदाओ अकामरोद इओगे ओशमरेदान
ओरु आख्वश ओरवती जीओ तुम ॥

अर्थात्—जो पशुपक्षियों को दुःख देने तथा उन्हें मारने में अच्छी जिन्दगी समझते हैं अथवा मारने तथा खाने का हुक्म देते हैं उनको 'होरमझ्द' (खुदा-परमेश्वर) ने मारने की आज्ञा दी है।

प्रसिद्ध धर्मग्रन्थ 'जरदोस्तनामा' में कहा है—

बकुशतन नियारन्द कसुक दरेह ।
न आंगुस फन्दा के बसद बरेह ॥

अर्थात्—किसी प्राणी को चाहे वह जवान बूढ़ा या बच्चा हो न मारो अर्थात् जीवधारी मात्र को मारने की मनाई है।

पारसी भाइयों के धर्म ग्रन्थों से यह भली भांति स्पष्ट हो गया है, कि किसी जीव को सताना भी बुरा है मारना और काटना उनको आहार के काम में लाना उनके धर्म के विरुद्ध है आशा है पारसी भाई अपने धर्मग्रन्थों और पूर्वजों की आज्ञा का पालन करते हुए मांस भक्षण छोड़ देंगे।

महा

अहिंसा
किक सर्व सु
समान है।
किसी को ह
fि
तथा जीव
नहीं, इ
के स्थान
अधिक
यह मनु
वाले की

वि
वि

बतलाये
रक्षक
क्रूर और
शिकार
उनका ह
इस सभ
है।

—साधु टी० एल० वास्वानी